पंत के दो सौ पत्र

- हिंदी के दो प्रसिद्ध कवियों श्री सुमित्रानंदन पंत और श्री हरिवंश राय बच्चन में पिछले लगभग तीस वर्षों से नियमित पत्र-व्यवहार रहा है।
- बच्चन जी ने पंत जी से समय-समय पर प्राप्त प्रायः सभी पत्रों को सुरक्षित रखा है।
- उन्होंने पंत जी पर लिखी अपनी आलोचनात्मक पुस्तक, 'कवियों में सौम्य संत' (राजपाल प्रकाशन, १९६०) में उनके प्रथम १२६ पत्र भी सम्मिलित किए थे।
- उसके बाद के सौ पत्र गत वर्ष पंत जी की ७०वीं वर्षगाँठ पर उन्होंने 'पंत के सौ पत्र' (राजपाल-प्रकाशन, १९७०) के नाम से प्रकाशित कराए।
- प्रस्तुत संग्रह उसके बाद के दो सौ पत्रों का है।
- इन बिलकुल निजी पत्रों से पंत जी के सृजन, जीवन और व्यक्तित्व पर जो प्रकाश पड़ता है, यत्किंचित पत्र-प्राप्तकर्ता पर भी, उसके कारण, हमें आशा है, पंत-बच्चन साहित्य के प्रेमी, पाठक, समालोचक सभी इस संग्रह का स्वागत करेंगे।

सुमित्रानंदन पंत के दो सौ पत्र

बच्चन को लिखित

पंत के
दो सौ पत्र
बच्चन के नाम

श्री सुमित्रानंदन पंत के
व्यक्तित्व और कृतित्व के
प्रेमियों को—

वं, १९७१

पाठकों से

आज श्री सुमित्रानंदन पंत के दो सौ पत्र, जो उन्होंने समय-समय पर मुझे लिखे हैं, आपके हाथों में रखते हुए मैं बड़ी प्रसन्नता का अनुभव कर रहा हूँ।

पंत जी के पत्र आपके लिए नई चीज नहीं हैं।

१६६० में पंत जी पर अपनी आलोचनात्मक पुस्तक 'कवियों में सौम्य संत' प्रकाशित कराते समय मैंने उसमें १२६ पत्रों को भी दिया था। जहाँ तक मुझे मालूम है उससे पूर्व किसी आलोचनात्मक कृति में आलोच्य कवि या लेखक के निजी पत्र नहीं सम्मिलित किए गए थे। मुझे याद है, एकाधिक समालोचनाओं में इस पहल-कदमी का स्वागत किया गया था और ऐसे पत्रों के द्वारा कवि के व्यक्तित्व पर जो प्रकाश पड़ता है उसकी ओर विशेष ध्यान दिया गया था।

गत वर्ष पंत जी की सत्तरवीं वर्षगाँठ पर उपर्युक्त १२६ पत्रों के बाद के लगभग सौ पत्रों को मैंने 'पंत के सौ पत्र' के नाम से प्रकाशित कराया था।

पंत जी से प्राप्त हुए सभी पत्रों को प्रकाशित कराने की अपनी योजना में इस वर्ष मैं उनके दो सौ पत्रों का संग्रह प्रकाशित कर रहा हूँ।

शेष पत्र आगे किसी समय प्रकाशित किए जायेंगे।

पंत जी का कृतित्व और व्यक्तित्व अपने समय में ही जो महत्व प्राप्त कर चुका है वह किसी भी हिंदी-प्रेमी से छिपा नहीं है। समय-सिद्ध होने पर उनमें निश्चय और गरिमा जुड़ेगी।

इन पत्रों से उनपर एक अतिरिक्त प्रकाश पड़ेगा, यही समझकर मैंने इनको संजोया है, और एकदम निजी होने पर भी इन्हें प्रकाश में ला रहा हूँ। मुझे विश्वास है पंत जी के काव्य और व्यक्तित्व के पारखी और प्रेमी इन पत्रों का स्वागत करेंगे और इनमें कुछ ऐसा पाएँगे जो उन्हें पंत जी के सम्बन्ध में नया प्रतीत हो, ज्ञानवर्द्धक नहीं तो मनोरंजक। किसी भी बड़े व्यक्तित्व के बहुत-से पहलू होते

हैं—'शमा हर रंग में जलती है सहर होने तक।' पंत जी का जो चित्र आपकी आँखों में है उस पर इन पत्रों के प्रकाश में कोई नया रंग उभरा तो मुझे खुशी होगी।

पत्रों के विषय में कुछ बातें आपको बतलाना चाहता हूँ। पत्र मुझे जिस रूप में मिले थे बिलकुल उसी रूप में—बिना किसी काट-छाँट, संशोधन, परिवर्तन के—यहाँ प्रस्तुत किए जा रहे हैं।

संपादन में केवल दो-तीन बातें की गई हैं। पंत जी पत्रों में प्रायः सन् का संकेत नहीं करते। उन्हें जोड़ दिया गया है। जो शब्द अंग्रेजी में लिखे गए हैं उन्हें देवनागरी अक्षरों में कर दिया गया है। जल्दी में एकाध जगह कुछ अशुद्ध लिखा गया है तो उसे अशुद्ध ही रहने देकर कोष्ठक में शुद्ध रूप का संकेत कर दिया गया है।

मैं पंत जी के प्रति आभारी हूँ कि इन पत्रों को प्रकाशित करने की उन्होंने मुझे अनुमति दी।

अन्त में मैं पंत जी के मूल-पत्रों को किसी अच्छे संग्रहालय को देना चाहता हूँ यदि उसकी उनमें रुचि हो, साथ ही, यदि वह उनको सुरक्षित रखने का आश्वासन दे सके। इस सम्बन्ध में मुझसे पत्र-व्यवहार किया जा सकता है। मूल-पत्र किस संग्रहालय में हैं, इसका संकेत पत्रों के अगले संस्करणों में कर दिया जाएगा।

इस पुस्तक का प्रूफ देखने के लिए मैं डा० जीवन प्रकाश जोशी को हृदय से धन्यवाद देता हूँ।

बच्चन

१३, विलिंगडन क्रिसेंट,
नई दिल्ली-११

१८/७, स्टेनली रोड
इलाहाबाद
१२-५-६२

प्रिय बच्चन,

तुम्हारा ११ ता० का पत्र कल शाम की डाक से मिला। मैं तुम्हारी भूमिका रजिस्टर्ड पार्सल से कल सवेरे की डाक से भेज चुका हूँ—सम्भवत: तुम्हें सोमवार को मिलेगी। अपनी सम्मति देना। कारबन कापी पढ़ने पर मुझे लगा, उसमें दो गलतियाँ टाइप में रह गई हैं—(१) पृष्ठ १८ पंक्ति १८ के अन्त में "उड़ने पक्षी के पंखों की तरह" होना चाहिए। 'के पंखों' छूट गया है। तुम भर लेना। (२) १६ पृष्ठ की १७वीं पंक्ति में "कवि की विदेश की प्रवासी भावना..." होना चाहिए—'कवि के' टाइप हो गया है—ठीक कर लेना। शायद (मैं) "प्रणयपत्रिका" रूप के लिए (मैं) जल्दी के कारण और "मुक्त छंद" काव्य के लिए सामग्री के अभाव के कारण मैं न्याय नहीं कर सका—बहुत संक्षिप्त विवेचना हो गई है। पर कभी ठीक हो जाएगा।

तुम लोग भी अगले वर्ष काश्मीर चलोगे, यह बड़ा अच्छा हुआ। कंपनी के बारे में नरेन्द्र की भी अबके यही राय थी। मैं १५ को तो क्या आ पाऊँगा। शांता को कल से फ्लू हो गया है। १०२° ज्वर है। कहीं उसके बाद मुझे हो गया तो अल्ला ही मालिक। और अभी ३०० कापियाँ शांता को देखनी हैं। संभव है, मथुरा भी न जाना हो सके। पर पहाड़ जाने से पहिले दिल्ली अवश्य आऊँगा—संभवतः वहीं २२/२३ ता० तक। तार से सूचना दूँगा। बड़ा धर्म संकट आ गया है। कल यहाँ जोशी जी की भतीजी की शादी थी।

'क्षीरफेन', 'सिन्धुफेन' से तो अच्छा है, पर है फेन ही। अनअस्यूमिंग का अर्थ घास-पात तो नहीं हो सकता। सोपान का नया संस्करण शीघ्र निकलेगा जानकर प्रसन्नता हुई।

अमित को बंबई से पूछताछ करने के बाद भेजना ही ठीक रहेगा। तेजी जी से मेरा बहुत प्यार कह देना—अमित से भी। तेजी जी से कह देना भूमिका उन्हीं की चर्चा से "मधुरेण समापयेत" की है।

शेष फिर—

प्यार—
[illegible]

२

इलाहाबाद
१०-४-५३

प्रिय बच्चन,

मैं आज ५ बजे प्रयाग से मथुरा जा रहा हूँ। २१ ता० दिल्ली पहुँचूँगा—२८ तक रहूँगा। मुझे मथुरा से तार से आने की सूचना देना—आशा है प्रसन्न हो। तेरी भूमिका मिल गई होगी—जल्दी में —

स्नेह
[illegible]

मथुरा
१८-५-६२

प्रिय बच्चन,

सवेरे यहाँ पहुंचा। २० की शाम को दिल्ली पहुँचने का प्रयत्न करूँगा, नहीं तो २१ को। कल तार से सूचना दूंगा। मुख्य बात यह है कि मैं इनसुलिन इलाहाबाद ही भूल आया। तुम ६ शीशी ४० एम०जी० पर यूनिट का इनसुलिन लेन्टे (ब्रिटिश ड्रग हाउस) का पत्र मिलते ही तुरन्त वहाँ खोजकर मँगवा रखना। कठिनाई से प्राप्य है। प्रयाग में ६/८ पर बाटल है। एक्सपायरी की डेट देख लेना—१९६३ होना चाहिए। मेरे पहुँचने तक मँगवा रखना। कष्ट के लिए क्षमा। शेष मिलने पर—

सप्रेम—

गाईदा

४

इलाहाबाद
२-७-६२

प्रिय बच्चन,

पहुँच तो सकुशल गया था पर यहाँ इतनी गर्मी है कि कुछ मत पूछो। तपोभूमि कहो यज्ञभूमि—पर तवे की तरह नगर तप रहा है। पानी २२ ता० को बरसा था तब से बादल न जाने कहाँ चले गए हैं। कल राजर्षि टंडन जी के अन्तिम समारोह में रहे। प्रायः २ लाख आदमी थे—दिल्ली से शास्त्री जी

भी आए हुए थे। डा० राय भी कल ही चले गए—बड़ा बुरा महीना निकला।

तुम्हारी तो बड़ी याद आती है। वहाँ तेजी जी की देख-रेख में बड़े आराम से दिन बीत रहे थे—यहाँ आने पर तो ग्रीष्म के अतिरिक्त—युगजीवन की कठोर वास्तविकता का सामना है। एक पानी बरसे तो तुम्हें जी लगाकर यहाँ के सब समाचार लिखूँ। तुम्हें और तेजी जी को अबके मैंने बड़ा कष्ट दिया—हालाँ तुमने कभी उसे कष्ट नहीं माना, कृतज्ञ हूँ। आशा है तुम ठीक से दवा और विश्राम ले रहे हो। वीकोस्यूल केपस्यूलज जल्दी ही शुरू कर दो उससे बहुत लाभ तुम्हें होगा। तेजी जी की वैद्य जी की दवा चल रही होगी। उन्हें मेरी ओर से बहुत धन्यवाद और स्नेहपूर्वक नमस्ते कह देना। आशा है अमित को मेरा कहा याद रहेगा और वह खूब जी लगाकर अब मेहनत करने लगा होगा। क्योंकि परीक्षा के दो ही महीने हैं—इस बार उसे अवश्य ही कम से कम दूसरी श्रेणी में पास हो जाना चाहिए। मेरी ओर से उससे अवश्य कह देना और मेरा बहुत प्यार कह देना। बड़ी स्नेहशील प्रकृति का लड़का है—ऐसे नवयुवक कम होते हैं। अभी यहाँ १ सप्ताह से पहिले तो शायद ही पानी बरसे तब तक कमरे में मन मार के बैठना है।

मेरा बहुत प्यार लो—
शेष फिर—

तुम्हारा ही
सुमित्रानंदन

५

प्रिय बच्चन,

तुम्हारा पत्र शनिवार को शाम की डाक से मिला—[illegible] प्रसन्नता हुई। पिछला पत्र जब मैंने लिखा था तब यहाँ बहुत गर्मी थी—[illegible] २ बार बरस जाने से थोड़ी निर्ममता कम हुई है—[illegible] मे लहराती रहती है—तिन्नी की तो मुझे बहुत ही याद आती रहती है—[illegible] मे भी उनके गुण बखान करता रहता हूँ पर पत्र मे लिखना [illegible]। तुमने यह नहीं लिखा कि तेजी जी वैद्य जी की दवा [illegible] उससे लाभ है कि नहीं? अबके पत्र मे अवश्य लिखना। अब तो यहाँ [illegible] पानी बरस गया है आज के पत्रों मे था—मौसम अच्छा हो गया होगा। तुम्हारे साथ एक मास रहने की बड़ी याद आती है—तुम्हें और तेजी जी को [illegible] तो बहुत हुई होगी—स्वाभाविक ही है—पर तुमने कभी उस[illegible] मालूम नहीं होने दिया—शान्ता भी बड़ी कृतज्ञ अनुभव करती है। अपनी बहिन की बीमारी से चिन्तित रहती है। तुम जाड़ो में यहाँ अवश्य आना—अगली गर्मी में काश्मीर का कार्यक्रम भी अवश्य रखना—अमित को बीच २ मे उकसाते रहना, जिससे सितंबर मे अवश्य उत्तीर्ण हो जाय और आगे का अनिश्चय का बोझ मन से हट जाय—मेरी ओर से भी बार २ कहते रहना। तेजी जी आजकल इन्दु जी के यहाँ न होने से अकेली पड़ गई होंगी। उन्होंने मुझे बहुत ही अच्छी तरह रखा—मेरा बहुत ही प्यार और नमस्ते कहना।

तुम्हारा नया संग्रह जैसे ही छपे भेज देना। यहाँ तो अभी १-१॥ महीने मुझसे कोई काम हो नहीं सकता—शुगर भी गर्मी के कारण काफी बढ़ गई है।

आजकल करेले का रस पी रहा हूँ—खाना भी कम कर दिया है। शांता भी ढीली सी ही है। तुमने बीकोस्यूल्स खाना शुरू कर दिया है कि नहीं? अपने स्वास्थ्य के समाचार अवश्य देना—मेरा रामायण पाठ चल रहा है—रामचन्द्र जी सिन्धुपार पहुँच गए है। हनुमान जी से चांद के कलक का कारण पूछ रहे हैं—तुम्हारी सत्संगत का प्रभाव है—तुलसी ने तभी तो सत महिमा गाई है। मेरी चिन्ता मत करना—पत्र देते रहना—नई बातें लिखना और कुछ नई कविताएँ लिखी हो तो भेजना—अजित को बहुत याद कर देना—पिस्ती ने मेरे वियोग मे एक दिन उपवास रखा उसे भी मेरा बहुत प्यार देना और कुल्फी की बड़ी शौकीन है—कुल्फी मेरी ओर से रोज खिला देना—शेष फिर—

सप्रेम—

सादैदा

टाइपराइटर द्विवेदी ने पहिले भी देखा था। वह ठीक कडीशन मे है—कल तक द्विवेदी उसमे आयलिंग करा देगा—तुम मूल्य पूछकर लिखना।

सु०

इलाहाबाद
०२-५-६२

प्रिय बच्चन,

तुम्हारा पत्र मिल गया था। घर मे इतने लोग आ गए कि ठीक समय पर उत्तर नहीं दे सका। तेजी जी वैद्य जी की दवा ले रही हैं जानकर प्रसन्नता हुई, क्या उससे लाभ भी हो रहा है? अमित स्कूल पढ़ रहा होगा। यहाँ तो बहुत गर्मी है, फिर दिल्ली आने को जी करता है—मेरे हिस्से की सब कुल्फी तुम खा जाते होगे—दिल्ली बड़ी शौकीन कुल्फी की है, उसे मेरी ओर से भी खिला दिया करो। रामायण नित्य पढ़ रहा हूँ—उत्तर काण्ड समाप्त होने

की है—अन्त में सत्संगति ही की महिमा है जो तुम्हारे साथ सबके सुलभ हो सकी। तुम्हारे पत्र से प्रतीत होता है अब हम दोनों ही संत पद के अधिकारी हो गए हैं। लगता है देश की अच्छी दशा आ रही है। तुम्हारी पुस्तक 'खूँटे और रेशे' कब तक छप जाएगी? टाइपराइटर की बात तुम गोल कर गए हो—अब के लिखना। तुम्हारा कर्ज चुकाना है। शांता कहती है कि साप्ताहिक हिन्दुस्तान में जो तुमने 'अभिरेखिता' की समीक्षा की थी उसकी कटिंग भेज दो तो वह अपनी जिज्ञासा पूर्ति कर सकेगी।

रेडियो के न्यूज बुलेटिन के बारे में व्यर्थ का शोर लोग मचा रहे हैं। तुम ने क्या इधर ९.४० का दिन का बुलेटिन सुना? नरेन्द्र भी व्यर्थ परेशान मालूम देता है। उसका पत्र आया था। उसे भी लिख रहा हूँ।

कांता के क्या हाल हैं? दिल्ली का मौसम तो अब बहुत ठीक होगा—तुम्हारा स्वास्थ्य कैसा है? कमजोरी कम हुई कि नहीं? मैं तो वहाँ तो ठीक था। यहाँ गर्मी से तबियत ढीली-ढाली हो रही है।

भेजी जी को बहुत स्नेहपूर्ण नमस्ते कहना—तुम सब की बहुत याद आती है—

बहुत स्नेहपूर्वक

भारत

ड्रामा के रिहर्सल्ज कैसे चल रहे हैं। सब एक्टर्स मिल गए कि नहीं—बहुत परिश्रम उसमें करना पड़ेगा। काश, कोई प्ले मैं भी डायरेक्ट कर सकता। तुम्हारे रिहर्सल्ज तो बड़े निर्जीव लगे—सम्भवतः अब उनमें अधिक जीवन आ गया हो।

शेष फिर—बहुत प्यार—

साईदा

८

१८/७ बी, स्टेनली रोड
इलाहाबाद
४-८-६२

प्रिय बच्चन,

तुम्हारी रजिस्टर्ड लेटर और दूसरा पत्र मिल गया था, पर मैं इधर अस्वस्थ रहा। अब भी स्वास्थ्य सामान्य ही है। भई, अपने टाइपराइटर का मूल्य बता दो—शांता नाराज होती है कि बच्चन के यहाँ एक महीने खा-पी भी आए और ऊपर से उल्टा टाइपराइटर उठा लाए। मुझसे कहती है यहाँ पता लगाकर फौरन भेज दो। सो भई, जल्दी लिखकर मेरी जान बचाओ। दिल्ली के वैद्य जी की दवा से मुझे भी विशेष लाभ नहीं हुआ तेजी जी को भी नहीं हुआ होगा। एविल मैं भी जब तब लेता हूँ। जुकाम में लाभ पहुँचाता है। तुम्हारे मल्टी विटामिन्ज चल रहे हैं अच्छा हुआ। वेरीन करीब १०० टिकियाँ खाने पर दर्द जड़ से चला जाएगा, पर जहाँ पर्दे की डाइरेक्ट हवा लगती है वहाँ हल्की चादर लगा लिया करो। अब बुढ़ापा हुआ। सभी बातों के लिए होशियार रहना पड़ता है। अमित का काम ठीक चल रहा है, प्रसन्नता हुई। मेरा बहुत प्यार उसे देना—बड़ा स्नेही लड़का है।

रिहर्सल्ज ड्रामा के कैसे चल रहे हैं? कुछ उन्नति हुई कि नहीं? पात्र,

दवा लेना, लाभ ही होगा। तुम घर पर व्रत रखने लगे हो, यह अच्छा ही हुआ। यहाँ तो व्रत के नाम पर भूख लगने लगती है, सारे मधुर-मधुर मन ही जानता हूँ—दादा को मनाना वश का नहीं। नारियों के स्वभाव की बात है, तेजी जी तो २४ घण्टे निराहार रह लेती हैं। तुमने तो उनसे हार मान ही ली है, व्रत रखने में भी माननी ही पड़ेगी।

तुमने भूमिका टाइप करवा ली, प्रतीक्षा है। लिख तो तभी सकूँगा जब 'सिमे और खम्भे(खूँटे)' के फ़र्मे मिलेंगे। सम्भवतः वह छपने दे दिए गए हों। यहाँ गर्मी तो अभी बहुत ही है प्रयाग ही ठहरा। अच्छा किया तुम दिल्ली चले गए। रातें तो वहाँ की बड़ी याद आती हैं—ठंडी २ हवा तो यहाँ दुर्लभ हो गई। मेरी भतीजी की शादी अक्तूबर में निश्चित होने जा रही है, सम्भव हुआ तब पहाड़ १०-१५ दिन को जा सकूँगा। टाइपराइटर पर तो अभी काम ही शुरू नहीं हुआ, न दुष्ट द्विवेदी ने अभी ऑयलिंग ही करवा दिया है। दाम तुम जब कहोगे तभी भेज दूँगा। काम ठीक नहीं करेगा तो पैसे वापस ले लूँगा कचहरी तो है ही।

नरेन्द्र से कभी फोन पर बातें होती हैं? इन लोगों के क्या इरादे हैं? बहुत विचलित रेडियो की भाषा-नीति से मालूम देते हैं। आज ओमप्रकाश जी आए थे—दिल्ली के उद्वेलित वातावरण की बातें सुनाते रहे। प्रधानमन्त्री जी आज प्रातः यहाँ पहुँचे—आज किसी गाँव में ग्राम भारती का उद्घाटन करने गए थे—कल के०पी०यू०आई०सी० के मैदान में पब्लिक स्पीच है। मौसम ठीक रहा तो सुनूँगा—नहीं तो रेडियो रिपोर्ट से काम चलाऊँगा। सम्भवतः इन्दिरा जी भी आई हुई हैं। बच्चन, तुमने मेरे मेनुस्क्रिप्ट 'हरी बाँसरी सुनहली टेर' का क्या किया? नहीं तो राजकमल को दे दूँ—राजपाल निकालना चाहते हैं तो पहिले उन्हीं की च्वायस रही। शांता तुम्हें और तेजी जी को बहुत नमस्कार भेजती है—अमित को मेरी ओर से प्यार देना। तेजी जी को भी बहुत-बहुत याद कर देना। अपने स्वास्थ्य के बारे में ठीक से लिखना—तब से कितनी प्रतिशत उन्नति है। अजित को याद कर देना—वहाँ सुना अब हमारे सूचना प्रसार मन्त्री आगे केबिनेट मिनिस्टर नहीं रहेंगे—क्या यह ठीक अफ़वाह है?

तुम्हारे 'नए पुराने झरोखे' की अनेक समीक्षाएँ इधर पत्र-पत्रिकाओं में देखने को मिलीं, सब खूब अच्छी हैं। तुम्हारे गद्य की तारीफ है—अब तुम अपने संस्मरण या जीवनी अवश्य किसी शुभ दिन को श्रीगणेश करके लिख डालो। पल्लव की वह कौन सौभाग्यशालिनी पंक्ति होगी, अनुमान लगाना कठिन है। सम्भवतः बालापन से कोई पंक्ति हो।

मैंने सोचा था ओंकार इसी रास्ते जाएगा, पर वह सीधा चला गया। कीर्ति वहाँ कब तक है? उसे बहुत याद कर देना—निम्मी उसकी बच्ची अच्छी होगी। अजित—स्नेह को भी बहुत याद कर देना—उसके बच्चे के जन्म-दिन के लिए अपनी बहुत स्नेह भरी शुभकामनाएँ भेजता हूँ।

अमित तो अब खूब पढ़ रहा होगा, परीक्षा सम्भवतः अगले महीने होगी—पास तो अच्छी श्रेणी में हो जाएगा। तुमने ओथेलो के रिहर्सल्ज़ के बारे में कभी नहीं लिखा—कैसे चल रहे हैं। तेजी जी को बहुत याद कर देना और मेरा बहुत प्यार दे देना। कोई मेरे योग्य उनका काम हो तो अवश्य लिखें। परसों को वहाँ स्वतन्त्रता दिवस की तैयारी हो रही होगी—मैं होता तो मैं भी देखने जाता—स्वतन्त्रता दिवस का समारोह कभी नहीं देखा। वहाँ बिजली के कारण तुम लोगों को लोडेलिटी में तो कष्ट नहीं? सोपान नाम रखने में कोई बुराई नहीं—हालांकि छायावादी वह भी है—नरेन्द्र ने समझा होगा सीढ़ी से प्रगति होनी है पर वह ऊर्ध्व प्रगति है जो छायावादी लक्ष्य है। लेकिन "सोपान" नाम चलेगा। मैंने भी अबकी बार पल्लविनी का संस्करण और बड़ा बना दिया है। राजपाल का कान्ट्रेक्ट मिल गया। ७-१ दिन में उसे वापस भेजूँगा—अभी पांडुलिपि नहीं आई। भारतभूषण चुटकुले तथा निमरिक लिखने में सिद्धहस्त हैं।

जैसाकि नीचे वाला के पत्र से ज्ञात होगा वह अब मान गई हैं कि दूसरे की चीज को हथियाना भी एक कला है—विशुद्ध। वह कला का अर्थ पहिले ललितकला तक ही सीमित मानती थी, मैंने उसे व्यापक अर्थ उसका समझाया।

बहुत धन्यवाद, शेष फिर।

बहुत प्यार
सुमित्रा

भाई बच्चन जी,

आपका टाइपराइटर। जब टाइपराइटर के संरक्षक ही आपको धरोहर के रूप में कहते हैं तो मुझे उसे आपकी धरोहर मानने में क्या आपत्ति। सच, आपको विश्वास दिलाती हूँ यहाँ तो बच्चन पुराण दिन-रात सुनती हूँ। बच्चन ने यह किया, वह किया···बच्चन के स्नेह का कोई अंत है। कभी देखा अपने आप मुस्कुराने लगता है। पता चलता है बच्चन की याद आ गई या कोई बच्चन की प्यारी बात।

शांता —

इलाहाबाद
२०-८-६२

प्रिय बच्चन,

कल शनिवार को तुम्हारा पत्र मिला—मैं इधर इतना परेशान रहा कि तेजी जी की जन्मतिथि का स्मरण ही नहीं रहा—उन्हें मेरी ओर से बहुत २ शुभ-कामनाएँ, आशीर्वाद और प्यार। अब मेरी परेशानी सुनो—मेरे एक भतीजे का अल्मोड़े में ऐक्सीडेंट हो गया है वह अस्पताल में है—४ रोज़ एकदम बेहोश रहा कानकशन आफ़ ब्रेन के कारण—अब बीच २ में होश तो कुछ घंटों के लिए आ जाता है—पर स्मृति या स्मरणशक्ति का अभी कोई चिन्ह नहीं मिलता—डाक्टर कहते है मेमोरी रिवाइव होगी कि नहीं, अभी नहीं कहा जा सकता। इधर मेरा भतीजा अंबी जो यहाँ यूनिवर्सिटी में था उसके पाँव में फ्रैक्चर हो गया है। घुटने की हड्डी टूट गई है। तेज़ रफ़्तार से ट्रक आ रही थी, वह गिर पड़ा। अस्पताल में आपरेशन हुआ। प्लास्टर में अब सारा पाँव बँधा हुआ है। १-१॥ महीने से पहिले तो क्या ही ठीक होगा। ऊपर से १०१° से भी अधिक टैम्प्रेचर है। उसकी लड़की परसों से १०५° बुखार में पड़ी हुई है—डाक्टर के समझ ही में

बीमारी नही आ रही है और मेरे यहाँ माली, महरी, नौकर आजकल कोई नही—कोई बीमार है तो कोई छोड़कर चला गया है। इन सब परेशानियों में कहाँ से गीत लिखता, कहाँ से स्वा० रामतीर्थ के नोट्स पढ़ता।

बहरहाल, सब तरह से चित्त काफी क्षुब्ध है। अखबार भर पढ लेता हूँ। तुम्हें रामतीर्थ के नोट्स शीघ्र ही वापस कर दूँगा—इन झंझटों से मुक्ति मिले तो 'हरी बाँसरी···' की भी भूमिका लिखने की बात सोचूँ। अभी तो मन ही काम नही करता फिर इधर जाओ उधर जाओ—अस्पताल से तो अंजी अब घर आ गया है, पर कष्ट उसे बहुत है। उसके पास जाना ही होता है—हालाँ यहाँ इतना पानी इधर बरस रहा है कि घर से बाहर निकलना कठिन है—सो तुम तेजी जी से मेरी ओर से मुआफ़ी माँग लेना। पुराने वैद्य की दवा से उनका स्वास्थ्य अच्छा है, यह जानकर प्रसन्नता हुई। मेरी ओर से भी तेजी जी के लिए एक साड़ी खरीद देना—जन्मतिथि के उपलक्ष्य में पैसे भेज रहा हूँ। १॥ महीने मैं तुम्हारे पास रहा, तुम ने किसी बहाने से भी गेलार्ड में दावत नही दी—इतनी जल्दी तेजी जी की बर्थडे थी, मुझे एडवांस ही मे दावत दे सकते थे। पर मेरे तो अष्टग्रह के कारण ऐसे अवसर ही नही आने पाते।

अपने लिखने-पढ़ने के बारे मे तो ऊपर लिख ही चुका हूँ।

अमित को मेरा प्यार देना—तुम भी बच्चो ही की कोटि मे हो, नाम भी सार्थक है—तुम भी मेरा प्यार लो। शांता तुम दोनों को बहुत २ नमस्ते भेजती है। अजित और कीर्ति और तिम्मी और स्नेह को भी बहुत याद कर देना।

एकेडेमी के पुरस्कार के बारे मे सोचूंगा। प्रथादि तो कई है। दुबारा पुरस्कार तो उचित नही ही लगता पर हाँ पहिले दिनकर जी को क्रिएटिव राइटिंग पर पुरस्कार नही मिला है—संस्कृति के चार अध्याय तो निबंधात्मक, आलोचनात्मक, ऐतिहासिक सूत्रो का आख्यान है। पर नियम तो नियम ही है। कोई स्पेसिमिप होता तो शाम को रोज १-२ घंटे के लिए तुम्हारे पास आ जाता—शेष यथावत् है।

बहुत प्यार—

गोसाँइ

११

१८-७ बी०के०जी० मार्ग,
इलाहाबाद
३०-८-६२

प्रिय बच्चन,

तुम्हारा पत्र पाकर प्रसन्नता हुई। मेरा एक भतीजा जिसे ब्रेन का कान-कशन हो गया था, अब पहिले से अच्छा है, और आशा है अब उसकी स्मरण शक्ति भी लौट आएगी—और यहाँ दूसरा भतीजा भी धीरे-धीरे ठीक हो रहा है। उसका दर्द भी कम है, बुखार भी घट रहा है इसलिए अब चिन्ता का प्रश्न नहीं रह गया है—केवल समय और धैर्य की आवश्यकता है। इधर लेकिन मन बड़ा खिन्न रहा—कुछ दुर्घटनाओं का गोपन प्रभाव भी मन में पड़ता है—एक आशंका सी मन में भर जाती है—पर अब मैं ठीक हूँ।

तेजी जी मेरा चैक कैश नहीं कराएँगी तो मुझे अवश्य बुरा लगेगा, उनका अनुमान ठीक है, साड़ी अवश्य खरीद लें। आशीर्वाद तो मेरे अनेक है ही, पर साड़ी भी अवश्य लेलें। तुमने फिर वेरीन खाना शुरू कर दिया, ठीक हुआ। मैंने कहा था १०० टिकियाँ अवश्य खाना, तुमने बीच में छोड़ दिया—अब १०० फिर खानी पड़ेंगी तभी स्थायी प्रभाव पड़ेगा। श्री बाबा जी के दर्शन वहाँ तुम्हें हो गए—बड़ा अच्छा हुआ। मुझे कैसे होंगे—पता नहीं। तुम्हारी बीकानेर की मालिन रेडियो में मन के टेलिविजन की आँख से देखी—वह तो मुझे पहिले से पसंद थी। मैंने तो अपने फूलों का हास स्वयं बेचा, तुम्हारी तरह मालिन से आँख कहाँ लड़ाने को मिलती? और तो जयपुर का कवि सम्मेलन शतप्रतिशत रहा—माचवे का फ़ोन और सुमन जी का व्याख्यान सब मन मार के पड़े कि तुम क्या सुनाने वाले हो। पीड़ा को भगवान बनाने वाली श्रीमती तो बस न पूछो। श्रीगणेश ही कुछ ऐसा हुआ कि फिर सम्मेलन सँभल सका। श्री उदयशंकर भट्ट जी की रुग्णता की बात सुनकर दुःख हुआ—

तुम्हारा ही
साईंदा

प्रयाग
३०-८-६२

प्रिय तेजी जी,

आपका प्रिय पत्र पाकर बड़ी प्रसन्नता हुई। आपका मेरे प्रति जो स्नेह और सद्भाव है उससे मुझे बड़ी शक्ति मिलती है और उसे मेरा मन बहुत मूल्य भी देता है। आप मेरी ओर से गाड़ी अवश्य ले लें—बच्चन के बरगलाने में न आएँ—यह सोचना होगा अपने लिए शेरवानी बनवा लूँ।

बाबा जी से आपको बहुत आध्यात्मिक प्रेरणा मिली यह जानकर बड़ी प्रसन्नता हुई। आपके हाथ में जो चंद्र रेखा है उससे भी आपको बहुत आध्यात्मिक शक्ति और सिद्धि आगे भी मिलेगी। पत्र में लिखना बच्चन ठीक न समझें तो पीछे वहाँ आने पर आपसे सुन लूँगा। बाबा को आप लोगों ने मेरा भी प्रणाम निवेदन कर दिया, यह बड़ा अच्छा हुआ।

इधर मैं पारिवारिक चिन्ताओं में रहा—अब सब ठीक हो रहा है। आशा है आप का स्वास्थ्य भी ठीक ही चल रहा है। पुराने वैद्य जी की दवा न छोड़िए। अमित और आपको अपना बहुत सा प्यार भेजता हूँ।

आपका ही,
साईंदा

१२

१८/७ बी०, स्टेनली रोड,
इलाहाबाद
५-६-६२

प्रिय बच्चन,

तुम्हारा पत्र अभी मिला। तुम लोग राजधानी में रहते हो इसलिए राष्ट्रपति के जन्म-दिवस की बधाई भेजता हूँ। बंटी के समाचार सुनकर चिन्ता हुई कि तेजी जी को वहाँ दौड़ना पड़ेगा। यहाँ श्रंबादत्त की लड़की को पहिले पैरा टाइफ़ायड हुआ अब एंटिबाएटिक्स की कृपा से पीलिया हो गया है। शांती के भी अभी विशेष इम्प्रूवमेंट नहीं हुआ। प्लास्टर खोलकर बोन फिर रिसेट करनी पड़ी। इधर थोड़ा चिन्तामुक्त हुआ था कि अब शांता का इसी सप्ताह आपरेशन है। उसके पेट में बहुत बड़ा ट्यूमर निकला—उसकी तबियत इधर कभी से गिरी रहती थी, ज्वर भी रहता था। डा० सामंत आपरेशन करेंगी। अब १॥ महीने तो काम क्या ही होगा। इधर मैं अपनी पुरानी कविता में इधर-उधर काट-छाँट कर उसे आगे बढ़ाने की सोच रहा था। तुम्हें उसके २/३ अध्याय सुनाए भी थे, पिछली बार दिनकर जी आए तो उन्होंने भी कहा कि इसे लिख ही डालो—पर अब तो मन उधर से हटाकर पहिले शांता के स्वास्थ्य का ख्याल करना होगा—अस्पताल में तो सोमवार को चली जाएगी, पर कमज़ोर है इसलिए आपरेशन सम्भवत: १५-१६ से पहिले नहीं होगा—फिर १०-१५ दिन वहाँ रहने के बाद घर आ जाएगी। १॥ मास कम-से-कम आराम करना ही हुआ। यूनिवर्सिटी से मेडिकल लीव ले रही है। सो अबके तो झंझटों से मुक्ति मिलना ही कठिन हो गया है।

अमित की अँगूठी आ गई बड़ा अच्छा हुआ। मुझे तो पूर्ण आशा है कि अब की बार अवश्य वह उत्तीर्ण हो जाएगा। मेरा बहुत प्यार उसे देना। भट्ट जी अब अच्छे हो रहे हैं यह बड़ा अच्छा हुआ। तुम्हारे पिछले पत्र के बाद मेरे मन

में भी यह बात उठी थी कि अबके भट्ट जी को उनके काव्य संग्रह पर अकादमी पुरस्कार दिलाना चाहिए। मैं संग्रह का नाम भूल गया था। तुम्हें भी यही बात अपने आप सूझी यह अच्छा, वहाँ विज्ञापित करना। उर्वशी का अध्याय समाप्त हो गया, ठीक भी हुआ, एक बार पुरस्कार मिलने के बाद दुबारा मिलने में उस में कोई नवीनता और महत्व भी नहीं रहता।

मैं तो इधर ३ सप्ताह तो बहुत ही व्यस्त रहूँगा, उसके बाद भी शांता के पूर्णतः स्वस्थ होने तक घर के पीछे व्यस्त रहना पड़ेगा। घर के प्रबन्ध का प्रश्न हो जाएगा तो फिर तुम्हारे यहाँ हाउस कंट्रोलर भी समय पर हो सकूँगा। जब तुम्हारा घर बन जाएगा।

और क्या लिखूँ? बहुत २ प्यार लो—और तेजी जी का भी हिस्सा करो—आशा है तुम सब स्वस्थ हो।

सप्रेम,
शारदा

पु० गिरीश से मत कहना, वह अल्मोड़े को लिख देगा—इला से भी मत कहना।

सु०

१३

१८/७ बी०के०जी० मार्ग
इलाहाबाद
११-६-६२

प्रिय बच्चन,

तुम्हारा पत्र मिला, कुशल समाचार मिले। शांता कल अस्पताल जाएगी—२-३ दिन में शल्यक्रिया होगी। डा० सामन्त का ही भरोसा है, भगवान की कृपा से सब ठीक ही हो जाएगा। अब मैं तुम्हें इस बीच संभवतः रेगुलरली न लिख

सकूँ—आपरेशन के बाद सूचना दूँगा। तेजी जी अब अच्छी होंगी। अमित भी परीक्षा की तैयारी कर चुका होगा—भगवान चाहेंगे अबकी अवश्य उत्तीर्ण हो जाएगा।

तुम्हें, तेजी जी और अमित को प्यार—बंटी अब अच्छा होगा—उसे मेरी ओर से भी प्यार भेज देना—

मैं ठीक ही हूँ—

सप्रेम,
सुमित्रानंदन पंत

१४

इलाहाबाद
१५-६-६२
१ पी०एम०

प्रिय बच्चन,

अभी तुम्हारा पत्र अस्पताल से लौटने पर मिला। चिन्ता की अब विशेष बात नहीं रह गई है। शांता का आपरेशन कल ८॥ बजे प्रातः हो गया। अभी तो बहुत कमज़ोर है—पर दो-एक विज़िटर्ज़ आ-जा सकेंगे। मैं तो सवेरे-शाम वहीं ७-८ घंटे रहता हूँ। रात की दिन की नर्स भी रख दी हैं। शांता को १०१° बुखार है—दर्द बहुत बताती है। डा० सामंत आशान्वित हैं कि २-१ दिन में सब ठीक हो जाएगा।

तेजी जी को बहुत-बहुत धन्यवाद और प्यार दे देना। अभी तो वह १४-१५ दिन अस्पताल रहेगी। उसके बाद घर आएगी तो उसकी बहिन आ जा रही है। आवश्यकता होती तो मैं स्वयं तेजी जी को बुला लेता। उन्हें फिर से बहुत

धन्यवाद देना। अमित की परीक्षा शुरू हो गई होगी—उसे भी बहुत प्यार देना। शेष फिर—

बहुत प्यार,
भाईदा

१५

इलाहाबाद
१८-९-६२

प्रिय बच्चन,

मेरा पिछला पत्र मिल गया होगा—सब ठीक ही चल रहा है। कृपया राजपाल वालों से कह देना कि अनुबंध-पत्र मार्च तक भेज दूंगा—आजकल समय नहीं है। वे लोग आगे काम बढ़ावें।

धन्यवाद—

प्यार,
सुमित्रानंदन पंत

१६

इलाहाबाद
२७-९-६२

प्रिय बच्चन,

तुम्हारा पत्र मिल गया था—इधर अधिकतर अस्पताल ही में रहता हूँ इस लिए बहुत कम समय मिलता है। शांता की प्रोग्रेस बड़ी धीमी है—कमजोर है,

इसलिए। वैसे कोई कांप्लीकेशन नहीं है। कल दिल्ली से उसकी बहिन और बच्चा भी आ गया है। अब सवेरे इसे भेज देता हूँ। ४ बजे से शाम को मैं अस्पताल में रहता हूँ। इसीसे तुम्हें पत्र लिखने का समय मिल गया।

लेखक सम्मेलन में कोई विशेष बात नहीं हुई। दिनकर जी, यशपाल जी आए थे। मैं तो उसमें जा ही नहीं सका—सवेरे-शाम ड्यूटी रहती थी—शांता को अब भी १००° तक तापमान हो जाता है। कुछ लेखक सम्मेलनों में जन-सधीपना आ जाता है, यहाँ का भी गुना अपवाद नहीं था। बड़े आवेश में लोग बोलते हैं, जिससे सरकार के कान में तो जूँ नहीं रेंगती है पर अन्य भाषाभाषी उस उग्रता को अच्छी दृष्टि से नहीं देखते। सब मिलाकर उलटा परिणाम होता है।

अमित के परचे अच्छे हो रहे हैं, जानकर प्रसन्नता हुई। तेजी जी प्रसन्न होंगी—उन्हें मेरी ओर से बहुत याद कर देना—उन्होंने वहाँ जितना आराम दिया था इस बीमारी में उतना ही थक गया हूँ। काया बुड्ढी हो गई है—सदैव ही बुड्ढी रही, एक प्रकार से!

आशा है तुम्हारा स्वास्थ्य अब ठीक है—यहाँ इस बीच इतना पानी बरसा कि बस—मैं हूँ—रिक्शा है—पानी है और अस्पताल! खूब गत बनी।

न्यूज़ कमेटी की चर्चा आज लीडर में भी देखी—भगवती बाबू ने भी अपनी स्वीकृति दे दी है। बड़ा भावात्मक संकट देश के—विशेषतः हिंदी भाषियों के सामने आ गया है। लोग बहुत और अकारण क्षुब्ध हैं—क्या कहा जाए!

शेष फिर—

बहुत प्यार—
साईंदा

१७

इलाहाबाद
९-१०-६२

प्रिय बच्चन,

इधर मैं बीमार था—अब भी हूँ—पर कम। १०१-२° तक ज्वर था, तथा एमीबिक और बैसिलरी दोनों तरह की डिसेंट्री स्टूल्स के परीक्षण में निकलीं—कोलाइटिस के कारण एक सप्ताह से ५-६ मोशन्स प्रतिदिन आ रहे हैं। बुखार तो कल से नहीं के बराबर ९९° है। पर मोशन्स अभी २-३ हो ही जाते हैं—पेट में बड़ी अनइजीनेस की फीलिंग रहती है—पहिले डा० ने पैरा-टायफाइड समझा। १६-२० क्लोरोमाइसिटीन खाने पड़े—अब ६ टिकिया थेलाजॉल प्रतिदिन खा रहा हूँ। इससे सर घूमता है। शांता तो घर आ गई है पर उसका तापमान अभी ९९·६° तक है, घाव भी नहीं भरा है। कल डा० सामन ने एक भाग फिर काट दिया है। इससे परेशान है। वैसे ड्रेसिंग के लिए नित्य एस०के० मुकर्जी आते हैं। पेनिसिलीन ड्रेसिंग हो रही है—देखें कब ठीक होता है। शांता की बहिन और उसका बच्चा भी यहीं हैं—लगता है अभी १०-१५ दिन और परेशानी है। पर क्या किया जाय! ए०आई०आर० की मीटिंग के बारे में कुछ मालूम मुझे नहीं। तुम सब लोग सकुशल होगे। अमित के प्रैक्टीकल भी हो गए होंगे। परीक्षाफल कब तक निकलेगा? तेजी जी से मेरा बहुत-बहुत नमस्कार कहना। बहुत थकान का अनुभव करता हूँ। चिट्ठी लिखने में हाथ नहीं चल रहा है।

सब को बहुत प्यार—
साईंदा

पु० नरेन्द्र को भी फ़ोन से बतला देना।

सु०

१८

इलाहाबाद
११-१०-५२

प्रिय वत्सल,

आज ही तुम्हारी चिट्ठी तथा उदयपुर से लिखा कार्ड मिला। मेरा पिछला पत्र तुम्हें मिला कि नहीं? यहाँ डाकियों ने दशहरे की छुट्टी मनाने के कारण बहुत सी डाक, सुना, फाड़ कर फेंक दी है—संभव है मेरा पत्र भी उन्हीं में हो।

मेरा बुखार तो अब नहीं रहा, पर कमज़ोरी इतनी है कि मुझे चौबीस घंटे नींद ही घेरी रहती है। आकाशवाणी से १६ तारीख की एक वार्ता को मन्दे भाग के लिए रखता रहा हूँ। घाव का भी अभी पाक नहीं भरा है, न फोड़ा ही टूटा है। कल से होमियोपैथी का सिलिसिया २०० का सेवन कर रहा हूँ उससे पाक फूटने में मदद मिलती है, कहते हैं। अभी तो कोई असर हुआ नहीं संभव है दो-चार दिन में हो।

तुम राजस्थान का चक्कर लगा आए बड़ा अच्छा हुआ। मैंने तो अजमेर भरतपुर के अलावा अभी राजस्थान देखा ही नहीं, यद्यपि सर्वत्र मित्र लोग हैं बुलाते भी हैं, पर जाना ही नहीं हो पाता।

अमित का परीक्षाफल कब तक निकलेगा, लिखना। बड़ी उत्सुकता से प्रतीक्षा रहेगी। अब के निकल जाना तो तुम चिन्तामुक्त हो जाते। रह जाते बंटी, उन्हें तेजी जी अभी से गोद से उतारने से रही। आशा है तुम सब लोग वहाँ सकुशल और प्रसन्न हो। मौसम भी अब बड़ा अच्छा हो गया है। सिर्फ मेरा स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता। पेट में हर वक्त मरोड़ सी उठती है। शरीर भी निःशक्त हो गया है।

वहाँ राजधानी में हिन्दी-अंग्रेजी संबंधी बड़ी हलचल है। भारत का भाग्य! अभी कितनी परीक्षाएँ न जाने उसे देनी हैं!

और क्या लिखूं? हाथ थक गया है। डाक्टर लिवर एक्सट्रैक्ट और बी विटामिन के इंजेक्शन लेने को कह रहा है। जल्दी ही शुरू करने पड़ेंगे। शेष ठीक है। तुम्हारी दी रामायण का नित्य पाठ करता हूँ।

तुम्हें तेजी जी और अमित को बहुत प्यार—

शेष फिर—

साईंदा

पु: यहाँ प्रेमचंद स्मृति दिवस मनाया गया था। ८ तारीख को। प्रेमचंद जी के ६ अनुपलब्ध ग्रंथ भी प्रकाशित होकर उस दिन प्रदर्शित किए गए। अमृत राय ने उनकी एक ८०० पृष्ठ की जीवनी लिखी है, वह भी निकल गई, बड़े परिश्रम से लिखी है। तुम अपनी जीवनी कब लिख रहे हो?

सु०

१९

१८/७ बी० स्टैनले रोड

इलाहाबाद

१५-१०-६२

प्रिय बच्चन,

तुम्हारा पत्र मिल गया। तुम्हारे तो बड़े-बड़े दोस्त हैं...... किसी से कहके एक बार मेरे साथ विदेश-भ्रमण को निकलो...... भारत-भ्रमण भी उसी के साथ रहे। खैर, अभी तो मैं २१ ता० की शाम को कालका मेल से दिल्ली पहुँच रहा हूँ—वहाँ २२ को मीटिंग है। २३ को सवेरे संभवतः मुझे वापस लौटना पड़े—स्वास्थ्य तो मेरा ठीक नहीं पर तुम लोगों से भेंट हो जाएगी और दिल्ली ही बैठक भी इस कमेटी की है, तुम्हें भी सूचना मिल गई होगी। अपने साथ ही राजपाल एण्ड सन्ज़ की पांडुलिपि भी ले आऊँगा।

यहाँ सर्दी है मुना, जाड़े का ही सामान ला रहा हूँ। अब तार नहीं दूँगा। स्टेशन पर अमित को २१ ता० को शाम को भेज देना। बहुत धन्यवाद। लोटा था न यार अभी तक गया, न टेलीफोन ही लगा—यहाँ आने पर बताऊँगा। कोई किसी चीज की तुम्हें या तेजी जी को जरूरत हो तो लिखना। समय से पहिले सूचना देना कि ला सकें।

नवीन समाचार सामान्य। २२ को नरेन्द्र को घर जाने पर मुना सको तो भेंट हो जाय। शेष मिलने पर—बहुत प्यार—

साईंदा

इलाहाबाद
१६-१०-६२

प्रिय बच्चन,

तुम्हारा पत्र अभी मिला। मैं तो यहाँ १-२ दिन से अधिक नहीं ठहर पाऊँगा—कारण मिलने पर बतलाऊँगा। पर तुम छुट्टी लेने का प्रबन्ध कर रखना और मेरे साथ प्रयाग २४ ता० को कालका-मेल से लौटने की तैयारी कर लेना। इसीलिए यह कार्ड डाल रहा हूँ। जनजीरा कोई महाशय तुम्हारे लिए रख गए हैं, ले आऊँगा। २१ की शाम को कालका-मेल से दिल्ली पहुँचूँगा—स्टेशन पर भेंट होगी।

शेष मिलने पर—तेजी जी, तुम्हें और अमित को बहुत प्यार—

साईंदा

२१

१८/७, बी० स्टेनली रोड
इलाहाबाद
२५-१०-६२

प्रिय बच्चन,

मैं कल शाम को ७-३० बजे यहाँ पहुँच गया था। यात्रा बड़ी सुखद रही, अलीगढ़ से मेरी बर्थ खाली हो गई थी, बिस्तरा फैलाकर आया। पर धूल तो थी ही, और धुआँ भी! थकान भी काफी आ गई।

वहाँ ७/८ रोज़ तुम लोगों से मिलकर बड़ा अच्छा लगा। तुमने तो बड़ा भारी काम सौंप दिया है इस बार। देखो, कब झंझटों से मुक्ति मिलती है उस पर विचार करने को। लेकिन आइडिया अच्छी है, बड़ा हृदय मथन करना पड़ेगा। तुम्हारी सद्भावना और बाबा तुलसी की प्रेरणा रही तो कभी कल्पना मूर्त हो ही जाय! अभी तो उपन्यास की ही बात मन में घूमती है। यह मझली साइज़ का रामायण बड़ा अच्छा है, इसमें प्रश्न (शलाका) भी है—पहिली बात तुम्हारे ही दिए कार्य के बारे में पूछी—"प्रविसि नगर—हृदय राखि कोसलपुर राजा" उत्तर मिला—सो बड़ा आशाप्रद उत्तर है?

शांता का घाव तो अभी वैसा ही है—सभवतः १०% लाभ हो। आज फिर डा० सामंत ने उसे अस्पताल आने को कहा है। सवेरे श्री टंडन जी (रामचंद्र) भी आ गए थे। अब ठीक है। तेजी जी का डर तो निराधार है—अभी भला हम लोग उन्हें कब छोड़ने वाले हैं।

अमित को बहुत प्यार दे देना—बड़ा अच्छा लड़का है। भगवान से प्रार्थना है कि अबके अवश्य पास हो जाय। हो ही जाएगा।

२७ नवंबर को तुम्हारा जन्मदिवस है—तुम्हारे लिए क्या उपहार लाया जाए—सोचना है—तुम भी मदद कर सकते हो सुलझाने में—

शेष ठीक—शांता तुम लोगों की शुभकामना के लिए बहुत धन्यवाद देती है और कहती है बच्चन जी आने का वादा भर करते है आते कभी नहीं।

लोमशऋषि वाली कविता सुनकर बड़ी निराशा हुई कि तुम अब मकान नहीं बनाओगे ! लेकिन तुम्हें तो उतने नहीं बनाने पड़ेंगे—इसलिए शायद बना भी लो। "नाग" रचना बड़ी सशक्त और पूर्ण है। दीपशिखा कालिदास की तरह ना······ग बच्चन लोग न कहने लग जाएँ।—"सेमे खूँटे" की प्रतीक्षा रहेगी —शेष फिर—तुम्हें तेजी जी को बहुत प्यार—

साईंदा

२२

१८/७, बी० स्टेनली रोड,
इलाहाबाद
२-११-६२

प्रिय बच्चन,

तुम्हारा पत्र कल शाम को मिला। प्रसन्नता हुई। बड़ा आश्चर्य हुआ कि मेरा पत्र तुम्हें देर से मिला, संभव है दीपावली की छुट्टियों के कारण डाकखाने में देर हुई हो।

तुम भट्ट जी से मिल चुके होगे और गोपेश के बारे में बातें कर चुके होगे। यह बिचारा बड़ा परेशान है। उसके वेतन के बारे में भी अपना सुझाव दे देना। ४४०) तो उसे पहिले ही आकाशवाणी में मिलते थे। न्यूज सुपरवाइजर उसे बनाकर ५००) तक डी०जी० दे दें तो बड़ा अच्छा हो। उसे दो "दर्दंदिलसमेट्ग सो रखने ही पड़ेंगे।

"गौमित्र" पर तो अगले ही वर्ष हाथ लगाऊँगा। इधर तो चीनी युद्ध के कारण वातावरण कुछ बड़ी चीज उठाने के अनुकूल नहीं रह गया है, वैसे हो गया

तो मैं अपना उपन्यास पूरा करना चाहूँगा। समय का तो मुझे ध्यान रहता है, पर प्रेरणा भी तो मन में रहे तभी अच्छा लिखा जा सकता है। नहीं तो पठन-पाठन तो चलता ही है। तुमने बड़ी प्रश्नावली में जो प्रश्न तब किए थे उनकी तो मुझे याद भी नहीं है। हाँ, मेरी प्रश्न ठीक आई थी ऐसा स्मरण है। तुम्हारी कैसी आई यह नहीं याद है। ओंकार अभी कुछ घंटों के लिए कुछ दिन हुए यहाँ आया था। कीर्ति के पिता का स्वास्थ्य अभी सामान्य ही है। कीर्ति भी वहीं है। अजित का लड़का अब ठीक होगा। मैंने ओंकार से कह दिया था कि अजित अब आकाशवाणी में आ रहा है। पर इस समय गोपेश ही के लिए प्रयत्न करना ठीक होगा। बार-इकानिमी के कारण ए०आई०आर० दो व्यक्तियों को न ले सकेगा। कुछ निश्चित करके गोपेश को शीघ्र बुलाने का प्रबन्ध कर लो—भट्ट जी जो कुछ कहें मुझे भी लिखो। मैं भी उन्हें लिख रहा हूँ।

आशा है तेजी जी और अमित स्वस्थ और प्रसन्न होंगे। दोनों को मेरा बहुत प्यार देना। तुम्हारी जन्मतिथि तो २७ ता० को है न? फिर से लिखना। तिथियाँ सदैव भूल जाता हूँ—अबके डायरी में लिख लूँगा। उपहार की बात तो रह ही गई, तुमने कुछ लिखा नहीं, आशीर्वाद तो हुए ही हैं—प्रसाद के रूप में भी कुछ हो जाए तो क्या बुरा? लिखना।

मेरा स्वास्थ्य धीरे-धीरे ठीक हो रहा है। अपनी ओर से ठीक रहने का प्रयत्न करता हूँ! पिछले दो महीने तो बड़े बुरे बीते। अब आशा है ठीक हो जाऊँगा। तुम्हारा स्वास्थ्य ठीक होगा—शेष तुम्हारा पत्र आने पर—

बहुत प्यार—

सदैव,
सुमित्रानंदन

२३

१८-७ बी०, स्टेनली रोड,
इलाहाबाद
७-११-६२

प्रिय बच्चन,

मेरा पिछला पत्र मिल गया होगा। तुम्हारा एक छोटा-सा पत्र और पुस्तक मिली—चार खेमे और चौसठ खूँटे—छपी शायद अच्छी नहीं—मेरा अभिप्राय उसके कवर से है। बहुत सामान्य सा लगा। तुम्हारी रचनाएँ फिर पढ़ गया हूँ—बहुत ही अच्छी हैं—विशेषकर मुक्त छंद वाली। तुम अपनी भूमिका कब तक चाहते हो? दिसंबर १५-२० तक लिखूं तो कैसा हो? आजकल कुछ तो युद्ध के कारण कुछ पारिवारिक कारणों से भी लिखने को अधिक जी नहीं कर रहा। मैं सोचता हूँ दिसबरं १५-२० तक देर नहीं होगी।

गोपेश जी कल वहाँ पहुँच जाएँगे। मैंने भी डी०जी० को एक पत्र दे दिया है तुम भी ज़रा उनके वेतन के सम्बन्ध में मि० मल्लिक और भट्ट जी से ज़ोर देकर कह देना। वैसे तो वह तुम्हारे अधीन काम करने के लिए बहुत उत्सुक और प्रसन्न है। समाचारों की भाषा तो अब बहुत अच्छी हो गई है—आगे और भी ठीक हो जाएगी।

तुमने अपने जन्मदिवस की तिथि के बारे में नहीं लिखा—(२७ नवंबर है। ददा २६ न० कह रहा है।) संभवतः उन दिनों वहाँ मीटिंग भी हो। यहाँ लेखकों की ओर से एक सम्मेलन २५-२६ नवंबर को होगा। एक वक्तव्य निकल ही चुका है। वहाँ भी लेखक वर्ग युद्ध के सम्बन्ध में अपना सहयोग देने की तैयारी रचनाओं, नैतिक समर्थन एवं आर्थिक सहायता देने का प्रबन्ध कर रहे होंगे। नरेन्द्र के क्या समाचार हैं? सुशीला बेन को साथ लाया है कि नहीं? तेजी जी स्वस्थ और प्रसन्न होंगी—अमित भी—मेरा दोनों को प्यार

देना। माता जी अभी ठीक हुई नहीं। डा० मानक भाटावाल बम्बई में हैं—१० को आने वाली हैं—तब देखेंगी।

यहाँ के नवीन समाचार सामान्य ही हैं। मेरा स्वास्थ्य ठीक ही है। आशा है तुम भी अब ठीक होगे। इधर मैं मन से लिवर एक्सट्रैक्ट के इंजेक्शन ले रहा हूँ।

नवीन समाचार लिखना—

बहुत प्यार—

माईदा

२४

छिपाए के लिये नहीं

इलाहाबाद
१२-११-६२

प्रिय बच्चन,

यह जानकर बड़ी प्रसन्नता हुई कि अमित II श्रेणी में पास हो गया—बड़ा संकट कटा। मेरी बहुत २ बधाइयाँ लो—तेजी जी और अमित को भी दो—और अमित को बहुत प्यार भी कर देना—मुझे लग रहा है जैसे मैं ही पास हो गया हूँ—अब कहीं वह सेटल हो जाए तो तुम्हारी चिंता दूर हो। तेजी जी बहुत ही खुश होंगी—उन्हें कितनी चिन्ता थी यह मैं खूब समझता था। अब उनका स्वास्थ्य भी ठीक हो जाएगा—मन का काँटा निकल जाने से। मेरे लिए बहुत सी मिठाई भेजना—तुम्हारी जन्मतिथि खूब रट ली है—अब नहीं भूलूंगा।

गोपेश जी वहाँ लग गए यही बहुत है—धीरे २ आगे भी बढ़ जाएँगे। शायद युद्ध संकट के कारण भट्ट जी डी०जी० ने अधिक वेतन देना ठीक या संभव न समझा हो। तुम्हारी भूमिका तो दिसंबर तक ठीक ही कर दूंगा सोचता हूँ।

और तुम्हारे जन्मदिवस पर वहाँ आ सकूंगा कि नहीं अभी नहीं जानता—शांता का घाव आज डा० सामंत ने फिर कुछ खोल दिया है—उसमें केटगट जो रह गया है, जब तक वह नहीं निकलेगा घाव नहीं पूरेगा। और तो सब प्राय: ठीक ही चल रहा है। आजकल मैं वेल्स का दी साईंस ऑफ़ लाइफ़ पढ़ रहा हूँ। युद्ध के कारण लिखने का वातावरण ही कुछ बदल-सा गया है—संभव है कुछ दिन इसे निगलने मे लगें—जिसे स्वेलो करना कहते है।

मेरी पुस्तक का डिज़ाइन दूसरा न बन सके तो वही पहिले वाला दे दो—बिना डिज़ाइन के तो ठीक नहीं रहेगा—तुम फ़ोन से कह देना कि वही पहला डिज़ाइन कवर पर देदें। तुमने संभवतः ये बातें अपनी पुस्तक—खेमे और खंभों (खूंटों ?) के लिये लिखी है—मेरी दी आइडिया तो ऐसी सूक्ष्म नहीं थी—खैर, उसे एक्ज़ेक्यूट करने में कठिनाई हो सकती है।

आशा है सत्यनारायण जी की कथा समाप्त हो गई होगी—तेजी जी कितनी अच्छी माँ हैं। उन्हें मेरी ओर से बहुत प्यार देना—

आशा है तुम बहुत प्रसन्न हो पुत्र की विजय पर ! बेटा मुझे भी बहुत प्रिय है।

शेष फिर—

सप्रेम,
सुमित्रानंदन पंत
साईंदा

२५

इलाहाबाद
२२-११-६२

प्रिय बच्चन,

दो दिन पूर्व तुम्हारा पत्र मिला था, मैं उत्तर इसलिए नहीं दे पाया कि मेमरों मे भाषण मे काफी विचार-विमर्श रहा। तुमने पत्रों में भी पता

होगा। तुमने अपने संस्मरण लिखने शुरू कर दिए इससे मुझे बहुत खुशी हुई। मुझे विश्वास है वे बड़े ही दिलचस्प तथा शिक्षाप्रद होंगे। क्योंकि तुम्हारे जीवन में कई प्रकार के चढ़ाव-उतार रहे हैं और कई तरह की शक्तियों ने कार्य किया है। तेजी जी पर मुक्त हृदय से न्याय करना न भूलना।

साईंस ऑफ लाइफ़ तथा दि वकर्स, हैल्थ एण्ड वैल्थ आफ मैनकाइंड यहाँ पब्लिक लाइब्रेरी की पुस्तकें हैं—तुम्हारे पास तो शायद ही भेज सकूँगा पर अब थोड़ी आउट ऑफ डेट सी लगती है। वैसे इनफारमेटिव तो अपने ढंग की हैं ही। युद्ध का यह नाटकीय अंत समझ में नहीं आया।—बहुत सोच समझकर काम करने का समय है—चेष्टा सम्मानपूर्ण न्यायपूर्ण शांति ही की ओर रहनी चाहिए।

'शानी' एक गरीब किन्तु बड़ा प्रतिभासंपन्न हिन्दी का कहानी उपन्यास लेखक है—है तो मुसलमान पर लिखता हिन्दी में है। एक कहानी संग्रह अदक, दूसरा अमृत के यहाँ से तथा एक लघु उपन्यास बनारस से निकल चुका है और दूसरा बृहद् उपन्यास राजकमल से प्रकाशित होने जा रहा है। एक पुस्तक 'शांत वनों का द्वीप' बस्तर के आदिवासियों के बारे में लिखी है जिसे वह राजपाल से छपवाना चाहता है। क्या तुम विश्वनाथ जी से पूछ सकते हो इस बारे में? तुम्हारे उत्तर के अनुसार ही शानी आगे काम करेगा।

शांता का घाव धीरे २ पुर रहा है। इसलिए विशेष चिन्ता की बात नहीं। तेजी जी और अमित प्रसन्न हैं जानकर प्रसन्नता हुई। नाटक कब तक स्टेज होगा?

बच्चन, आना तो तुम्हारे जन्म-दिवस पर बहुत चाहता हूँ—पर बूढ़ा शरीर है—बहुत दूर होने के कारण साहस नहीं होता—तार से ही अपनी मंगलकामनाएँ भेज सकूंगा—वैसे मन से तुम्हारे ही पास रहूँगा।

और सब ठीक ही चल रहा है। तुम्हें, तेजी जी और अमित को मेरा बहुत प्यार—शांता भी नमस्कार और अमित को बहुत बधाई भेज रही है—

बहुत प्यार—

सुमित्रानंदन

बेंडर चोटियों के लिए ऐसा गरम युद्ध ठीक नहीं। पर, यह तो और भी बहुत बातों पर निर्भर है। न जाने चीनी लोगों की क्या इच्छा है।

तेजी जी और अमित के क्या हाल हैं? मां-बेटे खुश होंगे—प्रोयेलो कब होने वाला है? क्या तुम मुझे आने-जाने का नाटक देखने के लिए टी०ए० देने वाले हो? रहूँगा तो तुम्हारे ही साथ इसलिए टी०ए० नहीं देना पड़ेगा अलग से। 'सोपान' कब निकलने वाला है? ठीक-ठीक लिखना—उसी हिसाब से भूमिका भेज दूँगा। इधर अपने उपन्यास पर भी जुटना चाहता हूँ। तुम्हारे संस्मरणों से मेरा उपन्यास कम इन्ट्रेस्टिंग नहीं होगा—उसमें भी कहीं-कहीं संस्मरण आए हैं। अभी तो ३/४ सौ पृष्ठ लिखने हैं। २ सौ के करीब लिखे हैं। लिखे तो पहिले ही गए थे, अब इधर-उधर उन्हें काट-छाँट कर ठीक कर रहा हूँ।

तुम्हारा स्वास्थ्य खूब अच्छा होगा—यहाँ तो सर्दी बड़ी है, वहाँ भी होगी ही। अब तुम डींग हाँककर मुझे बुली तो कर नहीं सकते कि सबेरे-सवेरे ८-१० मील टहलता हूँ। अब तो शायद कम्पाउंड ही के अंदर टहलते होगे। मैं तो अपने ही आँगन में टहलता हूँ। 'वाणी' में मेरी अपने छोटे से आँगन पर एक कविता है—है तो एक युगवाणी या ग्राम्या में भी। पर 'वाणी' की प्रयाग के आँगन पर है। तुम्हारे बराबर कंपाउंड मेरे पास होता तो मैं खेती भी उसमें करता और बाजार से गेहूँ नहीं खरीदता। इधर क्या तुमने कोई लोकगीत नहीं लिखे। तुम ठीक कहते हो युद्ध के कारण लोगों का ध्यान रचनात्मक साहित्य से हटकर गाली-गलौच की ओर चला गया है। हमारे आ०वा० के कार्यक्रम भी वैसे ही होने लगे हैं। तुम्हारा न्यूज बुलेटिन कैसा चल रहा है। शाम की खबरों की भाषा तो बड़ी प्रवाहमयी तथा मुलायम हो गई है। मैं ध्यानपूर्वक सुनता हूँ। सुधार तो उसमें बहुत स्पष्ट नजर आता है। ये बातें तो वही जान सकते हैं जो पहिले से समाचारों की भाषा संबंधी पृष्ठभूमि से मेरी तरह परिचित हों।

और वहाँ के नवीन समाचार—रेडियो के नहीं—लिखना। तेजी जी और अमित को बहुत प्यार देना। तुमने अजित के स्थान पर किसे रखा है? अब भी सोच लो। मुझे रखने में यह फ़ायदा होगा कि एक तो काम सब तुम्हीं को करना पड़ेगा—जिससे तुम्हारा अभ्यास और बढ़ जाएगा—अभी ३ साल

बिताने हैं। दूसरा पद में साथ हो जाएगा। तुम्हें पसंद हो तो मेरी ओर से आवेदन पत्र देकर १ जनवरी से कुनमा लो।

और सब ठीक है। घुटने के हाल अगले पत्र में आज एक्स-रे कराने के बाद ठीक-ठीक भेज सकूँगा।

मेरा बहुत-बहुत प्यार लो—

तुम्हारा ही,
साईंदा

२७

१८/७ स्टेनली रोड,
इलाहाबाद
७-१२-६२

प्रिय बच्चन,

तुम्हारा ४ ता० का पत्र। मेरे घुटने में विशेष कुछ नहीं निकला। बी १२ +बी १ के १० इंजेक्शन्ज लेने को तथा वेट फोमेंटिंग को डाक्टर मित्तल ने कहा है। और सब दाँत निकलवाने को, ब्लड शुगर टेस्ट करवाने को कहा है। इसी सप्ताह में सब हो जाएगा। तब मैंने तुम्हें नहीं बतलाया था कि शायद अस्थायी मसक्यूलर पेन हो—पर जब जहाँ बढ़ने लगा और उठने-बैठने में दर्द होने लगा तो चिन्ता हुई और डाक्टर को दिखाना ठीक समझा। चलता-फिरता तो थोड़ा बहुत हूँ ही—यहीं अपने कंपाउंड में। अपने पैर की बात मत लिखो, वह तो खुर बनने की तैयारी में विकासक्रम की राह से गुजर रहा है। मेरे तो घुटने का दर्द है, वहाँ कोई इस प्रकार की क्रिया नहीं संभव है।

यह ठीक है कि पाचनक्रिया का चलने से कोई संबंध नहीं। बल्कि जब कोई कम्पलीट रेस्ट लेता है तो खाना अधिक अच्छी तरह पचता है। तब संपूर्ण शक्ति और रक्त प्रवाह भोजन पाचन क्रिया को सहायता देती है। युद्ध के

अब तो देश का वातावरण ही बदल गया है। खैर सशक्त और सुसंगठित तो राष्ट्र को रहना ही चाहिए। चीनियों की दी हुई चेतावनी को आगे हमें भूलना नहीं चाहिए। वैसे इस समय तो सन्धि ही के आसार अधिक दिख रहे हैं। 'लोकायतन' की भूमिका अपने साथ ही ले आऊँगा, अभी तो मन नहीं रहा है। गणतंत्र दिवस के अवसर पर कहाँ आना पड़ेगा—क्या उसमें पहिले भाषा समिती बैठक भी है? तभी क्यों नहीं रखवाते हो—गणतंत्र दिवस के आसपास। बार-बार आने-जाने में कष्ट जो होता है। नाटक भी उसी के निकट रखो तो सब काम साथ ही हो जाएँ। श्री दशरथ अवस्थी जी ने तुम पर जो पुस्तक लिखी है कल मैं उसकी भूमिका छोटी-सी लिखनी है। पुस्तक ठीक है। पढ़ चुका हूँ। आलोचक से अधिक तुम्हारे काव्य के प्रेमी हैं।

मेरा नौकर चला गया है। कल तक दूसरा मिल जाएगा। ऐसी आशा है।

बंटी जी वहाँ पहुँच गए होंगे और प्रसन्न होंगे। स्वास्थ्य अब ठीक हो गया होगा। पिंकी बहुत खुश होगी। अमित बंटी को मेरा प्यार देना।

आशा है तेजी जी का स्वास्थ्य भी ठीक होगा, इधर तो सर्दी काफी पड़ने लगी है, दो दिन से पानी भी बरस रहा है। दिल्ली में तो कवि-सम्मेलनों की खूब धूम है। यहाँ भी शायद हो। संस्मरण के कितने चेप्टर लिख चुके हो। इधर-उधर तो मुझे संशोधन करना पड़ेगा—तुमने कुछ बातें जरूर छिपाई होंगी। आज तुम्हारे एक कज़िन आए थे रंगभारती के मंत्री—उनके पिता की हाल ही में मृत्यु हुई है। एक काव्य संग्रह निकाल रहे हैं। एक रचना मुझसे भी ले गए हैं। एक काव्य संग्रह हिमालय पर एन०डी०एफ० के लिए महादेवी जी भी निकाल रही हैं—क्या तुम्हारी हिमालय पर कोई रचना है—या उससे सबद्ध। आज उन्होंने फ़ोन पर पूछा था। हो तो लिखना।

खाँसी पहिले से ठीक है, अभी दुर्बलता तो ५/६ महीनों में दूर होगी। पर काम चलाऊ स्वास्थ्य ठीक है। शेष फिर।

तुम्हें, तेजी जी को बहुत प्यार—

साईंदा

२८

१८/७ बी०के०जी० मार्ग,
इलाहाबाद
११-१२-६२

प्रिय बच्चन,

तुम्हारा पत्र। तुम १४ को अवश्य आओ—तुम्हें स्टेशन पर आकाशवाणी की गाड़ी जरूर मिल जाएगी। रात को खाने सोने का भी खूब अच्छा प्रबन्ध हो जाएगा। मैं वहाँ २० को आ सकूँगा कि नहीं यह अभी संदिग्ध है। यहाँ आने पर तुम्हें मालूम होगा। यह बड़ा सुयोग है कि तुम से भेंट हो जाएगी। मेरा पहला पत्र तुम्हें मिल गया होगा। तेजी जी और बच्चे प्रसन्न होंगे। मेरा सबको प्यार देना। शेष मिलने पर—

प्यार,
सुमित्रा

गोपेश जी सम्भवतः बम्बई से लौट आए होंगे उन्हें याद कर देना—
सु०

२९

इलाहाबाद
१८-१२-६२

प्रिय बच्चन,

तुम्हारा कुशल पत्र पाकर प्रसन्नता हुई। तुम तो शिष्टाचार के वैसे ही भंडार थे उसपर तेजो जी ने तुम्हें यहाँ आती बार तोते की तरह न जाने क्या-

क्या रटा दिया। अरे भाई, सीधी सी बात यह है कि तुम्हें यहाँ कष्ट तो अवश्य ही हुआ होगा, मेरे पास नौकर भी नहीं था। पर मैं तो इन बाहरी बातों को देखता नहीं—तुमसे भेंट हो गई, दरस-परस पाकर आनन्द मिला, यही बहुत है। भला १०) रु० एम०ओ० से भेजने की क्या जरूरत ? जब मैं वहाँ आऊँगा ५) उसमें ब्याज के और मिलाकर १५) वापस कर देना। मेरी भी भलाई, तुम्हें भेजने की दिक्कत भी नहीं रही। अपने उपन्यास के बारे में अभी कुछ नहीं कह सकता। इधर तो लिखा नहीं जा रहा है। इसके बाद ही "सौमित्र" लिखने का प्रयत्न किया जा सकता है। तुम उसे लिखकर मेरे नाम छपा देते तो बड़ा मजा आता। आदर्श पुरुषोत्तम तो राम ही हैं और कौन हो सकता है कृष्ण भी नहीं हैं—पर हाँ लक्ष्मण को मैं अपने प्रिय भूमानव के रूप में अवश्य अंकित करना चाहूँगा। राम से बढ़कर राम का दास कहना तो कविता है—राम भला छोटे-बड़े की श्रेणी में कैसे आ सकते हैं, बड़े हैं तो वही—छोटे हैं तो वह भी वही हैं—और लक्ष्मण भरत तो कहीं दीखते नहीं—उन्हीं की छायाएँ हैं। वैसे तुम अपना ज्ञान दो तो इन पर और दृष्टिकोणों से भी विचार किया जाए।

शांता कहती है बच्चन दिल्ली के लखनऊ के निवासी है—तकल्लुफ सेंट % वह तुम्हें स्वयं लिखेगी। तुम्हारी गाड़ी के बारे में जब यहाँ पूछा था तब तो इन्क्वायरी वालों ने राइट टाइम पर आ रही बतलाया था—चार घंटे लेट शायद दिल्ली पहुँचने में हुई हो। या यहीं ४ घंटे लेट थी ? तब तो तुम घर आ सकते थे ! खैर। बंग परिषद् का आमन्त्रण लेकर एक महिला यहाँ भी आई थी, मैंने स्वास्थ्य के कारण असमर्थता प्रकट कर दी। वैसे गोरखपुर जाने से बाबा के दर्शन हो सकते, पर उन्हें यहीं से श्रद्धापूर्वक प्रणाम कर लेता हूँ। मार्च तक यदि उपन्यास और संस्मरण समाप्त हो गए तो बड़ा अच्छा हो। तुम्हारा भी साथ रहे। तेजी जी और अमित बंटी को मेरा प्यार देना। तेजी जी से कहना कि आगे से तुम्हें सिखा-पढ़ाकर न भेजें। मैं जब १½ महीने वहाँ रहकर तुम लोगों के साथ तकल्लुफ़ नहीं बरतता तो भला तुम्हें इस प्रकार घोख-घोखकर औपचारिकता दिखाने की क्या जरूरत ! खैर, मार्च में जब आओ तो शिष्टाचार तो दिल्ली ही के शिष्ट लोगों के लिए छोड़ आना।

तुम्हारे गए से यहाँ बदली ही छाई रहती है—धूप देखने को जी तरस गया

है। और कोई नवीन समाचार हों तो लिखना। मीटिंग (२० ता०) में कोई विशेष बात हुई हो तो लिखना। मैं ठीक हूँ। शेष फिर—

बहुत प्यार—

साईंदा

शांता कहती है बच्चन को खूब डाँट दो कि इस प्रकार की औपचारिकता दिखाना छोड़ दे—

सु०

भाई बच्चन जी,

मैंने डाँटने के लिए नहीं कहा था। ददा के कहने पर कि चिट्ठी लिखोगी—मैंने कहा कि इतनी औपचारिकतापूर्ण बच्चन दादा की चिट्ठी आई है कि मैं क्या उत्तर दूं। सम्भवतः लज्जित होना चाहिए कि सत्कार नहीं कर पाई। मेरे पास बाहरी कुछ नहीं है—हृदय से स्वागत करता हूँ। यदि आप समझ सकें तो आभारी हूँ। हाँ, आपको बताना या सुनाना भूल गई—मैंने तो आपके लिए "लक्ष्मण" शब्द का प्रयोग किया है।

सादर,

शांता

३०

इलाहाबाद
२५-१२-५२

प्रिय बच्चन,

बड़े दिन की बधाई स्वीकार करो। आशा है तुम गोरखपुर से लौट आए होंगे और वहाँ का कार्यक्रम ठीक रहा होगा। बाबा जी से मेरा भी प्रणाम निवेदन कर दिया होगा। बाबा जी के समाचार तथा गोरखपुर के कवि सम्मेलन के हाल लिखना। तुम्हारा दूसरा पत्र भी यथासमय मिल गया था। तुम्हारे भाई

के बारे में कुछ लिख नहीं सका—अभी आफिस का बहुत कुछ काम आ गया है—युद्ध पर दो रचनाएँ गणतंत्र दिवस के लिए, तथा संस्कृत काव्य से वीर रस के २० पद चुनकर उनका अनुवाद करना इत्यादि—२५ ता० जनवरी १९६३ का तकाज़ा भी आ गया है, सो मैं २४ की रात को वहाँ पहुँच जाऊँगा। और २६ की रात या २७ की प्रातः चलकर शाम को यहाँ। सम्भव हो २६ को रात्रि ८॥ बजे वाली गाड़ी में मेरा रिज़र्वेशन करवा देना। मैं यहाँ से २४ की रात को चलकर २५ को भी वहाँ पहुँच सकता हूँ—ठीक से पीछे लिखूँगा कि क्या सम्भव है।

शांता को तुम्हारा संदेसा पहुँचा दिया गया। वह अपने मन से लिख रही है। तुम्हारे "कवियों में सौम्य संत" में उसने कुछ गलतियाँ निकाली हैं—उदाहरणार्थ तुमने लिखा है—उद्दाम वासना से पीडित हो कवि ने मेरे यौवन के प्याले में फिर वह आसव भर दो—लिखा है—यह रचना १९१९ की है—तब शायद ही १९ की अवस्था में यौवन की उद्दामता आरूढ़ हो सकती है। दूसरा यह कि उमर ख़ैयाम पढ़कर "परिवर्तन" लिखा गया। परिवर्तन सन् २४ की रचना है। खैयाम १९२८ में मधुज्वाल में अनुवाद किया गया है। सो उमर खैयाम से प्रेरणा पाने का प्रश्न ही नहीं उठता। अतः शांता बड़ी प्रसन्न है कि बच्चन जी जैसे महान आलोचक भी ऐसी तथ्य सम्बन्धी भूलें कर सकते हैं और दूसरों को तिथि और तथ्य की प्रामाणिकता का उपदेश देते हैं। सो तुम उसके तर्कों का उत्तर देने के लिए तैयार रहो।

बंग सम्मेलन का हाल विस्तारपूर्वक लिखना। और २० ता० को जो वहाँ आकाशवाणी भवन में हिंदी भाषा सबंधी बैठक हुई उसके भी समाचार लिखना।

श्री गोपेश जी का एक बड़ा स्नेहपूर्ण पत्र मिला है। उनसे मेरा बहुत-बहुत नमस्कार कह देना और वह देना कि पंत जी ने आपको बहुत याद किया है। समय मिलने पर मैं स्वयं भी उन्हें लिखूँगा। आधा पत्र आज दोपहर ही को लिख लिया था, फिर महादेवी जी और अमृत आ गए—अभी-अभी गए हैं—इस समय साँझ के सात बजे हैं—शेष पत्र अब समाप्त कर रहा हूँ। तुम्हारा दस रुपए का एम०ओ० मिल गया। अब मन में कोई शंका नहीं रही कि तुम कितने बेवकूफ हो—रत्ती भर नहीं। खैर मुझे मेरे ५ रु० मिल गए खुशी हुई।

तेजी जी, अमित और अजित प्रसन्न होंगे। पिश्ती भी। उन सबको मेरा बहुत प्यार देना। तुमसे तो भेट हो ही गई अब २५ ता० जनवरी को सिर्फ तेजी जी से मिलने आऊँगा। गांधी जी की समाधि पूर्ण हो गई कि नहीं अवश्य लिखना—उसके पूरे होने पर उसे देखना चाहूँगा। सभवतः आजकल युद्धस्थिति के कारण उसका काम भी रुक गया हो।

क्या तुम्हें भी कोई युद्ध सम्बन्धी रचना २५ ता० को सुनानी है? क्य भरतू का काम लोग थोप देते हैं सिर पर! नरेन्द्र के समाचार मालूम हों तो लिखना।

अपनी यात्रा के सब समाचार लिखना। संस्मरण का क्या हाल है? कुछ आगे बढ़े?

शेष फिर—

बहुत प्यार—
साईंदा

३१

१८/७ बी० स्टेनली रोड,
इलाहाबाद
४-१-६३

प्रिय बच्चन,

तुम्हारे पत्रों का उत्तर शीघ्र नहीं दे सका। कई झंझटों में फँस गया था। कुछ लोगों का काम निबटाना था। सबसे पहिले तो तुम सपरिवार मेरी नव वर्ष की बधाई लो। खूब फूलो-फलो—मोटे हो और मलाई खाओ—संस्मरण पूरा करो और बहुत लिखो। तेजी जी, अमित और बंटी को भी नववर्ष की अनेक शुभकामनाएँ और प्यार दो।

'युगमथन' नाम अच्छा लगा, पर अभी तो समाप्त करने पर ही नाम का अंदाज़ आएगा—आजकल तो कुछ लिखना हो नहीं रहा है। सर्दी भी है, मन भी काम नहीं कर रहा है। जब लिखने का काम पूरा हो तो तब उपन्यास का नाम भी सोचा जाए। वैसे तुम्हारा दिया नाम भी उपयुक्त ही है। ग्रॉथेलो का छपा हुआ सुन्दर विज्ञापन ग्राज ही मिला। २४(जनवरी)ता० से ४(फरवरी) तक वहाँ रहना तो किसी प्रकार संभव नहीं हो सकता। भला, यहाँ नौकर भी नहीं। शांता अकेली बहुत बुरा मानेगी। तुम २७ ता० जनवरी को क्यों नहीं रख देते? वैसे मेरा इरादा तो २६ को रात की गाड़ी से वहाँ से लौटने का है २४ की शाम को वहाँ पहुँचने का। सो मेरी विवशता के लिए तेजी जी से क्षमा माँग देना।

गोरखपुर का मुझे भी निमंत्रण एक महिला आकर दे गई थी और बड़ा आग्रह भी उनका था पर जाना संभव नहीं था। खैर प्रयाग को फिराक साहब ने रिप्रेज़ेन्ट कर दिया, यह अच्छा ही हुआ। उनकी आदतों के लिए कोई क्या करे। उनके लिए सब कुछ परिहास ही रहता है—मस्त जीव हैं—प्रतिभा-संपन्न। यहाँ कोई कहता था दिल्ली में बहुत ठंडा है, क्या एक रजाई से ज्यादा जाड़ा है? असलानी जी को भूमिका भेज दी है, छोटी-सी है। उनकी पुस्तक तो तुम देख ही चुके हो, अधिक लिखना संभव नहीं था। वैसे विचारों ने बड़ा परिश्रम अपने ढंग का किया है।

यहाँ ३०-३१ जनवरी को लेखक सम्मेलन भा० संसद् की ओर से हो रहा है—पत्रों में पढ़ा होगा—तुम तो क्या ही आ पाओगे—ग्रॉथेलो की तैयारी में कुछ तो सहायता तुम भी करते ही होगे या करोगे। तुम्हारा क्या अब कोई पार्ट नहीं रहा? डेसडिमोना के पिता की भूमिका पर तब उतरने वाले थे? दिल्ली के समाचार तुमने कभी से नहीं लिखे—

नरेन्द्र के क्या समाचार है? कभी भेंट होती है कि नहीं? कौन संबंधी समझौते में कहाँ तक प्रगति हो रही है? आगे कैसे आसार नजर आते हैं? विस्तार से लिखना। तुम्हारे संस्मरणों का क्या हाल है? कविता का?

गणतंत्र दिवस के अवसर पर मैं संस्कृत का अनुवाद पढ़ूँगा। किरातार्जुनीय काव्यम् से मैंने दो पद चुनकर भी भेज दिए थे। अनुवाद भी कर चुका—

रिकार्डिंग करवाके भेजवा भी दिया। तुम तो शायद लालकिले के कवि सम्मेलन में भी भाग लोगे। मेरे लिए भी निमंत्रण आया है, पर इस सर्दी में आधी रात तक कौन बाहर रह सकता है—बुड्ढा आदमी ठहरा। तुमने तो साठा-पाठा कहकर ही संतोष करवा दिया था। पर बूढ़ापना बुढ़ापा ही है। शांता कहती है महारथियों से लोहा नहीं लेना चाहिए। इसलिए तुम्हें सपरिवार नए वर्ष की बधाई भेजती है। कहती है लेकिन स्त्रियों से हार मानना यह महारथियों को शोभा नहीं देता, जैसे उनसे तर्ककर उन्हें हराना किसी को शोभा नहीं देता—सो तुम्हीं आपस में निर्णय कर लो। अच्छा अब पत्र समाप्त करता हूँ। आज बहुत पत्र लिखने हैं—मेरा बहुत प्यार लो—

[illegible]

१८/७ बी० स्टेनली रोड,
इलाहाबाद
८-१-६३

प्रिय बच्चन,

आज ही दिन को तुम्हारा पत्र मिला। अमिताभ अच्छा हो गया जानकर प्रसन्नता हुई। मेरी भी बधाई लो। मुझे दुःख है दूरी के कारण मैं उसे नहीं देख सका। तुम स्वयं सोच सकते हो इतनी दूर आना-जाना कितना कठिन है। मैं २४ ता० प्रातः मेल से चलकर तुम्हारी शादी की तिथि के समारोह में ८-४५ तक पहुंच जाऊंगा। नरेन्द्र को भी बुला लेना। उनसे [illegible] कठिन ही प्रतीत होता है।

तुम [illegible] दिन तक लगातार [illegible] करने के बाद [illegible] गए होगे। [illegible] सरकार [illegible] की [illegible] लिखनी थी। मुझे [illegible] था कि वह तुम्हारी ८-१-६ को है जैसा कि मेरे पिछले पत्र में भी [illegible]

था—पीछे नव भारत टाइम्स को पढ़कर मालूम हुआ कि वह हो गया। तुमने फोल्डर तो भेजा था पर मैंने उस पर ध्यान नहीं दिया था। प्रधानमंत्री जी ने मंच पर आकर उसकी प्रशंसा की, यह बड़ा अच्छा हुआ। विस्तार में वहीं तुमसे मिलने पर सुनूँगा। तेजी जी भी बहुत थक गई होंगी। अमित का पार्ट खूब अच्छा रहा होगा। पंडित जी के यहाँ भी कल परसों भाषण हुए थे, वहाँ के लोगों में जीवन फूंक गए।

तुम थकान दूर होने पर विस्तार से पत्र देना। सर्दी यहाँ बहुत है—वहाँ कैसी है, रजाई से काम चल जाएगा कि नहीं लिखना। सर्दी को देखकर तो लगता है कि वहाँ न जाया जाए, लेकिन वहाँ तो आना ही होगा।

शांता—तुमको और तेजी जी को बहुत-बहुत नमस्कार भेजती है। तेजी जी को मेरा भी बहुत प्यार देना। शेष तुम्हारा लम्बा पत्र आने पर—

बहुत प्यार—

गाईदा

पी० एस०—हो सका तो सर्दी अधिक नहीं रही तो—२३ को शाम को चलकर २४ को सवेरे पहुँचने का प्रयत्न करूँगा। कलम का सिपाही भी लेता आऊँगा—तुम तो कलम बंदूक दोनों ही चलाते हो—सिपाही भी रहे हो तो यदि दुनी को सिपाही बना जा सके तो—

गु०

33

[illegible]
[illegible]
[illegible]

प्रिय बच्चन,

[illegible]

तो 'लियर' और 'हैमलेट' को भी अनूदित कर दो। हिंदी को तुम्हारी अविस्मरणीय भेंट रहेगी।

तुम्हारे प्रस्ताव पर बहुत विचार हुआ पर २३ ता० को आना तो संभव नहीं ही दिखा। तुम ऐसा करना, अजित को या किसी और को—तुम्हारे तो बहुत चेले चाटे वहाँ हैं—हमारी आफिस की गाड़ी लेकर स्टेशन भेज देना। २४ ता० को शाम (रात) को—तुम अपना कार्यक्रम संध्या से ही प्रारंभ कर देना—पहुँचने पर मैं भी १ घंटा उसमें सम्मिलित हो जाऊँगा—मोने में थोड़ी विलम्ब हो जाएगा तो कोई बात नहीं। कार्यक्रम अवश्य रखना। मुख्य पात्र तो तुम्हीं हुए—तुम और तेजी जी—यह कोई नाटक तो है नहीं, दूसरे लोग तुम्हारी भूमिका पर उतरें! हम लोग तो पार्श्वचरों विदूषकों में रहेंगे—सो एक विदूषक देर में भी आए तो उससे मनोरंजन में बाधा नहीं पड़ेगी जबकि मुख्य पात्र स्वयं ही (बक़ौल तुम्हारे ही) विदूषक हो। आफिस की गाड़ी के लिए श्री टंडन जी को फ़ोन करके ठीक गाड़ी के वक्त स्टेशन भेजवा देना—उसमें अपने किसी गण को भी मुझे रिसीव करने भेज देना—नहीं तो दिल्ली स्टेशन पर आफ़िस की गाड़ी खोजने ही में मुझे घंटा भर लग जाएगा।

यह जानकर बड़ा दुःख हुआ कि हिंदी वालों ने तुम्हारे नाटक में सहयोग नहीं दिया—खैर तुम्हारा उच्च का वृहस्पति और चंद्र दशम स्थान में हैं—जहाँ भी, जिस परिस्थिति में भी रहो विजयध्वजा लिए हुए ऊपर उठोगे—समस्त बाधाएं चीर कर। सो दुःखी होने की कोई बात नहीं। नरेन्द्र को मत बुलाना। वहाँ पहुँचने पर तुमसे नाटक के बारे में विस्तारपूर्वक सुनूँगा—चित्र भी देखूँगा। तुम्हारा शायद कोई पार्ट फिर इसमें नहीं रहा। एज यू लाइक इट या ट्वेल्थ नाइट का अनुवाद करो तुम्हें क्लाउन का पार्ट अदा करने का बड़ा अच्छा मौक़ा मिलेगा। ऐतिहासिक नाटकों में तो कास्ट्यूम का झगड़ा रहता है—बहरहाल, कोई ऐसा प्ले हो जिसमें तुम भी और मैं भी अभिनय कर सकें—भले ही विदूषकों का ही क्यों न हो। तेजी जी और अमित के रोल भी बहुत सफल हुए जानकर बड़ा अच्छा लगा। तेजी जी तो सिद्धहस्त अभिनेत्री है ही (तुम्हारी तरह जीवन के मंच पर नहीं!) अमित का भी रुझान उसी ओर रहा है—फिल्मज में जो जाना

चाहता था—अब उसे पता लगा होगा कि उस दिशा में वह कहाँ तक बढ़ सकता है।

मैं तो वहाँ से २६ को ही लौट जाना चाहता—पर एक तो तुम्हारे कारण—दूसरा थकान के कारण भी संभव न हो सकेगा—रात को यात्रा करना मुझे पसंद है नहीं अतः २७ की मेल से ही प्रातः लौटूंगा। यहाँ ३०-३१ को लेखक सम्मेलन है—प्रबन्ध समिति में मेरा भी नाम रख दिया है। वहाँ जो सर्व भाषा कवि सम्मेलन के लिए कविगण आएँगे, उनमें से भी अनेक इसमें भाग ले सकेंगे। संभवतः तुम लोग भी आओ। आयोजन बड़ा एवं अंतःप्रादेशिक स्तर पर हो रहा है—वर्तमान स्थिति में लेखक का दायित्व।

शेष पत्र आने पर, तुम्हें सपरिवार (पिन्ती सहित) बहुत प्यार—विशेषकर तेजी जी को—और तुम्हें भी ?

सप्रेम,

माईदा

३४

इलाहाबाद
१८-१-६३

प्रिय बच्चन,

मैं २४ ता० की शाम को मेल से पहुँचूंगा—आफिस की गाड़ी का प्रबन्ध करवा देना और किसी परिचित को उसमें मुझे रिसीव करने भेज देना। प्रेमचन्द जी की जीवनी अमृत से भिजवा दी है, मिली होगी। अब मुझे लाने की उलझन नहीं। जीवनी के आधे दाम मेरी मेहनत के लिए वहाँ पहुँचने पर मुझे दे देना।

शेष मिलने पर—

सप्रेम,
माईदा

३५

इलाहाबाद
३-२-६३

प्रिय बच्चन,

मैं यहाँ पहुँचते ही बीमार पड़ गया हूँ—यही जुकाम, खाँसी और ज्वर—फ्लू का ही बिरादर लगता है। तुम्हें विस्तार से फिर लिखूँगा—बदन टूट रहा है। तुम्हें, तेजी जी और बच्चों को बहुत प्यार—तुम आजकल घर में सबसे चिढ़े रहते हो, यह ठीक नहीं है—सबसे मधुर व्यवहार रखो, स्वयं सहकर भी—आशा है तुम बुरा नहीं मानोगे। मैं तुम्हें सबके बदले प्यार दूँगा—तुम सबको दो। शांता कहती है बच्चन जब चाहें तब आ सकता है—सो तुम्हीं अब सुविधानुसार आने का निश्चय करना। तुम्हारा स्वास्थ्य अब कैसा है? मेडिकल टेस्ट्स जरूर करवा लो—ब्लड, स्टूल और युरीन का। इलाज तो कहीं भी हो सकता है।

शेष स्वस्थ होने पर—

प्यार,
माईदा

ददा कह रहा है कि गुप्त के यहाँ जन्मपत्रियाँ मिलीं या नहीं—

शांता

३६

इलाहाबाद
१०-२-६३

प्रिय बच्चन,

श्री राकेश जी आपसे अपनी पुस्तक के प्रकाशन के सम्बन्ध में मिलने आ रहे हैं। गत वर्ष भी वह मिले थे, इस बार पाँडुलिपि के साथ आ रहे हैं।

मैंने आज ही चारपाई छोड़ी है, अब शांता बीमार पड़ गई है। फ्लू में रिलैप्स हो गया है। शेष दूसरे पत्र में—

आशा है सपरिवार सानन्द हो।

प्यार—
सुमित्रानंदन पंत

३७

१८/७ बी०के०जी० मार्ग
इलाहाबाद
१७-२-६३

प्रिय बच्चन,

तुम्हारे कार्ड के बाद तुम्हारे पत्र की प्रतीक्षा करता रहा कि डाक्टर ने क्या रिपोर्ट दी, पर तबसे कोई तुम्हारा पत्र ही नहीं है। चिन्ता है कि कहीं अधिक बीमार न पड़ गए हो! शांता का स्वास्थ्य अब ठीक है। तुम्हारी तबियत ठीक नहीं तो तेजी जी से समाचार अपने शीघ्र लिखवा भेजो। आशा है सब कुछ ठीक ही है—कोई विशेष चिन्ताजनक बात नहीं है।

मैं कल-परसों तक तुम्हें हिन्दी समाचारों के सम्बन्ध में अपनी सम्मति भेजूंगा—२४ ता० को वहाँ आना शायद ही सम्भव हो सके। स्वास्थ्य भी सामान्य ही है, यद्यपि अब खाँसी-जुकाम नहीं रहा।

बच्चन, तुम्हारे कमरे में जहाँ मैं अपनी चीज़ें रखता था सम्भव है वहीं-कहीं हेमा आदि की पत्रियाँ मैंने रख दी हों—वे छोटी-छोटी हैं—जरा देख लेना कहीं वहाँ मिलें तो। मुझे बड़ी आशा थी कि शायद श्री गुप्त के यहाँ या तुम्हारी कार में हों, पर तुम लिखते हो श्री गुप्त के यहाँ नहीं मिली।

वहाँ के समाचार लिखना। श्री तेजी जी, अमित और बटी प्रसन्न होंगे। उन्हें मेरा बहुत प्यार देना। गर्मी अब वहाँ भी धीरे-धीरे दिन को अपना अम-

स्कार दिखाने लगी होगी। अभी टंडन जी यहाँ २-१ दिन को आए हुए थे। उन्हें तुम्हारे स्वास्थ्य के बारे में नहीं मालूम था। आशा है गोपेश जी का मामला ठीक ही चल रहा होगा। उन्हें मेरी ओर से याद कर देना।

अपनी स्वास्थ्य की चिन्ता मत करना और रात को कमरे में जो तुमने कहा था उसपर सोचना एकदम बन्द कर दो। जीवन और मृत्यु एक ही हैं। जो इस जीवन मे तुम्हारा पथ प्रदर्शन करता है वह तुमसे पहिले और बाद को भी जीवन का संचालन करता रहेगा और मृत्यु का पथ भी प्रकाशित करता रहेगा। मृत्यु-लोक का सूर्य इस समय प्रच्छन्न प्रतीत होता है, पर है वह सूर्य ही। वहाँ पहुँचने पर यहाँ का सूर्य दृष्टि से छिप जाएगा। वास्तव में जीवन और मृत्युलोक दो नहीं—एक ही है। मुद्रा के दो पक्ष। आशा है तुम खूब प्रसन्न हो।

बहुत प्यार—
साईंदा

३८

१८/७ बी० स्टेनली रोड,
इलाहाबाद
१६-२-६३

प्रिय बच्चन,

कल शाम की डाक से तुम्हारा पत्र मिला, समाचार ज्ञात हुए। मेरा पिछला पत्र जो परसों भेजा था मिला होगा। ठीक है, तुम पूर्णरूपेण विश्राम करो। पत्रों का उत्तर शीघ्र देने की आवश्यकता नहीं। वैसे इस युग में लंग ट्रबल कोई माने नहीं रखता—इसमें कोई चिन्ता करने की आवश्यकता नहीं। हाँ, रेस्ट लेना कुछ समय के लिए आवश्यक हो जाता है। वैसे स्ट्रेप्टोमाइसिटीन न भी लेते तो कोई बात नहीं थी, पर ले रहे हो अच्छा ही है। १०-१५ दिन में पूर्णतः स्वस्थ हो जाओगे। बाई माउथ भी केलशियम की कोई प्रेपरेशन ले लो तो और भी

अच्छा रहेगा जैसे कलजामा—वैसे काफ़ी चीजें ले रहे हो। प्रसन्न रहो, यह सबसे बड़ी दवा इस प्रकार की दुर्बलता के लिए है।

आशा है तेजो जी, अमित और बंटी खूब स्वस्थ और प्रसन्न हैं—उन्हें मेरा बहुत प्यार देना। स्वास्थ्य तो मेरा भी पूर्णरूपेण अभी नहीं संभला है। बाईं ओर पीठ पर भी प्रायः दर्द हो जाता है—शाम को कमजोरी भी अभी हो जाती है—पर संभवतः टेंपरेचर अब नहीं रहता हो—वैसे मैंने इधर लेना छोड़ भी दिया है। फ़्लू के आफ़्टर इफ़ेक्ट्स गले में खराश और खाँसी अभी शेष है। शांता भी धीरे-धीरे सम्भल रही है। बिचारी को आपरेशन के बाद पूरा आराम करने को नहीं मिला—अब प्रेपरेशन सीव हो तो उसे रेस्ट मिले। इधर मेरे यहाँ न माली रहा, न महरी। केवल एक मेड सरवेंट २-३ घंटा सवेरे शाम खाना बना जाती है—उसमें भी रात का खाना शांता ही बनाती है।

तुम हलकी-फुलकी चीज़ें पढ़ा करो—हास्यरस की कहानी वगैरह। और खूब आराम करो और मेरा बहुत सारा प्यार लो—जरूरत हो तो छुट्टी और बढ़ा लो। जैसी डाक्टर की राय हो।

राकेश जी का आग्रह था कि तुम्हारे लिए पत्र दे दूं—नहीं करना सम्भव न था। वैसे तुम स्वयं आजकल अस्वस्थ हो—फिर भी राजपाल एण्ड सन्स जो चाहेंगे करेंगे। पता नहीं मेरी 'हरी बाँसरी' छप गई कि नहीं। अमित से फोन करवाकर मेरे पास भी ४/५ प्रतियाँ भेजवा देना।

शेष फिर—

बहुत-बहुत प्यार—

तुम्हारा ही—
साईंदा

३९

१८/७, बी०के०जी० मार्ग
इलाहाबाद
२०-२-६३

प्रिय बच्चन,

मेरे दोनों ही पत्र मिल गए होंगे। २४ ता० को होने वाली मीटिंग के लिए अपना परामर्श भेज रहा हूँ। यदि तुम मीटिंग में सम्मिलित न हो तो मेरे कमेंट्स आफ़िस से किसी को बुलाकर या अपने पिउन के हाथ डी०जी० के पास मीटिंग के पहिले ही पहुँचा देना। मैंने डाएरेक्ट इसलिए नहीं भेजे कि तुम भी संभवतः देखना चाहो।

आशा है तुम अच्छे हो रहे हो और खूब प्रसन्न हो। पत्रोत्तर शीघ्र देने की जरूरत नहीं। तेजी जी से भी स्वास्थ्य के समाचार भेजवा सकते हो—

बहुत प्यार

साईंदा

४०

१८/७ बी०, स्टेनली रोड,
इलाहाबाद
२५-२-६३

प्रिय बच्चन,

तुम्हारे दोनों पत्र मिल गए। यह जानकर प्रसन्नता हुई कि अब तुम्हें बुखार नहीं है। मेरा एक सुझाव है : वह यह कि इधर कई महीनों से जो

तुम्हारा स्वास्थ्य ठीक नहीं रहा—ज्वरादि नहीं, खाँसी, पीठ दर्द आदि—और ठीक न हो सकने की बात हुई है—ऐसी हालत में मेरी समझ में तुम्हें अभी आफिस का काम किसी तरह भी करने के लिए नहीं सोचना चाहिए। और पूरे विश्राम से ही क्यों न हो एक महीने—सवा मास की छुट्टी और लेकर कम्प्लीट रेस्ट लेना चाहिए—कम्प्लीट रेस्ट का अर्थ फिजिकल रेस्ट—नार्मल लाइफ नहीं करनी चाहिए। क्योंकि शरीर के कुछ आवश्यक नियम होते हैं, उन अनिवार्य नियमों को बीमारी की दशा में किस में उल्लंघन करना हानिकारक है। मान लो टैम्परेचर या कमजोरी फिर रिलाप्स हो गई तब? तुम्हें दुबारा इंजेक्शन्स लेने पड़ेंगे और तब और भी अधिक समय तक रेस्ट करना पड़ेगा। ऐसी दशा में मेरी समझ में तुम्हें अवश्य छुट्टी बढ़ा लेनी चाहिए। स्ट्रेप्टोमाइसीन आदि के बाद रेस्ट एब्सोल्यूटली नेसेसरी होता है। इस बीच तुम सम्पूर्णतया शारीरिक विश्राम, २५% मानसिक कार्य, और साथ में कालजाना (कैल्सियम) दो टेबलेट्स पर डे आफ्टर मील्ज़, आस्ट की कैप्सूल्ज़ और हैलीवर आयल या सेवनसीज़ कैप्सूल्ज़ ट्वाइस डेली और पौष्टिक खाना—२ अंडे सवेरे, १ अंडा आफ्टरनून में—पर्याप्त दूध—थोड़ी मक्खन मलाई,—हल्की चाय—नो एक्सरसाइज़—फल—विशेषतः केला—अवश्य लो। इससे तुम्हारे रिज़र्व में शक्ति स्टोर हो जाएगी और अप्रैल से तुम दफ्तर जाओगे तो थकान आदि नहीं महसूस होगी—इससे क्या लाभ कि तुम अभी आफिस ज्वाइन कर लो और घर आकर फिर चारपाई पर लेट कर थकान दूर करो। यह ठीक नहीं है—बल संचय पर्याप्त मात्रा में कर लो और वह अकेले दवा और पौष्टिक खाद्य से नहीं होता। इस प्रकार की बीमारी में रेस्ट इज ७५% क्योर एंड नेसिसेटी—अतः तुम मेरे लिखे पर अवश्य गंभीरता से विचार कर लो—महादेवी जी भी तुम्हारे लिए चिंतित हैं।—अपना निश्चय शीघ्र लिखो—

कल न्यूज बुलेटिन की भाषा समिति की मीटिंग हो गई होगी। उसमें क्या हुआ? मेरे कमेंट्स समय पर पहुँच गए थे कि नहीं? तुमने उस कार्य से छुट्टी ले ली कि नहीं? संक्षेप में लिखना।

मेरा स्वास्थ्य ठीक तो है पर सामान्य ही चल रहा है—मैं भी आजकल रेस्ट कर रहा हूँ। श्री इलाचंद्र जोशी जी ने त्यागपत्र दे दिया है। कल लखनऊ

के एस०डी० आ रहे हैं—उनसे बातें करके दफ्तर जाऊँगा। आशा है तुम खूब प्रसन्न हो—और बातों का उत्तर अगले पत्र में दूँगा—तुम्हें, तेजी जी अमित और अजित को बहुत प्यार। हल्का-फुलका साहित्य पढ़ो—

सा‌ईंदा

'हरी बाँसुरी सुनहरी टेर' में छापे की बड़ी त्रुटियाँ रह गई हैं—

सु०

४१

इलाहाबाद
७-३-६३

प्रिय बच्चन,

तुम्हारा पत्र कभी से नहीं मिला। मेरे पिछले पत्र मिल गए होंगे। क्या तुमने दफ्तर जाने का काम शुरू कर दिया ? कृपया शीघ्र अपने समाचार दो, चिन्ता है। अमित-अजित प्रसन्न होंगे। अमित के समाचार भी लिखो। तेजी जी को और तुम्हें बहुत प्यार—शीघ्र उत्तर की प्रतीक्षा में—

सा‌ईंदा

४२

इलाहाबाद
१२-३-६३

प्रिय बच्चन,

तुम्हारा पत्र मिला, कुशल समाचार ज्ञात हुए। तुम्हारी छुट्टी नहीं है और तुमने आफ़िस जॉइन कर लिया—खूब होशियारी से रहना। उसके बाद घर

आकर पूर्ण विश्राम लेना। तुम्हें सपरिवार होली की बहुत-बहुत बधाई और शुभकामनाएँ—अनेकों रंगों की बालटियाँ और पिचकारियाँ। तुम्हारे पिछले पत्र तो मिले नहीं, हाँ मीटिंग के मिनिट्स दफ़्तर से आ गए हैं, उनसे समाचार मालूम हुए। न्यूज़ बुलेटिन बारी-बारी से मेम्बरों के पास जाएँ—यह प्रस्ताव दफ़्तर की दृष्टि से व्यावहारिक नहीं—क्योंकि विभिन्न सदस्यों के दृष्टिकोणों मे मतभेद हो सकता है—तो ट्रांस्लेटर्ज किसे फालो करेंगे? इसलिए फ़ाइनल निर्णय तो एक ही से आना चाहिए मेरी समझ में। तेजी जी के इनफ़्लेमेशन आफ़ दी ब्लैडर के बारे में पूछा था, डाक्टर कहता था कोई सीरियस चीज नही है—फिर भी रेस्ट और ट्रीटमेंट तो होना ही चाहिए। क्या अभी अमित का कहीं कुछ नहीं हुआ? इंटरव्यू के लिए बुलाया गया था। मेरे यहाँ तो आजकल बड़ी अव्यवस्था है—नौकर कोई नहीं, जो थे उन्हें उनके घर में पाक्स हो जाने के कारण छुट्टी देनी पड़ी। इधर कुछ दिनों से बब्बू (मेरा भांजा) भी आया हुआ है—आज लखनऊ जाएगा। शांता ठीक ही है, काम अधिक होने से थक जाती है बिचारी। अब जब मैं प्रेगरेशन लीव मिलेगी तब आराम कर सकेगी। आपरेशन के बाद काफ़ी कमज़ोर हो गई है। पिछले हफ़्ते २ दिन को बरेली गई थी, वहाँ मामाजी आजकल हैं। नवीन समाचार तो बहुत सामान्य हैं। धर्मयुग का होलिकांक तुमने देखा होगा, उसमें मेरी एक यहाँ से प्रसारित कविता है। नई-पुरानी। एक सुरेश सिंह जी का संस्मरण है, काला कांकर की होली का वह भी देखा होगा। शांता की पुस्तक राधाकृष्णन का विश्वदर्शन छप गया है—एक प्रति तुम्हारी सुरक्षित है।

मेरे 'गीवर्ण' का नया संस्करण ज्ञानपीठ से निकल रहा है—उसमें 'दिग्विजय' नामक एक और काव्य रूपक मैंने इस बार जोड़ दिया है, यह गगारिन की स्पेस फ्लाइट पर लिखा था—उन्हीं दिनों से दिल्ली से प्रसारित भी हुआ था, शायद तुमने सुना हो। अपने स्वास्थ्य का आगे यत्न करना—डींग मारने के दिन गए!

तुम सब को बहुत प्यार—

साईंदा

सियाराम जी के निधन से मैथिली बाबू बड़े दुखी हैं—उनके दो पत्र आ चुके हैं। क्या किया जाए ? संस्मरण लिखने का सुझाव तुम्हारा अच्छा है—शुगर कम होने पर अवश्य प्रयत्न करूँगा। तुम्हारा स्वास्थ्य ठीक हो गया है तो छोटे-मोटे लिरिक्स लिख सकते हो—संस्मरण इत्यादि लंबी चीज अभी हाथ में न लेना और रात को काम मत करना। १० बजे चारपाई में चले जाना—सवेरे भी ५॥-६ से पहिले अभी मत उठना। गर्मी भर यही कार्यक्रम रखना। क्योंकि रेस्ट एवसोल्यूटली नेसेसरी है।

शेष फिर—

बहुत प्यार,
साईंदा

४५

१८/७, बी० के०जी० मार्ग,
इलाहाबाद
१६-४-६३

प्रिय बच्चन,

तुम्हारा पत्र कल मिला। मेरा २८ ता० का पत्र तुम्हें नहीं मिला, यह मैं तुम्हारे पिछले ही पत्र से समझ गया था। तुमने लिखा है कि इधर तो तुमने प्रशंसा का कोई कार्य किया नहीं, हाँ, पिछले मेरे कामों के आधार पर आपने प्रशंसा की हो तो दूसरी बात है। मैं पूछता हूँ वे पिछले कौन-से कार्य हैं जो आपने किए हैं और जिन्हें प्रशंसनीय कहा जाए ? प्रशंसाएँ तो सब कल्पित थीं—तुम्हारे मन की कुंठा मिटाने के लिए। अब भी लिख सकता हूँ और अवश्य लिखूँगा पर तुम्हारे महत्वपूर्ण कार्यों के आधार पर नहीं। खैर—

आज सवेरे से रूसी भाई आए हुए हैं, जिनमें एक लेनिन प्राइज विनर भी है। मेरे यहाँ आजकल ठीक नौकर, माली आदि न होने से बड़ी अव्यवस्था है—हैं तो दो आदमी पर दोनों बेकाम के हैं। भारतवर्ष में तो केम्ब्रिज के डी०

मित्र० आसानी से मिल जाते हैं पर नौकर, जो काम का हो, उसका मिलना दिन-पर-दिन कठिन होता जा रहा है। अब तक दिल्ली में हो खुशी मना लो—छोटे-मोटे नगरों में और इलाहाबाद से शहरों में भी जीवन व्यतीत करना बड़ा दुष्कर हो गया है।

पहाड़ जाने का कार्यक्रम तो तुमने एकदम बंद ही कर दिया है—मुझे तो जाना ही वहाँ पड़ेगा, प्रयाग तो आग की भट्टी है—दिल्ली आने के लिए तुमने आमंत्रित किया नहीं है—बस लान पर रात को सोने में मेरी भूली भटकी याद तुम्हारे लिए पर्याप्त है। भतीजी की शादी की तिथि वे लोग तय अभी तक नहीं कर पाए हैं—लड़का शायद नेफ़ा में है आजकल—छुट्टी का प्रश्न होगा। मेरा वहाँ आने का कार्यक्रम बना तो तुम्हें सूचित करूँगा। तुम्हारा स्वास्थ्य अब बिल्कुल अच्छा है यह जानकर प्रसन्नता हुई। बाबा जी के दर्शन करने का तो मेरा भी जी करता है। पर अब गरम बहुत हो गया है—यात्रा, उसमें भी लम्बी यात्रा करना कष्टकर प्रतीत होती है।

अमित चित्रकारी सीख रहा है बड़ा अच्छा हुआ। अबके जब दिल्ली आऊँगा तो देखूँगा। अमित बेटी को प्यार देना—तेजी जी को भी।

तुम्हारे तो अब काम करने के दिन आ रहे हैं। गर्मी में दो ही प्रसन्न रहते हैं—एक तुम, दूसरा तुम्हें मालूम ही है।

आनन्दमयी माँ को देखे एक साल से भी अधिक हो गया, अबके माँ ने प्रयाग वासियों को कृतार्थ नहीं किया। मेरे कमरे में उनका चित्र है उसीसे सन्तोष कर लेता हूँ। आजकल मेरे कमरे में न पंखा है, न एयर कंडिशनर—एक को बाल बेयरिंग बदलने के लिए भेजा है, दूसरे को आएलिंग के लिए—इसलिए एक उषा टेबल फ़ेन से काम चला रहा हूँ। अभी ४ बजने को है, खूब गर्मी है। ४॥ बजे से रूसी भाइयों के अभिवादन आदि में सम्मिलित होना है—पहिले महादेवी जी के यहाँ चाय, फिर संगीत समिति में लेखकवर्ग द्वारा स्वागत—तदुपरि सांस्कृतिक कार्यक्रम—६ बजे तक छुट्टी मिलेगी। १ बजे वाइस-चाँसलर साहब ने लंच पर बुलाया था, उसमें नहीं जा सका। हिंदी भाषा विधेयक के कारण दिल्ली में क्या २ हो रहा है, लिखना। सुना, सेठ जी इस्तीफ़ा देने वाले हैं।

सा० हिन्दुस्तान के एक संवाददाता यहाँ इस सिलसिले में साहित्यकारों का मत इकट्ठा करने आए मेरे पास भी आए थे।

और यहाँ के नवीन समाचार लिखना। गोपाल सिंह नेपाली भी चल बसे। नरेन्द्र क्या अमरीका जा रहा है? फ़ोन पर पूछकर कृपया लिखना। वह तो पत्र भला आदमी लिखता नहीं, क्या किया जाए!

शेष फिर—

प्यार—
साईंदत

सुप्रेम पत्र लिखा करो—आइडन्ट पेन्ट्री सा लगता है—प्यार भेजा करो—
सु०

४६

इलाहाबाद
२८-४-६३

प्रिय बच्चन,

तुम्हारा पत्र मिल गया था। इधर मैं एक हलकी डुबकी लगा गया था, अब प्रायः ठीक ही हूँ। चेस्ट में बड़ा पेन रहा, करीब २ हार्ट अटैक की स्थिति आने को थी। कम्पलीट रेस्ट लेने से अब बेहतर हूँ, हृदय के बारे में अब डर उतना नहीं। अब भी एक रिक्तता का तो भीतर अनुभव होता ही है—साँस भी गहरी लेने में सफोकेशन सा होने लगता है, पर स्थिति पहिले से अच्छी है—गर्मी भी यहाँ बहुत है, आशा है पूर्ण विश्राम करने से जल्दी ही ठीक हो जाऊँगा। तुम बाबा के दर्शन कर आए, यह बड़ा अच्छा हुआ, पर जितना स्ट्रेन तुमने लिया वह किसी तरह भी ठीक नहीं। अब पिछले दिन गए, तुम्हें अपने से ड़ नहीं करना चाहिए। मेरा सा स्वास्थ्य हो जाएगा। तुम्हारी भूमिका

पहाड़ जाते ही अवश्य लिख डालूंगा। इधर सोचने-विचारने से भी दिल में दबाव का अनुभव होता है।

यद्यपि तुमने मुझे खुले मन से गर्मी अपने साथ बिताने के लिए आमंत्रित किया है पर अगर नैनीताल में प्रबंध नहीं हो सका तो २०-२५ मई तक १॥ महीने के लिए मैं दिल्ली ही आ जाऊँगा। वहाँ पहुँचने पर तेजी जी देखभाल कर ही लेंगी। अमित की चित्रकला से काफी मनोरंजन रहेगा। इधर १ दिन को पंडित जी आए थे सरोजिनी नायडू अस्पताल का शिलान्यास करने, मुझे भी डा० सामन ने निमंत्रित किया था पर स्वास्थ्य ठीक न होने के कारण मैं नहीं जा सका। तुम वहाँ से ५८ में रिटायर होने के बाद फिर प्रयाग विश्वविद्यालय में ४ वर्षों के लिए आ जाओ—इस बीच यहीं—विशेषतः देहरादून में मकान बना लेना, एक कमरा मेरे लिए भी—बुढ़ापा साथ ही कटेगा। अपने हिस्से के बनाने के पैसे भी मैं स्वयं दे दूंगा। बड़ी रकम हुई तो शुरू में तुमसे उधार लेकर धीरे २ चुका दूंगा।

शांता अब पहाड़ ही जाने के बाद सँभलेगी। इधर सर्वेंट प्राब्लम भी प्रयाग में बढ़ गया है। आजकल उसके इनविजिलेशनज़ चल रहे हैं, फिर कापियाँ जाँचकर वह चली जाएगी।

तेजी जी के क्या समाचार हैं? तुमने पिछले पत्र में उनके बारे में नहीं लिखा—उन्हें मेरा बहुत प्यार देना। तुम्हें मैंने पिछले पत्र में लिखा था कि सप्रेम बड़ा औपचारिक और कृत्रिम लगता है—प्यार लिखना चाहिए, तुमने फिर सप्रेम ही लिखा है। मेरा 'सौवर्ण' अभी नहीं आया, आने पर तुम्हारे पास भेजूंगा। नवीन समाचार यहाँ सामान्य हैं। आशा है तुम खूब स्वस्थ और प्रसन्न हो। दवा चल रही होगी। गर्मी में क्या छुट्टी लोगे या पिछले साल की तरह आफ़िस जाओगे? मेरा वहाँ आना प्रायः निश्चित ही समझो—अब चाहे तुम झूठमूठ आमंत्रित करने के लिए कितना ही मन में पछताओ। बहुत प्यार,

[illegible] साईंदा

४७

१८/७, बी. के०जी० मार्ग,
इलाहाबाद
७-५-६१

प्रिय बच्चन,

अंग्रेजी सहभाषा हो गई है इसलिए अनजाने ही घर का पता अंग्रेजी में लिख गया—तुम्हें और तुम्हारी सरकार को बधाई। मैं अब प्रायः ठीक हूँ, पर अभी सावधानी बरतने को कहा है। तुमने अपनी स्टडी में भी कूलर लगा लिया है यह अच्छा हुआ। मैं तो तेजी जी के साथ रहूँगा, वहीं मुझे अच्छा लगेगा—अकेले मैं स्टडी में क्या करूँगा? स्टडी तो गर्मी में कर नहीं सकता, न शायद डाक्टर ही अभी काम करने को कहें। लेकिन तुमने वहाँ भी लगा लिया अच्छा हुआ। मैं, बंटी, तेजी जी उन्हीं के कमरे में रहेंगे। रात को अवश्य इस नए कूलर से सुविधा हो जाएगी।

घर के बारे में इतना सोचने की क्या जरूरत? वहाँ अपने किसी मित्र से कहकर एक प्लाट खरीदवा लो अच्छी जगह—उसी में किसी कनट्रेक्टर से घर भी बनवा लो। तुम्हारे मित्र तो देश-विदेश में सर्वत्र फैले हुए हैं। कैडमस ने ड्रेगन के दांत बोकर सिपाहियों की फ़सल उगाई थी, तुमने अक्ल और सद्भाव के दांत बोकर मित्रों की फ़सल पैदा की है। अमित के चित्र देखने को बहुत उत्सुक हूँ। वह ला में इनटरेस्टेड हो तो उसमें भर्ती अगले वर्ष से करा दो। अल्मोड़े से मुन्ना की शादी के संवाद आने पर—कि कौन सी तिथि निश्चित हुई है—तब मैं कहीं आने-जाने का प्रोग्राम बनाऊँ। वैसे यहाँ अब बहुत गर्मी पड़ने लगी है। कभी-कभी तुम्हारा पत्र आकर कूलर का काम दे जाता है। मैं शीघ्र उत्तर नहीं दे सका इसका कारण स्वास्थ्य नहीं, लोगों की भीड़ है। इधर बहुत लोग आए, आज शाम भी आएँगे। कुछ तो मेरे मनोरंजन के लिए, कुछ यों ही मिलने मिलाने। राजस्थानी युवकों का कार्यक्रम यहाँ रहा। अमृत

मुझे भी अपनी गाड़ी पर बिठाकर ले गया था। हममें से कुछ ने २५) २५) उनको भेंट किए। विचारे ग्वालियर में अर्थाभाव से भूखे मरे। जैसा हमें विदेश में करना पड़ा। विचारों ने बड़ा अच्छा उदाहरण सबके सामने रखा। देश के लिए भी एक लक्ष से अधिक मुद्रा संग्रह किए। मैं युवक होता तो यही काम करता—देश में भ्रमण कर जनता एवं नगरों में सद्भाव पैदा करता—एका बढ़ाता। जो काम मध्य युगों में संत कर गए हैं उसी को साहित्यिकों को करना है, हम संतों के पदचिह्नों के उपासक इस बात में है। हम तुम तो बुड्ढे हो गए हैं, हमारे बच्चों को यह काम करना है, ये नवयुवक ही हमारे बच्चे हैं। कभी मचल उठते हैं, द्रोह को ही विद्रोह समझ लेते है, पर इससे विचलित नहीं होना चाहिए। सद्भाव मंडलों की आज देश को बड़ी आवश्यकता है। मेरा लोकायन का स्वप्न पूरा हो सकता तो मैं समस्त देश में सांस्कृतिक ऐक्य तथा युग अनुरूप जागरण के लिए ऐसे ही छात्र-छात्राओं के सद्भाव मण्डल भेजता—एक लहर के बाद दूसरी लहर की तरह—देश के जनमन का प्रक्षालन करने, उसे सँजोने-सँवारने के लिए—विशेषतः जनपदों में जनता जनार्दन में जागृति का शंख फूँकने के लिए—जब से उन्हें 'अजगर करे न चाकरी' सिखाया गया है तबसे हाथ बाँधे बैठे हैं। स्वराज्य मिला, इतनी बड़ी घटना भी अजगर को नहीं जगा सकी, बाँसुरी से ही वह हिले-डुलेगा—निरंतर वंशी-ध्वनी, निरंतर संस्कृति का मन्त्र, जागरण का गान उनके कानों में पड़े—पथराए हुए मन में नए अंकुर फूट आएँ—प्राणों में देश के नयी हरियाली लहलहाए। पर जिस प्रकार खुदा ने गंजे को पंजे नहीं दिए उस प्रकार मुझे गरुड़ के पंख नहीं दिए कि मैं सुदूर तक उड़ सकता। उस हेलीकाप्टर में तुम्हें भी बिठाकर घुमाता। लेकिन ?— तुम्हारा स्वास्थ्य अच्छा होगा। तेजी जी कैसी है—उनके बारे में तुमने कुछ नहीं लिखा है। उन्हें मेरा बहुत प्यार देना—बच्चों को और तुम्हें भी (बच्चन को भी)।

बहुत प्यार,
सुमित्रानंदन

पु० शांता आजकल कापियों में डूबी हुई है। गर्मी से परेशान है। अक्सर उनपर लदकर ठंडे पत्तों की हवा करते हैं—खाते हैं और चुटकी भी काट जाते हैं।

४८

इलाहाबाद
१८-५-६३

प्रिय बच्चन,

पिछले सप्ताह तुम्हारा पत्र न मिलने से चिन्ता थी। रजन के पिता की मृत्यु का समाचार सुन दुःख हुआ, उसे मेरी ओर से भी सांत्वना भेज देना, मुझे पता नहीं मालूम। डा० [illegible] यहाँ नहीं, नैनीताल चली गई हैं, अतः तुम्हीं भेज देना—मैं रजन का असली नाम भी भूल गया हूँ—शायद अशोक—के साथ कुछ मिलाकर बनता है।

तुमने सुन्दर क्या सजाया, मेरा कार्यक्रम ही बदल गया। अभी १४ ता० को भाभी जी का पत्र आया है कि मेरी भतीजी की शादी १ जून को तै हुई है। पहिले ये लोग यहाँ के भाई को जब नेफा (Nefa) में छुट्टी मिलेगी तब अक्तूबर तक करेंगे—अब १ और ५ जून की तारीख दी है। भाभी जी ने १ जून निश्चित की है। अतः मैं तो कन्यादाता हुआ, स्वीकार है। आजकल उसी की तैयारी में लगा हूँ। अब पहाड़ जाकर भगवान के कृपर को छोड़कर दिल्ली आना संभव नहीं लगता। सो आप निश्चिन्त रहें—अपने कमरे में दो चारपाई लगाकर लोटपोट करें। माता जी के दर्शन करने को अवश्य बड़ा जी करता है पर कब होंगे, भगवान ही जानें। तुमने इस बार मेरा प्रणाम शायद नहीं कहा।

टाइपराइटर के बारे में पिछले पत्र में लिखना भूल गया। अब तो १९६३ में तुम मेरे ही पास रहने दो—'६४ के शुरू में तुम्हारे पास पहुँच जाएगा—बंटी तब तक किराए की मशीन में सीख ले। किराया आधा तुम आधा मैं भर दूँगा। वैसे अनिवार्य आवश्यकता हो तो यहाँ किसी को लिख दो वह तुम्हारे पास पहुँचा देगा। मैं तो २४ ता० को यहाँ से अल्मोड़ा जाऊँगा—वहाँ भी [illegible] करनी है—भाभी जी क्या कर सकती हैं? तुम्हारी एक लड़की होती

तो उसकी शादी भी बड़ी धूमधाम से करते। अब भी बहुत देर नहीं हुई। और क्या लिखूं ? सब कार्यक्रम उलट-पलट गया है। गर्मी भी यहाँ बहुत है। स्वास्थ्य भी बहुत अच्छा नहीं। वैसे बुरा भी नहीं। अमित-अजित को बहुत प्यार देना। तेजी जी खूब प्रसन्न होंगी—क्या बताएँ अबके उनका साथ नहीं बदा था। तुम देहरादून में अगले साल तक घर बना लो तो बड़ा अच्छा रहे—जब तक तुम दिल्ली में फँसे हो मैं वहाँ रहकर उसकी देखभाल करूँगा। तुम्हारे हैडमाली की हैसियत से बाग भी खूब अच्छा लगाऊँगा। तेजी जी गार्डन सुपरिटेंडेंट हुई ही। तुम क्या जून में विदेश जा रहे हो ? तेजी जी को भी ले जाना। मेरा अल्मोड़े का पता केयर आफ श्री एम०डी० जोशी, रिटायर्ड एस०पी०, कृष्णकुञ्ज रानीधारा, अल्मोड़ा (यू०पी० हिल्ज) । हो सके तो तुरत उत्तर देना २२-२३ तक यहीं पहुँच जाएगा। टाइपराइटर के लिए जो निश्चित करो लिखना। बंटी बुढ़ापे में मेरी सेवा करेगा—तुम अमित की सेवा करना, उसे जरूरत रहेगी। और क्या लिखूं ? अब तुम्हें २५ मई से बहुत अच्छी दशा आ रही है। बंटी के जन्मदिवस की बहुत शुभ कामनाएँ—प्यार और आशीर्वाद। मेरे जन्म दिन की दावत तुम मेरे घर में करना—तेजी जी से कहना वै करेंगी—तुम सब लोग आइसक्रीम खाना। सिर्फ बिल मेरे नाम में मत चढ़ाना—नहीं तो तुम्हारी खुशी ही क्या हुई—अच्छा तुम्हें, तेजी जी को बहुत प्यार—

साईंदा

४९

इलाहाबाद
१६-५-६३

प्रिय बच्चन,

तुम्हारा कार्ड भी मिला। पिछले पत्र का उत्तर दे चुका हूँ। मोहन लाल गुप्त की पैरोडी पसंद आई "नेता करै न चाकरी, मन्त्री करै न काम"—पर

मलूक दास के मूल दोहे का जो अर्थ तुमने लगाया वह मुझे ठीक नहीं जँचा। मुझे भी एक दोहा लिखने की प्रेरणा हुई है :

> बच्चन करता चाकरी, तेजी करती काम,
> सुहृद पंत कहते तभी सबके दाता राम।

तभी का अर्थ है अतः। जो काम करता है अथवा जो काम नहीं करता—दोनों के भीतर से राम काम करता है। संत का यही अभिप्राय होगा, व्यंग करना नहीं। दाता का हम संकुचित अर्थ न लें।

कल मेरा जन्म-दिन है। पहाड़ जाने के पहिले यहीं तुम्हारा एक पत्र पाने की आशा है। अल्मोड़ा पहुँचने के पूर्व शायद मैं दो-एक दिन नैनीताल में रहूँ। अब वहीं से लिखूँगा।

बच्चों को, तुम्हें और तेजी जी को बहुत प्यार—

तुम्हारा,
[illegible]

५०

[illegible] कुंज, रानीधारा,
अल्मोड़ा
११-५-५३

सकूँगा। अबके मुझे स्वास्थ्य बना लेना है। बड़ी कमजोरी महसूस होती है। मैं मा० मरकार की एडवाइजरी बोर्ड (हिंदी) का सदस्य बन गया हूँ। कल ही कृपलानी जी के पत्र से ज्ञात हुआ।

श्री टण्डन जी को अगस्त के बाद कार्यसमापन का नोटिस दे दिया गया है, यह बुरा हुआ। तुम चीफ प्रोड्यूसर बन जाओ तो बड़ा अच्छा है, पर तुम शायद ही स्वीकार करो।

यहाँ मौसम बड़ा अच्छा है। इधर तो शादी के काम में जुटा हूँ इसलिए बड़ा पत्र नहीं दे सकता, अवकाश पाने पर लिखूँगा। तुम्हारे संस्मरण "कादम्बिनी" में धारावाहिक रूप से निकलेंगे यह जानकर प्रसन्नता हुई। इस प्रकार जल्दी पूरे भी हो जाएँगे। तुमने लिखना शुरू कर दिया हो तो किंग लियर और हैमलेट को भी पूरा कर डालो—हिंदी को तुम्हारी महत्वपूर्ण देन रहेगी। अपने लिखने से समय निकालकर अवश्य यह काम कर डालो। टैंपेस्ट एण्ड मिड समर नाइट्स ड्रीम भी। स्वास्थ्य का अवश्य ध्यान रखना। घुड़दौड़ मत लगाना।

तेजी जी, अमित, अजित और तुम्हें बहुत प्यार—अबके तेजी जी के साथ से वंचित रहा, इसका दुःख है।

नवीन समाचार लिखना—शेष समय मिलने पर—

तुम्हें बहुत-बहुत प्यार—

तुम्हारा ही,
सुमित्रानंदन

५१

रानीखेत
१७-६-६३

प्रिय बच्चन,

तुम्हारा ५ ता० का पत्र मुझे अल्मोड़े में मिल गया था पर मैं तुम्हें शीघ्र उत्तर नहीं दे सका। शादी के बाद कुछ थकान भी आ गई थी। फिर वहाँ सांस्कृतिक

सप्ताह भी अल्मोड़े में था—आजकल रानीखेत में आ रहा है, १४ को मैं यहाँ आ गया था—कल तक नैनीताल ३-४ दिन को जाऊँगा, शांता की बड़ी बहिन से मिलने—इला की माता जी—शांता भी वहीं है आजकल—हो सका तो २-३ दिन के लिए रामगढ़ भी चला जाऊँगा, महादेवी जी का आग्रह है। तुम अल्मोड़े के पते पर ही पत्र देना। अमित, अजित से सम्भवतः नैनीताल में भेंट हो सके। तुम्हारी भूमिका २५-२६ तक अल्मोड़ा लौटने पर लिखूँगा। मैं सम्भवतः प्रयाग ८-१० जुलाई तक पहुँचूँ, अभी गर्मी वहाँ बहुत है। तुम्हारे चीफ प्रोड्यूसर होने के बारे में आगे क्या प्रगति हुई है? टंडन जी का तो मुझे भी बहुत ही दुःख है, विचित्र है। अब "सौमित्र" तो देखो तुम्हारे ही यहाँ धरना देकर लिखा जायगा। अभी तो उपन्यास ही जहाँ का तहाँ पड़ा है। अब के जो गर्मी के आगम में मुझे छोटा-मोटा हार्ट अटेक प्रयाग में हुआ उससे कुछ अस्थिरतर ढीला हो गया है। जल्दी थक जाता हूँ। वैसे पहाड़ की हवा ने कुछ लाभ पहुँचाया तो दूसरी बात है। अभी तो विशेष लाभ नहीं जान पड़ता। यहाँ पानी बरसने के समाचार पत्रों द्वारा मिले। आशा है मौसम ठीक ही होगा। तुम्हारे नेपाल जाने का क्या हुआ? वहाँ के नवीन समाचार लिखना। पहाड़ में जी बड़ा ऊबता है—इससे—उससे मिलना मुझे सूट भी नहीं करता।

वैसे मेरा स्वास्थ्य ठीक ही है। श्री शिवदत्त उपाध्याय जी भी मिले थे। अब शायद दिल्ली पहुँच गए हों।

श्री तेजी जी प्रसन्न होंगी—उनसे मेरा सप्रेम नमस्ते कहना—

शेष फिर—

तुम सब को बहुत प्यार—

साईंदा

५२

कृष्ण कुंज, रानीधारा,
अल्मोड़ा
३०-६-६३

[प्रि]य बच्चन,

तुम्हारा २० ता० का कार्ड और १६ ता० का अन्तर्देशीय मुझे २८ ता० [क]ो अल्मोड़ा लौटने पर मिले—मैं इस बीच भ्रमण करता रहा। अधिकतर तो [र]ानीखेत ही में रहा, वहाँ अनेक मित्र लोग मिल गए थे। मौसम भी बड़ा अच्छा [थ]ा। यहाँ पहुँचने पर तुम्हारे पत्र से तुम्हारी नेपाल यात्रा के समाचार मिले। [त]ुम उसपर एक लेख लिख रहे हो यह जानकर प्रसन्नता हुई। उससे तुम्हारे मन [क]ी प्रतिक्रिया का पता चलेगा। मुझे वैसे २० ता० जुलाई को दिल्ली आने का [ब]ुलावा आया है। मैं चाहता हूँ मीटिंग प्रथम सप्ताह अगस्त को स्थगित हो जाय, [न]हीं हुई तो मैं २० की मीटिंग के लिए दिल्ली आऊँगा। तुम्हारी भूमिका भी [ल]िये आऊँगा। कल से लिखना शुरू करूँगा, अधिक तो जोड़ना है नहीं—फिर [भ]ी, इधर-उधर ठीक करना है। यह मीटिंग हिंदीतर प्रांतों के लिए हिंदी पाठों [क]ी योजना सम्बन्धी है। यहाँ पानी बहुत बरस रहा है, इलाहाबाद में ज्ञात हुआ उधर तो गर्मी पड़ी नहीं—अब अपने पूरे जोर पर है—इसलिए मैं सोच रहा हूँ १० ता० जुलाई यहाँ से चलकर ११ ता० जुलाई वहाँ पहुँचूँ—तो इतना गर्मी में बच जाऊँगा। पानी तो नैनीताल में भी इतना अधिक बरसा कि वहाँ का सीज़न ही समाप्त हो गया—लोग होटल छोड़कर जाने लगे थे। बंटी काश्मीर की हवा खा रहा होगा, यह अच्छा ही हुआ। अमित अपने वक्त में नौकर हो जाएगा—अभी ला में लगा दो। अभी नौकरी के लिए है भी बिचारा छोटा—ला का ज्ञान होना इस युग में लाभकर ही होता है, नहीं तो तुम्हारी मेरी तरह आदमी डर-पोक हो जाता है। मैं तो केवल डरपोक ही हूँ—तुम बाहर से अपने को बहादुर दिखाते हो और भीतर हनूमान चालीसा का पाठ करने वाले ठहरे। खैर, ये बातें

२-१ दिन को आए। तुम्हारा स्वास्थ्य अब ठीक ही होगा—बहुत दौड़धूप करना छोड़ो। अब "युक्ताहार विहारस्त" आवश्यक हो गया है। युक्त विश्राम भी।

मैं २-४ दिन में ठीक हो जाऊंगा—

शेष फिर—बहुत प्यार—

सुमित्रानंदन

५४

१८/७, बी०के०जी० मार्ग,
इलाहाबाद
२६-७-६३

प्रिय बच्चन,

तुम्हारा पत्र आज प्रातः मिला। मेरा पिछला पत्र लिखने के बाद १-२ दिन शायद टेबल पर ही पड़ा रहा, इसलिए वहां देर से पहुंचा। गर्मी तो यहां भी बहुत है। १३-१४ ता० को १० इंच के करीब पानी बरसा था तब से बादल ही नजर नहीं आते—न जाने किस कालिदास के संदेश वाहक बनकर किधर चले गए हैं।

नरेन्द्र तो यहां आया नहीं। श्री रामचन्द्र टंडन जी ने भी कहा था कि १४ को अभिनंदन के बाद यहां आएगा पर संभवतः सुशीला बेन को लेकर बम्बई चला गया हो—या दिल्ली लौट गया हो—आज उसे भी लिख रहा हूं। मेरे हाथ में इधर गुलाब के कांटे के लग जाने के कारण बड़ा कष्ट रहा—अब आज से ठीक है। दीमक लग गई थी उसे हटाने में दाएं हाथ में कांटा गड़ गया। हाथ ही का कांटा इतना दर्द करता है तो तुम्हारे तो दिल में कांटा धुभ गया है, उसमें कितना दर्द होता होगा! तुम्हारी जीवनी तो अभी तक 'कल्पना' में देखने को मिली नहीं—अब दो-एक दिन में राव साहब के यहां से लाकर पढ़ूंगा—मेरे पास 'कल्पना' नहीं आती। बच्चन, कुंवर तेज बहादुर कक्का हृद-

गति रुक जाने के कारण ३-४ दिन हुए सहसा चल बसे ! राव साहब और उमा जी बड़ी दुखी हैं—अनन्य मैत्री थी। तुम्हें भी बुरा लगेगा ! मैं भी अंतिम दर्शनों को एडल्फी गया था।

तुम्हारी भूमिका अगस्त में अपने ही साथ लेता आऊँगा। सच बात यह है कि बकौल इलाचंद्र जोशी जी के समय चक्र कुछ ऐसा चल रहा है कि किसी काम के लिए अवकाश ही नहीं मिलता। कभी बीमारी, कभी मेहमान, कभी असुविधा, कभी विज़िटर्ज़ ! कल तो सवेरे ७ बजे से आने शुरु हुए, रात के ९ बजे तक ! बहुत थक गया था। ऊपर से गर्मी ! दिल्ली ही में इतनी गर्मी है तो प्रयाग तो ग्रीष्म की यज्ञभूमि है—वहाँ क्या हाल होंगे तुम अनुमान लगा सकते हो। कौओं तक का कंठ सूख गया है—काँव-काँव की आवाज़ भी नहीं सुनाई देती—बोलना ही भूल गए लगता है। जब मैं खाना खाता हूँ तो अक्सर आकर बोलने लगते हैं—आजकल लापता है !

बिचारे बंटी को बड़े लड़के तंग करते होंगे—खैर जीवन अपने ढंग की शिक्षा देता है—तुम्हारा ही पुत्र है—वह दबने वाला किसी से नहीं।

तेजी जी मज़े में होंगी। दस तस्वीरें तो १९६३ का प्रकाशन है इसलिए पुरस्कार के लिए नहीं सम्मिलित किया जा सकता। और पुस्तकें जो तुमने लिखी हैं ठीक ही हैं। निर्णायकों के बारे में मुझे भी पता नहीं—तुम दिल्ली वाले हुए कभी मालूम कर ही लोगे।

चार खेमे ······की साप्ताहिक भारत में बड़ी प्रशंसा निकली थी—तुमने देखी होगी समीक्षा।

मेरी पुत्रवधू (अंबी की बीबी) ने एक पुत्ररत्न को जन्म दिया है—रविवार को अबी को बधाई देने जा सकूँगा। मिसेज़ बरार के यहाँ हुआ।

शांता तुम्हें और तेजी जी को बहुत याद करती है—नरेन्द्र के अभिनंदन के विशेष समाचार तुम ही भेजना—नरेन्द्र तो आ सका नहीं।

तुम्हें तेजी जी को बहुत प्यार—

साईंदा

५६

इलाहाबाद
१६-८-६३

प्रिय बच्चन,

इधर बहुत बीमार रहा—अब अच्छा हूँ। परसों मेडिकल कालेज जाकर सारो एग्जाम-मेडिकल करवा लिया है—एक्स-रे में भी—कोई विशेष बात नहीं निकली। फिर भी दुर्बलता, खाँसी, जुकाम तथा तेज ज्वर रहने के कारण अभी क्लांति शेष है। २२ ता० को मेल से दिल्ली पहुँच रहा हूँ—कृपया स्टेशन पर मिलना। गाड़ी चाहो ए०आई०आर० से मँगवा लेना अपने घर पर—मिस्टर मलिक, डी०डी०जी० को फोन करके—उसी में स्टेशन मुझे लेने आ सकते हो क्योंकि अमित के यहाँ न रहने से चलाने में तेजी जी को कष्ट होगा। अमित मेरा बेटा है, अब नौकर हो गया, बुढ़ापे का मेरे सहारा रहेगा। मैं और तेजी जी उसके पास रह सकते हैं। तुम्हें तो अभी चक्की पीसनी है, बंटी के पढ़ने तक तथा नौकर होने तक, सो करो।

५ ता० से बीमार पड़ा था, १७ को अच्छा हो सका। अभी शाम को ९९° थोड़ी देर को हो जाता है। डाक्टर कहते हैं कमज़ोरी से है, कुछ दवाओं का रीऐक्शन है—४-५ दिन में चला जाएगा।

तुम्हारा कभी से पत्र नहीं मिला—शायद व्यस्त हो। आशा है सब लोग प्रसन्न हैं। तेजी जी, बंटी जी और तुम्हें बहुत प्यार—

सस्नेह

भूमिका अब साथ ही लाऊँगा—

सु०

५७

१८/७ बी०, स्टेनली रोड,
इलाहाबाद
३-८-६३

प्रिय बच्चन,

तुम्हारा पत्र मिल गया था, रात की गाड़ी में ठण्ड लग जाने से मेरी तबियत फिर खराब हो गई थी, अब ठीक हूँ। तुम्हारे ग्रन्थों से रचनाओं का संकलन १०-७ दिन बाद करूँगा। अभी तो मुझे एक रेडियो टाक एवं स्वर बेला के कार्यक्रम का आलेख तैयार करना है। आशीष को तुम्हें "सौवर्ण" भेजने को लिख रहा हूँ। ढेरों चूक पाए हैं—छापे-प्रूफ के। काम करने को जी नहीं करता। धीरे-धीरे देख सकूँगा।

अमित बड़ा अच्छा लड़का है—मेरा भतीजा जो ठहरा। अब तो कलकत्ता गया भी होगा। उसका पता मुझे भी लिख भेजना—कभी पत्र लिखने को अच्छा रहेगा। दिल्ली में तो आजकल राजनीतिक हलचल खूब होगी। सूचना प्रसार के मंत्री तो फिलहाल श्री सत्य नारायण सिन्हा हो गए हैं, सम्भवतः स्थायी भी वही रहें। वहाँ के कोई इस बारे में नवीन समाचार हों तो लिखना। तेजी जी सानंद सकुशल होंगी—बच्चे भी—दोनों को मेरा प्यार देना। आशा है तुम्हारा स्वास्थ्य भी ठीक होगा।

दिनकर जी के तबसे दर्शन हुए कि नहीं? तुम और दिनकर जी भी वहाँ मिनिस्टर बन जाओ तो बड़ा मजा रहे। सूचना प्रसार और शिक्षा के।

खाँसी अब ठीक है। नवीन समाचार तो कुछ है नहीं। इधर घर से बाहर निकलना भी सम्भव नहीं हो सका। "अभिनव सोपान" को तुरन्त प्रेस में दे दो—आगे का अंश पीछे जाता रहेगा। तब तक पिछला भाग कम्पोज हो सकेगा।

आशा है नरेन्द्र शर्मा जी अब वहाँ पहुँच गए होंगे। उन्हें फ़ोन पर कह देना

कि पंत जी आपकी प्रतीक्षा दिल्ली में करते रहे और अपने पत्र के उत्तर की भी प्रतीक्षा में हैं।

कांता के क्या कोई समाचार मिले ? न जाने बिचारी किस संकट में है—न यहाँ मुझसे मिलने ही आई न अपने समाचार ही भेजे । मैं कहीं ए०आई०आर० ही में फिर उसके लिए प्रयत्न कर देता ।

तुम वहाँ के समाचार विस्तारपूर्वक देना ।

शेष कुशल ।

बहुत प्यार—
साईदा

५८

इलाहाबाद
१२-६-६३

दिनकर के लिये नहीं

प्रिय बच्चन,

तुम्हारा पत्र मिल गया था—बहुत धन्यवाद । इधर प्रयाग में दिन-रात जलसे हो रहे हैं—कल हिन्दी दिवस था—इसमे पहिले हि० अकेडमी की बैठक —कल डा० रामकुमार की सालगिरह का बहुत बड़ा समारोह ५-६ घंटे का कार्यक्रम—परसों भी हिन्दी विभाग की ओर से उनका जन्मोत्सव । इधर विजिटर्स और गेस्ट्स भी काफी आए । मथुरा से डा० पांडे भी आए थे ।

तुम्हारा काम शुरू कर दिया है । इधर १५-२० के बीच भगवती बाबू की षष्ठि पूर्ति उत्सव है—उसमें अवश्य लखनऊ जाना है । स्वास्थ्य दिन-पर-दिन ढीला पड़ता जा रहा है—संभव है मौसम के कारण । जब तुम जैसे रोग हारने में अजेय योद्धा भीत क्लान्त होकर परास्त रह जाते हैं तो हम तो शिखण्डियों की पंक्ति मे ठहरे । गोदान कब तक निकल रहा है ? ओथेलो तो यहाँ बड़े धूम-धाम से हो रहा है सुन रहा हूँ—वहाँ शारदा जी की पार्टी कर रही है—शारदा

तो अब रोज पर पानी नहीं—ग्वाली हो गई है। मौसम और ही मस्तानर करके गुजरा हूँ। क्या दिसंबर तक हो गया है? मौसम इधर यहाँ बहुत सगर है—गर्मी अभी तक नहीं है। मौसम गुजरने पर इधर-उधर भ्रमण करना चाहता हूँ। कलकत्ता भी जाना है, महादेवी जी का आग्रह है—दिल्ली भी ८-१० दिन को जाकर आने और निराशाकर [illegible] के [illegible] में डा० हि० ना० गुप्तपन में सार्वजनिक समारोह में तुम्हें भेंट करना चाहता हूँ।

आशा है तुम सपरिवार खूब प्रसन्न हो। तेजी जी को और बच्चों को बहुत प्यार देना। अमित को दो एक दिन में लिखूंगा। वह प्रसन्न होगा।

शेष फिर—बहुत प्यार—

[illegible]

५९

१८/७ बी०, के०जी० मार्ग,
इलाहाबाद
३-१०-६३

प्रिय बच्चन,

तुम्हारा पत्र एक महीने से नहीं मिला। तुमने पता नहीं क्यों मेरे पिछले पत्र का उत्तर नहीं दिया। इधर 'नवभारत टाइम्स' में दिल्ली विश्वविद्यालय में हुए तुम लोगों के नयी कविता संबंधी परिसंवाद के समाचार संक्षेप में छपे थे।

कल नरेन्द्र यहाँ आ रहा है। ६ ता० को प्रातः हम दोनों लखनऊ जाएँगे। भगवती बाबू के षष्ठिपूर्ति समारोह में—तुम भी आते तो बड़ा अच्छा रहता। आशा है तुम सपरिवार स्वस्थ तथा सानंद हो। हम लोग ठीक हैं। इधर मैंने वाल्मीकि रामायण पढ़ा—'सौमित्र' के लिए कथावस्तु एकत्र करने—क्या तुम

उसे लिखना चाहते हो जैसा तुम दिल्ली में रह रहे थे—दोनों लिख सकते हैं। अध्यात्म रामायण भी पढ़ लूँ तो क्या सामग्री पूर्ण हो जाय।

अमित क्या अभी कलकत्ते ही में है? मैं उसे असमंजस के कारण पत्र अभी तक नहीं लिख सका। यहाँ विश्वविद्यालय के ऊधमी छात्रों के कारण वातावरण उत्तेजित है।

तुम्हारे पत्र के न मिलने के कारण चिन्ता है—शीघ्र समाचार दो। तेजी जी प्रसन्न होंगी—बंटी जी भी। उन दोनों को और तुम्हें बहुत प्यार—तुम्हारा पत्र आने पर अगला पत्र विस्तार से दूँगा। मेरा स्वास्थ्य बहुत ठीक तो नहीं पर काम चलाऊ है। सोच रहा हूँ ए०आइ०आर० की सलाहकारी छोड़ दूँ—इधर-उधर बहुत आना-जाना पड़ता है—अभी जब-तब साहित्य अकादमी भी संभवतः बुलाए। मैंने अमृत के (की?) पुस्तक के बारे में अपना परामर्श दिया है।

तुमने संभवतः 'इत्यादि' का समर्थन किया होगा। पता नहीं डा० नगेन्द्र ने कौन-सी पुस्तक पसंद की। दिनकर जी पर इधर एक लेख 'नवभारत टाइम्स' में छपा था—अच्छा लगा। भारती की एक कहानी भी 'नई कहानी' में बड़ी अच्छी है। दिल्ली में राजनीतिक वातावरण अब अधिक व्यवस्थित होगा। गांधी जयन्ती के अवसर पर श्री पंडितजी के भाषण से कुछ ऐसा लगा।

और क्या लिखूँ? नवीन समाचार साधारण है।

बहुत प्यार—

साईंदा

पुनश्च—

बच्चन, शांतिप्रिय जी कई बार लिख चुके है और कह भी चुके है कि उनके मकान बनाने के लिए रुपए इकट्ठे करने है। क्या तुम कुछ अपने सेठ मित्रों को इस बारे मे सुझाव देना पसंद करोगे? सभवतः उन्होने स्वयं भी तुम्हें लिखा हो। तुमसे मिलने को भी बहुत इच्छुक हैं। कृपया इस संबंध मे अपनी सहानुभूतिपूर्ण सम्मति दो जो मैं उन तक पहुँचा सकूँ। सेवाएँ तो उनकी बहुत हैं—बहुत कष्ट भी उन्होंने सहा है। अब भी निरंतर साहित्य साधना मे रत हैं। श्रमिक साहित्यिक, निःसहाय।

आशा है तुम इस पर विचार कर लिखोगे—साप्ताहिक हिंदुस्तान द्वारा भी अपील कर सकते हो—

सु०

पु० श्री गिरि जी ने 'उर्वशी' पर सम्मति माँगी है—कल तक भेज दूँगा।

सु०

६०

इलाहाबाद
१०-१०-६३

प्रिय बच्चन,

तुम्हारे दोनों पत्र मिल गए। मैं लखनऊ एक रात रहा—समारोह खूब अच्छा था। भगवती बाबू के प्रति लोगों ने खूब प्रेम और आदर भाव उँडेला। बड़ा अच्छा लगा। सवेरे कुछ देर को विश्वविद्यालय के मित्रों के दर्शन कर ११ बजे की गाड़ी से लौट आया। नरेन्द्र यहाँ से मेरे ही साथ गया। उसने बताया कि तुम्हें अभी बुखार रहता है। यह तो ठीक बात नहीं। तुमने अपने पत्र में इसकी चर्चा भी नहीं की है। तेजी जी का स्वास्थ्य इधर अच्छा नहीं रहा—दुःख हुआ। मैंने तुमसे कहा था—अभी दिसम्बर तक उनके स्वास्थ्य के लिए सामान्य ही है। तुम्हें आराम अवश्य करना चाहिए—या तो छुट्टी लेकर घर बैठो या फिर दफ्तर का हलका-फुलका काम कर घर आकर लेटे रहो—मिलना-जुलना-बोलना बंद। कृपया अगले पत्र में अपने समाचार अवश्य भेजो।

मेरा पिछला काव्य समाप्त हो गया। उसका नाम मैंने 'लोकायतन' रख दिया है—संभवतः प्रकाशन समाचार में राजकमल विज्ञापित उसे करे। "सौमित्र' को शीघ्र ही जनवरी से प्रारंभ करने की इच्छा है। उसके बाद देखा जाएगा। न लिखकर क्या करूँगा? न मेरी बीबी न बच्चे जिनसे मन बहले।

एकाकी जीवन में लिखना भी बंद कर दूं तो कैसे जिऊँगा ? तुम मेरे लिए एक दिल्ली में बढ़िया दुकान खोल दो—या तो ज्वेलरी की या कोस्मेटिक्स एटसेट्रा की—परफ्यूमरी की। तब तो काम मिल जाने से जी लगा रहेगा—नहीं तो पापड़ ही बेलने पड़ेंगे।

आशा है तेजी जी अब पहिले से अच्छी हैं—उन्हें मेरा बहुत-बहुत प्यार देना—तुम्हें उनकी सेवा करनी चाहिए। बंटी को भी बहुत प्यार दो। अमित के बारे में तुमने नहीं लिखा है—अभी क्या कलकत्ते ही में है ?

यहाँ अभी गरम है—१०-१५ दिन में मौसम ठीक होगा।

पत्र शीघ्र देना—विशेषकर अपने स्वास्थ्य के बारे में—

शेष फिर—

बहुत प्यार—
सुमित्रानंदन पंत — साईंदा

६१

इलाहाबाद
१८-१०-६३

प्रिय बच्चन,

लिफ़ाफ़े खतम हो जाने के कारण कार्ड से उत्तर दे रहा हूँ—विस्तार से कल लिखूँगा। भाई, स्वास्थ्य के बारे में ज़िद करना अक्लमंदी नहीं है। डाक्टर को अवश्य दिखा लो—एक्स-रे भी करवा लो। रक्त परीक्षा भी करवा लो। यह गलत बात है कि शाम को बुखार रहे और तुम उसे डाज करो। कितना बुखार रहता है—लिखना। यह पत्र तेजी जी को भी दिखला देना—वह तुम्हें डाक्टर के पास ले जाएँगी। अगले पत्र में जो कल या फिर सोमवार को लिखूँगा तुम्हें कुछ जरूरी बातें लिखूँगा। अभी इतना इसलिए लिख दिया कि स्वास्थ्य के बारे में ऐसी लापरवाही की बात मुझे पसंद नहीं आई जबकि अभी हाल ही

में तुम्हें फेफड़ों की तकलीफ़ रही है—इसमें डरने की कोई बात नहीं—न चिंता करने की आवश्यकता है। पर ठीक ट्रीटमेंट जरूर करवा लो—इस तरह बराबर तुम अपने को धोखा दे रहे हो।

उत्तर शीघ्र देना

सब को बहुत प्यार—

साईंदा

६२

१८/७ बी, स्टेनली रोड,
इलाहाबाद
२५-१०-६३

प्रिय बच्चन,

श्री पुरोहित प्रतापनारायण जी तुमसे भेंट करना चाहते हैं। ये आजकल प्रयाग में आए हुए है, मुझ से परिचय पत्र चाहते हैं।

श्री पुरोहित जी जयपुर निवासी धनाढ्य व्यक्ति हैं। साहित्य प्रेमी और सर्जक। संभवत: अपनी कुछ रचनाएँ तुम्हें भेंट करें। आशा है तुम अपने व्यस्त जीवन से इन्हें कुछ समय दे सकोगे। तुम्हारे पत्र का उत्तर डाक से भेज चुका हूँ।

सप्रेम,
सुमित्रानंदन पंत

पीछे जब तुम्हारे साथ देहरादून में रहूँगा तुम्हारी चिट्ठी पत्री—जो कम नहीं होंगी—और कविताएँ भी जो अजस्र से तुम लिखते रहते हो उन्हें टंकित कर दिया करूँगा। इस प्रकार तुम्हारे लिए उपयोगी प्रमाणित हो सकता हूँ। नरेन्द्र के साथ तुम्हारी पत्री दिखाई थी—उसका कहना है कि कुम्भ के शनि में तुम बहुत ऊँचे उठोगे और एक महत्त्वपूर्ण स्थिति में आने को पाओगे और उसमें भी महत्त्वपूर्ण कृति लिखोगे।

कुम्भ में शनि २॥ वर्ष रहता है—वह फरवरी। मार्च '६४ में आएगा। विदेश यात्रा और मान सम्मान भी प्राप्त होगा, कहता है। अमित की कुंडली की नकल भी भेज देते तो अच्छा होता। मेरे पास कभी-कभी अच्छे ज्योतिषी यहाँ आते हैं—एक रूपनारायण भी उनमें हैं। अमित बिचारा बड़ा सीधा और भद्र लड़का है जिसे नोबल कहते हैं। तुम्हारी सीमाओं से मुक्त—सहज सुभग है। मैं भी संभवतः मार्च तक कलकत्ता जाऊँ। निराला विश्वविद्यालय वालों का बड़ा आग्रह है। तब अमित से भी भेंट हो सकेगी।

आशा है तुम, तेजी जी और बंटी जी खूब प्रसन्न हो। तुम सबको मेरा बहुत प्यार—पत्र जल्दी देना। नवीन समाचार भी लिखना—

साईंदा

६४

१८/७ बी, स्टेनली रोड,
इलाहाबाद
६-११-६३

प्रिय बच्चन,

तुम्हारा बहुत बड़ा पत्र मिला, मैं यथासमय उत्तर नहीं दे पाया—एक तो टाइपिस्ट १० बजे से ४ तक और शाम को ७ से १० तक टंकित करने आता है। आज पांडुलिपि शाम तक पूरी टाइप हो जाएगी। पर इससे भी बड़ा कारण

तुम्हारा लावण्यमान ट्रीटमेंट करने से दूर हो गया जानकर प्रसन्नता है। नया ट्रीटमेंट का नाम है, लिखना। फिर भी अब यह आवश्यक है कि अपने को ओवर एक्झास्ट न होने दो। काम करो साथ ही विश्राम भी। मेरा तो आजकल कोई नया सृजन नहीं चल रहा है—बस इसी को टाइप वगैरह कराने भेज देना है। उसके बाद कुछ विश्राम की मुझे भी आवश्यकता है—आगे देखा जायेगा। तुम्हारा अभिनव सोपान तथा रूसी कविताओं के अनुवाद प्रेस में चले गए यह बड़ा अच्छा हुआ। भूमिका सा० हिन्दुस्तान में निकल रही है यह भी अच्छा ही हुआ। देखें, लोगों की क्या प्रतिक्रिया होती है। तुम्हारे भविष्य का विचार जो नरेन्द्र ने किया था तुम्हें लिख चुका हूँ। विदेश नौकरी में गए तो मुझे भी साथ में ले जाना—अर्दली ही सही। आशा है तेजी जी खूब स्वस्थ हैं। उन्हें और बंटीजी को मेरा बहुत प्यार देना। अगर तुम्हारे एक्स-रे में कुछ नहीं निकला तो ठीक है—नहीं तो करा अवश्य लो अगर न कराई हो तो। लग्स की बीमारी अब घातक नहीं मानी जाती—पर उसका ट्रीटमेंट करवा लेना अनिवार्य है। अतः एक्स-रे अवश्य करवाना।

गोपेश के बारे में अभी कुछ होना संभव नहीं, मैंने उसे समझा दिया है। समय पर होगा।

'सौमित्र' 'लोकायतन' के प्रकाशन के बाद ही लिखना चाहता हूँ। पता नहीं लोगों को पसंद आएगा कि नहीं। 'लोकायतन' तो एक संस्था का नाम है, उसका दूसरा कोई सम्बन्ध नहीं है। तुमने अपनी भूमिका में मेरे ऊपर कौन-सा नया छींटा डाला है—तुम हमेशा मेरी टाँग खींचते रहते हो—अबके मैं समस्त फाउन्टेन-पेन की स्याही तुमपर उडेलकर छींटा नहीं धब्बा ही बड़ा सा डालने वाला हूँ—सौ सोनार की एक लोहार की ! हाँ, जरा वह जो तुम यजुर्वेद का मंत्र

सुनाते हो सबके पत्र में लिख भेजना—मुझे आवश्यकता है—वही राग सगनोटी सगतरइया वाला मंत्र।

इस समय पर ४ ही बजने को हैं। बहरहाल अपने स्वास्थ्य का बराबर ख्याल आगे रखा करो। नवीन समाचार कोई हो तो लिखो। क्या आई० एंड बी० में अब सत्यनारायण जी सिन्हा स्थायी रूप में रहेंगे?

शेष फिर—बहुत प्यार—

साइँदा

१८/७ बी, स्टेनली रोड,
इलाहाबाद
१२-११-६३

प्रिय बच्चन,

तुम्हारा पत्र मिला। शांतिप्रिय जी स्वयं मुझसे ये सब बातें कह चुके हैं। मैं सोचता हूँ इस अपील का प्रारूप मि० टंडन से ही बनाया जाय, वह इसमें अत्यंत कुशल हैं भी। तुम इसी प्रकार शांतिप्रिय जी के पत्र की प्रतिलिपि उनके पास भेजकर उन्हें लिख दो कि इसका प्रारूप आपही बनायें। यह मैं इसलिए लिखता हूँ कि उन्हें इसका अनुभव है और इसमें बहुत दक्ष भी हैं। उनका पता है के/आ कोहिनूर, केमिस्ट्स, सिविल लाइन्स, इलाहाबाद, घर का नम्बर मैं भूल गया हूँ।

तुम कवि सम्मेलन के पीछे इधर-उधर दौड़धूप कर अपने को ओवर स्ट्रेन करते हो यह ठीक नहीं है। इस पत्र में नवीन तो कुछ लिखने को है नहीं, जब तुम मेरे पिछले का उत्तर दोगे तब और बातें लिखूँगा।

तुम्हें सपरिवार बहुत प्यार—

साइँदा

६६

इलाहाबाद
२९-११-६३

प्रिय बच्चन,

तुम्हारे पत्र का उत्तर देर से दे रहा हूँ—इधर बहुत ही अव्यवस्थित रहा। मेरा तार २७ को मिल गया होगा। तुम्हारे घर पर जन्म-दिवस की गोष्ठी के समाचार आज 'नवभारत टाइम्स' में पढ़कर प्रसन्नता हुई। 'धर्मयुग' में ओंकार ने तुम्हारा बड़ा सुंदर चित्र खींचा है—विशेषकर मिस्टर राय के विश्वविद्यालय के प्राध्यापक के रूप का। भगवान् ने रक्षा की तुम्हारे क्लास में नहीं रहा। तुम्हारे लौह अनुशासन से तो प्राण ही निकल जाते। अँगड़ाई लेना भी मना। तबसे मुझे जमुहाई ही आ रही हैं। कृपया ओंकार तथा अजित का पता लिखकर भेजना—अजित ने दिया था वही खो गया।

इधर के नए समाचार भी लिखना। मेरा स्वास्थ्य बीच में कुछ ढीला रहा। श्री प्रकाशजी भी मुझ से मिलने आए थे—तुमने उनसे कह दिया होगा कि मैं प्रायः अस्वस्थ रहता हूँ। चिन्ता प्रकट कर रहे थे। मेरा लेख आजकल सा० हिन्दुस्तान में तुम्हारे व्यक्तित्व कृतित्व पर छप रहा है। लोग पसंद कर रहे हैं। मेरे पास ३-४ पत्र आ चुके हैं। धर्मयुग में तुम्हारा चित्र बहुत बढ़िया निकला है। विद्याव्रत ने तुम्हारा सारा सौन्दर्य ही उतार लिया है। तुमसे कहीं सुन्दर है।

शांतिप्रिय जी के सम्बन्ध में आशा है टंडन जी का लिखा अपील का प्रारूप तुम्हें मिल गया होगा। वैसे मेरी उनसे इधर भेंट नहीं हुई। शांता अब धीरे २ ठीक हो रही है। अपने जन्म दिवस के उत्सव के समाचार लिखना।

श्री तेजी जी को बहुत २ याद कर देना। आशा है वह स्वस्थ और प्रसन्न हैं। तुम्हें अपने जन्म दिवस पर उन्हें एक हीरे की अंगूठी और दो अंगूरी साड़ी जरूर उपहार में देनी चाहिएँ। अमित को आजकल में लिखूंगा।

तुम्हें, तेजी जी और बंटी को बहुत प्यार। पिश्ती मेरा इंतजार करती होगी कि पंतजी आएँ तो मुझे मेज पर सबके साथ खिलाएँ। आशा है स्वस्थ हो—
प्यार—

सांईदा

६७

इलाहाबाद
४-१२-६२

प्रिय बच्चन,

तुम ११ को आ रहे हो, यह जानकर बड़ी प्रसन्नता हुई। स्वागत है। अवश्य आना। तुमारे मामा की अस्वस्थता का समाचार पढ़कर दुःख हुआ। एक तो तुम आ ही रहे हो—दूसरा लिफ़ाफ़ा नहीं—इसी से कार्ड ही डालकर संतोष कर रहा हूँ। हम लोग ठीक ही है—तुम, तेजी और बंटी भी स्वस्थ होगे—मेरा बहुत प्यार लो और हो सके तो पत्र देखते चले आओ। गपशप रहेगी...यद्यपि तुम मामा जी के साथ व्यस्त रहोगे। फिर भी तुमसे भेंट होने की प्रसन्नता रहेगी—अपना टापराइटर भी लेते जाना—बदले में मेरे लिए एक मोटरकार ले आना। अगर रोलस हो तो क्या बात है—आखिर शहर के चूहे और जंगल के चूहे की भेंट में तो फ़र्क होने ही वाला ठहरा। शेष मिलने पर—
बहुत प्यार—

सांईदा

६८

इलाहाबाद
४-१२-६३

प्रिय बच्चन,

इस समय ६॥ रात के बजे हैं—अभी दिल्ली से तार आया है—मीटिंग फिक्स्ड टु ट्वेल्व नून—थ्यान दिसंबर थरटीन—अटेन्ड। अतः अब तुम वहाँ से ८ या ९ को चलकर ९ या १० को यहाँ पहुँच सको तो मैं तुम्हारे ही साथ १२ को सवेरे दिल्ली को जाऊँ। यह संभव नहीं तो यहाँ शांता हुई हो। मैं १२ को उसी ६ बजे सवेरे की गाड़ी से दिल्ली को चलूँगा। शाम को तेजी जी या बंटी मुझे रेलवे स्टेशन पर रिसीव कर लेंगे। १४ या १५ को सवेरे मैं प्रयाग को वहाँ से रवाना हूँगा। संभवतः १४ को ही। तुम्हारी करनी से वंचित रहना पड़ेगा। तेजी जी मेरे लिए आफिस से गाड़ी मँगवाकर उसमें बंटी को स्टेशन भेज सकती हैं। लेकिन हुआ यह सब बहुत गड़बड़। अतः तुम किसी तरह ८-९ को चलने का प्रबंध करो और शीघ्र सूचना दो—चाहे तार द्वारा—और सब पहिले कार्ड में लिख चुका हूँ।

प्यार—
साईंदा

विक्रय के लिये नहीं

६९

१८/७, बी०के०जी० मार्ग
इलाहाबाद
३०-१२-६३

प्रिय बच्चन,

तुम्हारा पत्र मिल गया था। वंटी की स्कूटर से दुर्घटना के समाचार पाकर दुःख हुआ। मेरे समय का तो दिवाला निकल गया है। शांता आजकल दिल्ली-मथुरा में है। यहाँ विज़िटर्स की संख्या में बाढ़ आई हुई है। उधर यशपालजी की स्वर्ण जयंती की तैयारी और लोकायतन के प्रूफ! तुम्हें देर से उत्तर दे सका।

तुम अब प्रधान मंत्री की इस्टेट में रहने वाले बन गए हो इसीलिए मेरे लिए सैकड़ों तकल्लुफ़ों से भरा पत्र भेजते हो कि और कहीं तुम्हें जगह होती तो मेरे यहाँ ठहर कर मुझे कष्ट न देते इत्यादि। अब भई, मेरे यहाँ आजकल कोई नौकर नहीं होने से और शांता की युनिवर्सिटी होने से तुम्हें कष्ट हुआ हो तो मैं क्या कर सकता हूँ ! मैं तो वसुधा में जब तुम्हारे साथ नौकर भी नहीं था और बाद को भी सभी स्थितियों में रहा हूँ—और वैसे मैं भी यही सोचूँ तो दिल्ली में मैं भी नरेन्द्र, नगेन्द्र आदि के यहाँ ठहर सकता हूँ—सारांश यह कि यह तुम्हारी सरासर बदतमीज़ी है जो तुम ऐसा लिखते हो।

आशा है वटी अब अच्छा होगा। उसे मेरा बहुत प्यार और आशीर्वाद देना। मुझको भी मालूम हुआ है कि अबके हिन्दी न्यूज़ एडवाइज़री कमेटी की मीटिंग प्रयाग में होगी—चलो दिल्ली जाने से छुट्टी मिली। अब मैं केवल गणतंत्र दिवस के अवसर पर आऊँगा और राष्ट्रपति के साथ रहूँगा। तुम्हें भी संभवतः किसी भाषा की कविता का अनुवाद करने को मिला होगा। मैंने संस्कृत रघुदिग्विजय (कालिदास) से किया है।

यहाँ कोल्ड वेव है, और घर गृहस्थी का भार कंधों पर है ! नवीन समाचार यही हैं कि आज २४ ता० से घर से बाहर नहीं निकल सका हूँ—कभी दूधवाला कभी धोबी—कभी आया कभी विजिटर्स !

अब दो दिन के अंतराल से झाँककर नया वर्ष मुस्कराने लगा है। सन् १९६४ ! भगवान चाहेंगे तो खूब अच्छा होगा नया साल ! तुम्हें सपरिवार नए ३६५ दिनों की ढेर-ढेर बधाइयाँ और शुभकामनाएँ भेज रहा हूँ। अभिनव सोपान, पुश्किन की कविताओं और जीवन संस्मरण के अतिरिक्त किंग लियर और हैमलेट का अनुवाद तुम्हारा निकले और किसी महाकाव्य की नींव पड़े और ढेर २ गीत और मुक्तछंदी काव्य लिखो।

तेजी जी और अमित को भी बहुत २ बधाई। बेटे के लिए कोई सुंदर चाँदनी बहू मिले जो सब का जी चुराए ! और बंटीजी उच्च श्रेणी में उत्तीर्ण हों और तेजी जी को तुम्हारे अतिरिक्त और भी बहुत लोगों का प्यार मिले जिससे तुम जलो भुनो ?

शेष सन् '६५ के लिए—

आशा है तुम सब लोग प्रसन्न हो—मैं ठीक ही हूँ।

बहुत प्यार—
सुमित्रानंदन

७०

इलाहाबाद
१०-१-६४

प्रिय बच्चन,

तुमने मेरे पत्र का उत्तर नहीं दिया, क्या तुम बीमार हो, या अत्यन्त व्यस्त ? बंटी के भी समाचार तुमने नहीं दिए।

कृपया अपने स्वास्थ्य के बारे में शीघ्र लिखो—मुझे २४ को दिल्ली आना है। मैं तुम्हारी सुविधा के अनुरूप ही कार्यक्रम रखूं। शांता भी तुम्हारी चुप्पी की शिकायत करती है।

तुम सबको बहुत प्यार—

शेष पत्र मिलने पर—

साईंदा

७१

इलाहाबाद
१६-१-६४

प्रिय बच्चन,

बंटी अच्छा है जानकर प्रसन्नता है। मैं २४ ता० की शाम को मेल से आऊंगा। तुम स्वयं स्टेशन न आ सको तो आफ़िस की गाड़ी लेकर नरेन्द्र या सत्येन्द्र या अजित को स्टेशन भेज सकते हो। आशा है तुम और तेजी जी सकुशल हो और बंटी भी शीघ्र ही ठीक हो जाएगा। अमित उससे मिलने आया यह अच्छा हुआ। शेष फिर—बहुत प्यार

साईंदा

७२

१८/७ बी, स्टेनली रोड,
इलाहाबाद
५-२-६४

प्रिय बच्चन,

दिल्ली से लौटते ही बीमार पड़ गया, अभी चारपाई पर ही हूं। टेरा-माइसीन खाने से कमजोरी मालूम होती है। २-३ दिन में ठीक हो जाऊँगा। तुम ८ को आ रहे हो जानकर प्रसन्नता हुई। मीटिंग के समाचार मुझे कल ही मिले और मैं तुम्हें लिखने ही वाला था। शेष मिलने पर—सबको बहुत प्यार—

माईंदा

७३

इलाहाबाद
१५-२-६४

प्रिय बच्चन,

तुम्हारा तार और पत्र मिला। मुझे बड़ा दुःख है कि टाइपराइटर तुमने रास्ते में खो दिया। श्री श्यामजी से पूछा था उन्हें भी मालूम नहीं। संभव है रास्ते में कार से गिर पड़ा हो। इससे अच्छा था तुम मुझे ही दे देते। खैर, अब क्या हो, जिसका होगा उसे मिल गया।

मैं १७ ता० को पांडिचेरी कुछ दिन को जाऊँगा, ४ ता० मार्च को सवेरे यहाँ पहुँचूंगा। तुम आश्रम के पते पर पत्र भेज सकते हो। और समाचार यथावत् हैं।

आशा है तुम सपरिवार प्रसन्न हो।

शेष दूसरे पत्र में—

बहुत प्यार—
साईंदा

७४

पांडिचेरी
२३-२-६४

प्रिय बच्चन,

तुम्हारा पत्र आज मिला। मैं ४ ता० मार्च को सवेरे प्रयाग पहुँच जाऊँगा। तुम्हारा प्रणाम यहाँ सबसे निवेदन कर दिया है। श्री हिम्मत सिंह जी भी तुम्हें याद कर रहे हैं—जिन्हें तुम संभवतः लंदन में मिले थे। कलकत्ता में भी!

जान पड़ता है टाइपराइटर खो जाने से तुम्हें नींद नहीं आ रही है। मैंने एक वैसा ही और टाइपराइटर तुम्हारे लिए खरीद कर रख दिया है—क्योंकि मेरे यहाँ से खो गया था, सो फ़र्ज़ अदा करना था। अतः अब तुम निश्चिन्त रहो। समझ लो टाइपराइटर नहीं खोया। यहाँ गर्मी है। वैसे बहुत से लोग आए हुए हैं—विदेश से विशेषतः—मैं भी उन्हीं के साथ यूरोपियन गेस्ट हाउस में हूँ। कौशिकजी भी यहीं हैं। आशा है तुम सपरिवार प्रसन्न हो। तेजी जी को बहुत याद कर देना—

तुम सबको बहुत प्यार—

साईंदा

७५

१८/७ बी स्टेनली रोड
इलाहाबाद
१३-३-६४

प्रिय बच्चन,

मैं ४ ता० को शाम को यहाँ पहुँच गया था। लौटती बार यात्रा बड़ी टीडियस रही—इटारसी में गाड़ी मिस हो जाने के कारण रात भर वहाँ पड़ा रहना पड़ा। इतनी थकान मुझे कभी नहीं मालूम दी। इसी कारण यहाँ पहुँचने पर तुम्हें पत्र नहीं दे सका, और इसी कारण १५ को अकादमी के फंक्शन में भी नहीं जा सकूँगा। कुछ मेरा स्वास्थ्य भी इधर ठीक नहीं—पीठ में दर्द है, पैरों में भी—शुगर भी बढ़ गई है।

पांडिचेरी की स्टे अच्छी ही रही। पुरानी जी अस्वस्थ थे, बहुत चाहते थे कि वहाँ आऊँ। इसीलिए अचानक ही वहाँ जाने का निश्चय कर चला गया। वह अब ठीक तो हैं पर कमज़ोर हैं।

लोकायतन संभवतः २४-२५ मार्च तक या अन्त तक निकल सके। अभी तो प्रायः २०० पृष्ठ छपने हैं। साधारणतः काम ठीक ही छपाई का चल रहा है।

मैंने अपना टाइपराइटर जो मद्रास में सेकँडहैंड खरीदा था, गोपेशजी के हाथ तुम्हारे पास भेज दिया है—जब तुम्हारा काम हो जाए लौटा देना। विधाता की गति, कहाँ तुम्हारे पास टाइपराइटर था मैं तुमसे लेता था। तुमने अपनी गलती से उसे खो दिया, अब वहाँ मुझे खरीदना पड़ा और तुम्हारा काम अब उससे चल रहा है! खैर, दुःखी होने की कोई बात नहीं। चक्रवत् परिवर्तन्ते दुःखानि च सुखानि च! काम चलाने से मतलब—टाइपराइटर तुम्हारे पास है कि मेरे यह गौण है।

आशा है सपरिवार सानंद हो। तेजी और अजित को मेरा बहुत प्यार देना। अमित को भी भेजना—उसका पता भी अवश्य भेज देना।

अपने समाचार भी लिखना। बाबा से भेंट हो गई अच्छा हुआ। मैं धीरे २ ही ठीक हूँगा।

बहुत प्यार—
साईंदा

शांता आशीर्वाद कहती हैं—

सु०

७६

प्रयाग
१३-३-६४

प्रिय बच्चन,

गोपेशजी का लड़का कल रात टाइपराइटर वापस कर गया है—गोपेश जी भी घर ही में भूल गए।

अब तुम्हीं सोचो, टाइपराइटर एक जिद्दी जीवंत प्राणी की तरह (तुम से ज्यादा जिद्दी) मेरे घर से जाना ही नहीं चाहता—मैं क्या कर सकता हूँ। अब यह मेरे ही पास रहेगा, तुम ३५) रु० सालाना इसकी सफ़ाई के लिए मेरे पास भेजते रहना, जो मुझे रेमिंगटन कंपनी को भरने पड़ते हैं।

शेष पिछले पत्र में लिख चुका हूँ।

प्यार—

साईंदा

७७

इलाहाबाद
२१-३-६४

प्रिय बच्चन,

तुम्हारा पत्र मिला—मैं सोच ही रहा था कि तुम कहीं बाहर चले गए होगे तभी पत्रोत्तर देने में देर हुई। अमृत पर मदन गोपाल ने बड़ी ज्यादती की। भला उसके क्लेम का अकादमी के अवार्ड से क्या संबंध था। देखें, आज क्या फ़ैसला होना है। यहाँ बड़ी ज़ोर की खबर है कि मैथिली बाबू और बनारसीदास जी के स्थान पर श्रीमती महादेवी और डा० रामकुमार हो रहे हैं—एम०पी०। डा० रामकुमार श्री शास्त्रीजी के कैंडीडेट हैं सुना। राव साहब ये समाचार दिल्ली से लेकर आए—क्या यह ठीक है?

टाइपराइटर पर तुम व्यर्थ में अब अपना क्लेम बनाए हुए हो। गोपेश जी को कैसे मालूम कि तुम्हारा टाइपराइटर कौन है? सभी एक ही से होते हैं। इसे तो मैंने सेकन्ड हैंड मद्रास में खरीदा है। तुम्हारा वाला तो खो गया है और तुम्हीं से खोया है। अब तुम व्यर्थ में अपने मन को भुलावा देना चाहते हो।

मैं संभवतः लोकायतन समारोह के लिए आऊँ पर कलकत्ता जाना तो अब एकदम असंभव है—एक तो बहुत थक गया हूँ—दूसरा ब्लड शुगर और रक्त-चाप भी आजकल बढ़ा हुआ है। तीसरा जी भी नहीं करता। अमित को मैं आज ही अवश्य पत्र लिखूँगा। मुझे भी उसकी बीच-बीच में याद आती है। बाबा जी से तुमने नमस्कार कह दिया बड़ा अच्छा किया। तुम्हारे प्रणाम भी मैं पाँडिचेरी में निवेदन कर आया था।

और क्या लिखूँ? तेजी जी और बटी को बहुत प्यार देना। अब टाइप-राइटर हो जाने से मैं भी टाइपिंग सीख रहा हूँ। संभव है अप्रैल से तुम्हें टंकित पत्र ही भेजा करूँ—जैसा कि तुम भेजते हो।

पत्र शीघ्र देना। श्रौर वहाँ के समाचार भी लिखना—

बहुत प्यार—
साईंदा

७८

इलाहाबाद
२५-३-६४

प्रिय बच्चन,

अभी ओंप्रकाश जी को तार किया है कि मैं ५ अप्रैल की शाम को दिल्ली पहुँच रहा हूँ—अपनी पुस्तक के सिलसिले में। तुम ५ अप्रैल को मेल से मुझे लेने आ जाना। अपना टाइपराइटर भी तुम्हारे काम के लिए ले आऊँगा। अब तार नहीं दूँगा—तुरन्त सूचित करना कि मेरा कार्ड मिल गया है और तुम आओगे।

शेष मिलने पर—
बहुत प्यार—

साईंदा

७९

इलाहाबाद
३०-३-६४

प्रिय बच्चन,

तुम्हारा पत्र मिला। अच्छा है महादेवी, भगवती बाबू दोनों एम०पी० हो जाएँ। मैं ५ अप्रैल की रात को मेल से आ रहा हूँ—स्टेशन पर किसी को

भेज देना—आफ़िस की गाड़ी तो मिल नहीं सकती। दो एक दिन रहूँगा। तुम एम०पी० बनाते तो अपने-आप वहाँ ४-५ महीने रहना पड़ता। —पर मैं तुम से सख्त नाराज़ हूँ कि तुम सब की शादी कराते रहते हो—अभी जीवन प्रकाश जोशी की शादी के जलपान का निमंत्रण उनकी ओर से आया था—जो तुम दे रहे हो। दुख और क्रोध इस बात पर है कि तुमने सिर्फ मेरी ही शादी नहीं करवाई! और न जाने कितनों की करा चुके हो—तुम्हारी इस कृपणता और द्वेष के लिए कभी तुम्हें मुआफ़ नहीं करूँगा। अब भी देर नहीं हुई। सोच लो!

टाइपराइटर तुम्हें मेरा चाहिए या नहीं, लिखना। कहो तो लेते आऊँगा। पता नहीं लोकायतन का कैसा समारोह राजकमल कर रहा है—बड़ी झिझक मालूम देती है उसमें सम्मिलित होने में—पर ओप्रकाश जी का आग्रह है। खैर, तुमसे और नरेन्द्र से भेंट हो जाएगी—यही संतोष है। हालाँ, तुम पर गुस्सा बदस्तूर बना रहेगा।

यहाँ अब गर्मी आने लगी है। मेरे लोकायतन के प्रकाशन की खुशी में तुम मुझे क्या दोगे? घर बनाने वाले थे वह तुमने नहीं ही बनाया। और शादी भी तुम मेरी क्या ही करोगे—लड़की मिल भी जाय तो स्वयं कर लोगे तेजी जी से छिपाकर—

शेष मिलने पर—सबको बहुत प्यार—बैठक मे कई लोग बैठे हैं—इसलिए ऊटपटांग बातें लिखकर पत्र बंद कर रहा हूँ—

बहुत प्यार—

साईंदा

८०

१८/७ बी, स्टेनली रोड
इलाहाबाद

प्रिय बच्चन, १-४-६४

पहिली बात यह है कि मैं ६ ता० को सवेरे दिल्ली एक्सप्रेस से पहुँचूंगा। सवेरे यहाँ ओंकारनाथ जी का गायन है, जिसमें रहना है। अतः मेरा सुझाव यह है कि सवेरे तेजी जी को स्टेशन आने में कष्ट होगा। तुम टैक्सी से आजाना। टैक्सी का भाड़ा चाहे मेरे नाम लिख देना। तुम्हारे हिसाब में कट जाएगा।—६ ता० की बात आवश्यक है, ध्यान में रखना, कहीं ऐसा न हो कि सवेरे-सवेरे मुझे स्टेशन पर धक्के खाते हुए अकेले आना पड़े—

दूसरी बात यह है कि एम०पीज़० में महादेवी, रामकुमार, भगवती बाबू किसी का भी नाम नहीं निकला। डा० बी०एन० प्रसाद हो गए। इससे हिन्दी के प्रति सरकार का प्रगाढ़ प्रेम ही प्रदर्शित होता है।

तीसरी सबसे बड़ी बात यह है कि आज १ अप्रैल है, तुम्हारा दिवस आज हम लोग मना रहे हैं। —लोगों को वेवकूफ़ बनाकर ! तुम तो समाट् ही हुए जिसके नाम में भारत सरकार अगली पार्लीमेंटरी बैठक में १ अप्रैल को बच्चन दिवस के नाम से घोषित करने का विचार कर रही है। अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर मनाए जाने की बात है सन् '६५ से।

चौथी बात यह है कि तुम्हारा टाइपराइटर तो ला ही रहा हूँ—और किसी चीज़ की ज़रूरत हो तो लिखना। हाँ, मेरे लिए ७ ता० की रात को फ़र्स्ट क्लास में एक लोअर बर्थ रिजर्व अवश्य अभी से करवा लेना।

आशा है तेजी जी अच्छी है और बंटी जी भी। दोनों को मेरा बहुत प्यार देना।

और बातें पिछले पत्र में लिख चुका हूँ। आशा है तुम भी स्वस्थ हो।
बहुत प्यार—

साईंदा

पु—नरेन्द्र को भी ए: सा० को गाने को बुला लो तो बड़ा अच्छा रहे।
सु०

८१

१८/७ बी०, स्टेनली रोड
इलाहाबाद

१०-४-६४

प्रिय बच्चन,

यहाँ पहुँचने पर थक गया था। अब ठीक हूँ। यहाँ भी कुछ मित्रों को बुलाकर 'लोकायतन' की प्रतियाँ उन्हें दे दी हैं। अब अपना कर्त्तव्य इस विषय में समाप्त हो गया। श्री हजारी प्रसाद जी से भी शाम को भेंट होगी, वह बापवा के लिए आए हैं। गर्मी यहाँ बहुत है। बीच में दिल्ली चला आया तो बिना सूचना दिए आऊँगा, जिससे तुम दूसरा कूलर न लगा सको। तुमसे यह पूछना शायद भूल गया कि "अभिनव सोपान" कब तक प्रकाशित हो जाएगा—एक प्रति मेरे लिए भी भेजना और तुरंत। अमृत ने जल्दी ही रिजर्वेशन करवा दिया नहीं तो २-१ दिन और रहता, इसी इरादे से अबके चला था। खैर—ग्रथिमोचन हो गया, झंझट टला। शेख अब्दुल्ला साहब छूट गए, बधाई। आशा है आगे इसका परिणाम कुछ अच्छा ही होगा। तुमको भी अब मिनिस्टर-सिनिस्टर बन जाना चाहिए।

वहाँ के नवीन समाचार लिखना। कठिन काव्य का प्रेत लोकायतन कैसा चल रहा है? तेजी जी स्वस्थ और प्रसन्न होंगी—तुम्हें सपरिवार बहुत प्यार—

साईंदा

८२

१८/७ बी, स्टेनली रोड
इलाहाबाद
१६-४-६४

प्रिय बच्चन,

तुम्हारे १३-१५ के दोनों पत्र कल शाम और आज सवेरे मिले। तुम्हें लोकायतन पसंद आया यह जानकर प्रसन्नता हुई। आज प्रातः प्रो० शिवाधार जी पांडेय भी आए थे, उन्हें भी पसंद आया। यह काव्य स्थायी रहेगा कहते थे। वैसे वह संभवतः पूरा पढ़कर तब और भी अपनी राय देंगे। मैं भी यही चाहता हूँ कि लोग इसकी जीवन-दृष्टि से प्रभावित हों और उसे अपनाएँ। विश्व जीवन अधिक परिपूर्ण और संस्कृत बन सके! यह तो भविष्य ही में संभव हो सकेगा।

अब तुम्हारे ५ से ७ पृष्ठों का उत्तर देता हूँ—फ़ीस १००)रु०—पूरे काव्य में चित् और सित का प्रयोग स्वाभाविक है। यह चैतन्य प्रधान काव्य है। इस युग में मन और जीवन के स्तर के मूल्य अपूर्ण लगते हैं, उनमें नवीन चैतन्य का प्रकाश भरना है। सित का अर्थ स्वच्छ, पवित्र से है जिसकी आज के युग को विशेषकर भारत के लोक-जीवन, ग्राम जीवन को अत्यधिक आवश्यकता है। इसकी जन्मघुट्टी दी जा सके तो मनुष्य स्वस्थ हो सके। चित् का प्रयोग कई अर्थों में हुआ है—चेतना, बुद्धि, ज्ञान, बोध इत्यादि—कहीं परसेप्शन, थाट के लिए भी मुख्यतः इंटेलिजेंस ऐंड हायर ऍार प्योर कांशसनेस के लिए। चिज्जड़ के म्यूजिक को ऐप्रीशिएट करने के लिए संस्कृत की रिफाइन्ट फ़ोनेटिक संस्कार-सिद्ध बैकग्राउन्ड की आवश्यकता है—चिज्जड़=जड़चेतन।—शोभा पंख-दिगंत ठीक है। मुक्त कल्पना का हंस लोक मानस में अपने नवीन शोभा-पंख दिगंत खोले—जो अभी तक अगोचर रहे हैं। जन मन में खुल नहीं सके हैं। भूमन् (भूमा) कहते हैं टोटैलिटी आफ़ मेनिफेस्टेड थिंग्स—समस्त सृष्टि। ककुभ=तुंबा प्रणव युगल=वैदिक ओम् और शाक्तों का बीज मंत्र का ओम्। जिन्हें प्रकृति

८३

१८ ७ बी, स्टेनली रोड,
इलाहाबाद
१७-४-६४

प्रिय बच्चन,

तुम्हारे १५-४ के पत्र का उत्तर दे रहा हूँ। जब तुम स्वयं ही स्वीकार करते हो कि तुम वृद्ध हो, जैसा इस पत्र में तुमने लिखा है तब तुम्हें छोटी २ बातें भी बतानी ही पड़ेंगी। अब ७ से १२ पृष्ठ तक। इंद्रासन कोई स्वर्ग ही तक सीमित नहीं, वह दिव्य मानस है जो स्वर्गोपरि निश्चेतन तक व्याप्त है। निश्चेतन में वह कालिय कुंडल से—तमस से—वेष्टित है, यह वैदिक कल्पना है। यदि ऊपर से नीचे तक अखंड चेतना न होती तो नीचे का उन्नयन या ऊपर उठना सभव कैसे होता?—स्वर्गशुनी—वही सरमा है—हाउन्ड ग्राफ़ हैवेन वह इंट्यूशन प्रेरणाशक्ति जो निश्चेतन में प्रवेश कर उसे निरख-परखकर जाग्रत करने में सहायक होता है। कवि का वह अभिवादन इसलिए करती है कि कवि भी वही कार्य करने को उद्यत है। पँछ हिलाना तो पिरती ने तुम्हें सिखा ही दिया है।—पद रज हरित धरा=प्रभु के पद रज से जो हरी है—वही धरा के लाइफ़ फ़ोर्स हैं। सप्तसिन्धु—सेवेन प्लेंस ग्राफ़ कांशसनेस—भू भुव स्वः मह जन तप सत्यं—ग्रौर ग्रन्न प्राण मन महत् सत् चित् ग्रानन्द।—ग्रप्रकेतं सलिलं—वह लिक्विड मैटर की स्थिति जो इन्कानशिएंट है। निश्चेतन तम ग्रौर ग्रज्ञान—जहाँ बोध नहीं है—ग्रप्रकेत=केतुहीन, केतु बोध का सूचक—वैदिक एक्सप्रेशन है।—ह्रास विकास प्रत्येक गुण ग्रौर क्वालिटी का होता है जो ऐब्सोलयूट से सापेक्ष में ग्रा जाती है। ऐब्सोलयूट या परम सत्य का ग्रंश ग्रौर गुण।—सीता राम से या परा प्रकृति पुरुष से कहती है कि प्रकृति पुरुष या सीता राम बनने पहिले परम स्थिति में ग्राप (प्रभु) सुप्तावस्था में थे या जाग्रत ग्रथवा वह ग्रवस्था थी उसे कौन कह सकता है? वह ग्रद्वैत स्थिति तो ग्रनिर्वचनीय—

अननोएबिल है। यदि आपके लिए जगना कहना सार्थक है तो आप प्रथम मेरे रूप में—परा प्रकृति के रूप में जाग्रत या डाइनेमिक हुए। क्योंकि सृष्टि की संचालिका परा प्रकृति ही है परम पुरुष तो साक्षीवत्, दृष्टावत् है। परा प्रकृति के रूप में ही प्रभु (परम) ने अपनी महिमा देखी—'स्वयं' में तो वह अपने लिए भी अज्ञेय थे—शेष और बाकी जो मैनीफेस्टेशन सृष्टितत्व के रूप में है वह भाव-रूपी लीला भर है—यह विस्मय की बात नहीं। क्योंकि केंद्रीय सत्य परम तत्व ही है जो परा प्रकृति के रूप में अभिव्यक्त होता है। अब इस विशिष्टा-द्वैत के कारण ही भाव-रूप (जिससे 'भव' बनता है) लीला का समारंभ होना है। 'न विस्मय' इसलिए कहा है कि सृष्टि लीला भर है—साधारण जन को इसमें भले ही विस्मय हो कि सृष्टि स्वयं में सत्य नहीं है—पर ज्ञाता के लिए इसमें विस्मय का कारण नहीं।—सीताराम के विश्व रूप को महत्व देनी है और कहती है आप विश्व रूपी भगवत् सागर हैं जिस सागर के एक वृत्त-छोर पर व्यक्ति है, एक पर परात्पर।

व्यक्ति
वैश्व या भगवत चेतना
परात्पर

वृत्त छोर इसलिए कहा है कि व्यक्ति परात्पर से और परात्पर व्यक्ति से संयुक्त अततः है और बोध एवं साधना से हो सकता है—उस अतः सत्य को उपलब्ध कर सकता है। अगर स्ट्रेट लाइन के दो छोर होते तो कैसे मिलते? व्यक्ति परात्पर=व्यक्ति और परात्पर। सामाजिक पद।

अब तुम्हारे सब प्रश्नों का उत्तर हो गया। सरल संक्षेप ढंग से। मौज करो!

सब को बहुत प्यार—

सारदा

८४

१८/७ बी, स्टेनली रोड,
इलाहाबाद
१८-४-६४

प्रिय बच्चन,

तुम्हारे पिछले दो पत्रों का उत्तर दे चुका। अब यह तीसरे पत्र का दे रहा हूँ। पृष्ठ १२-२० तक। 'सर्वमुक्ति' का सिद्धांत वैसे तो युग की देन है और एक विशेष अर्थ में श्री अरविंद ने भी इसका प्रतिपादन किया है, पर 'लोकायतन' में जिस विशेष अर्थ में यह व्यवहृत हुआ है वह लोकायतन ही की देन है—व्यक्ति की आर्थिक कायिक मानसिक सांस्कृतिक आध्यात्मिक मुक्ति सामूहिक लोकपीठ का निर्माण करने के फलस्वरूप स्वतः सिद्ध हो सकेगी।—अमिट अभीप्सा=कभी न मिटने वाली अंतराकांक्षा—इनर ऐसपिरेशन उच्चाभिलाषा।—बुद्धि सत्य या ब्रह्म का बोध नेति-नेति—नॉट दिस—नॉट दिस कह कर देती है—वह बुद्धि के अतीत है। वह अनिर्वचनीय है। अद्वैत स्थिति केवल अनुभव का विषय है। इसलिए उसकी खोज में समय न खोकर उस सत्य को (मातृ चेतना सीता को) पूर्ण समर्पण कर भू रचना करना ही हितकर है।—अघ अविद्ध संस्कृत में अनघविद्ध हो जाता है—शुद्धमपापविद्ध। शुद्ध अपापविद्ध—ईशोपनिषद्—निर्विकल्प=अपरिवर्तनशील, जिसमें विकल्प विचार इत्यादि नहीं। यद्यपि बाहर से सापेक्ष स्तर पर तुम युग अनुरूप बदल रही हो विश्व चेतना होने के कारण पर तत्वतः रियली स्पीकिंग तुम ट्रांसेंडेंटल भी होने के कारण—पराशक्ति होने के कारण अपरिवर्तनशील हो।—तनु छवि=स्लिम ब्यूटी—ऐसी बातों के लिए कोश देखा करो।—चक्रभरत; भरतजी भगवान् के चक्र के अवतार पुराणों के अनुसार हैं। दो माताएँ—कौशल्या सुमित्रा। भरत कैकयी के बारे में कह चुके हैं। शत्रुघ्न प्रतिनिधि नहीं कहे जा सकते।—विषय वप्र=दुर्मति गढ़ का विषय वासना रूपी परकोटा। वप्र=चहारदीवारी। इंद्रियवन में (अशोकवन से संकेत

है) रियलिटी=कांशस्नेस और चेतना (सीता के रूप में) बंदी थी। जब चेतना वैदेही बनी—स्थिति में मुक्त हुई तब अविद्याधकार मन का मिटा।—मारीश जगत्= द्वन्द्व और रिलेटिविटी—जिसके सुख दुख ज्योति तमस के द्वन्द्व हैं। यदि आप इन्हीं पारदर्शन परमचेतना (सीता) को भूल जाएँ तो शेष केवल द्वन्द्व जगत ही रह जाता है। लक्ष्मण अपने इंटीग्रल विजन में देख रहा है कि सीता ही सब कुछ है और कहता है जहाँ तुम्हारी युनिफाइंग स्पिरिट दृष्टि से ओझल हो जाती है वहीं सुख द्वन्द्व ही, भवताप ही मन को सताने लगते हैं। 'वहीं' इसलिए कि तुममें सब द्वन्द्व अपने भेद अतिक्रम कर जाते हैं—एक यही रियलिटी में बदल जाते हैं। (उसी स्टैंजा की अंतिम पंक्ति)—सब द्वन्द्व ही भेद अतिक्रम कर चिदानंद की लय में—एकता में—संगति में बँध जाते हैं।—भगवान् मोहन है—उन्हीं के सम्मोहनवश—सीता के भगवत् चेतना के आकर्षण के वश।—जन युग रूपी फनमणि (सर्प) अपने महामरण के—या रूपी-फन खोते है भव या ससार को निगलने को।—एक फण आ चुका है—फन 'जन' से शक्ति ग्रहण करता है। —वे=लक्ष्मण देवर के लिए आदर सूचक बहुवचन। वह भद्दा लगता।—निरीक्षक अधिक पोएटिक है—अर्थ की व्यापकता भी इसमे निरीक्षण से अधिक है। निरीक्षण यत्र डेड लगता है। निरीक्षक यत्र जीवित,—इसलिए भव के लिए अधिक उपयुक्त है।—जो विगत मर्यादाएँ थी वे भी ऐब्सोल्यूट न होकर केवल युग-के कृतित्व की ही दर्पण मात्र थी जिनमें कृषियुग का मुख (गुण) बिम्बित था।—भावों को कर्म मे परिणत करने की आवश्यकता है। क्रांति का कर्म ज्वार विषमता के गर्तों को भर देगा।—'दिशा मैं करती'—'मे' छापे की गलती है।—जगत सोया है—काल सिरहाने खड़ा है—वह जगकर विपद के झूले में पैंग भर कर गतिमान हो सकेगा।—'जन' और 'दर्शन' एक-दूसरे को बल देते है इसलिए 'जन आंक न पाए भू जीवन का मूल्य' से पहिला ही वर्शन बेटर है।—शोध के सत्य को मन तद्गत होकर ध्यान में तो पा सका पर जीवन मे उसको उस सत्य को (ईश्वर को) मूर्त नही कर सका। पिछले युगों की आध्यात्मिक सिद्धि अंतर्मन के धरातल से जीवन के धरातल पर नही उतर सकी।—तुम्हारी सभी बातों का उत्तर दे दिया। अनेक प्रश्न मूर्खतापूर्ण है।

बहुत प्यार—

साईदा

पु—तुम लिखना कि मेरे उत्तरों से तुम्हारी शंकाओं का समाधान होता है कि नहीं—बोरडम बहुत होती है ।

सु०

पुनश्च—और घरेलू बातें लिखने को स्थान ही नहीं रहा—आशा है सब प्रसन्न हैं—

सु०

८५

इलाहाबाद
२३-४-६४

प्रिय बच्चन,

तुम्हारे कुल जमा ८ पत्र लोकायतन के संबंध में अभी तक मिले हैं, जिनमें से मैं ३ पत्रों का उत्तर दे चुका हूँ। दो का आज अलग से दे रहा हूँ—तुमने अभी तक किसी पत्र में नहीं लिखा कि मेरे पत्र तुम्हें मिल गए कि नहीं। कृपया अलग से पोस्टकार्ड द्वारा इसकी सूचना दो। अगर नहीं मिल रहे हैं तो मेरी मेहनत व्यर्थ हुई।

शेष दूसरे पत्र में—

प्यार—
सा‍इँदा

पृथ्वी पर लव के मूवमेंट को स्टेब्लिश करना चाहती है ऐज़ अपोज्ड टू काम—स्वयं प्रकाशित अंतरतम सत्य शिखा—इनरमोस्ट ट्रूथ, सेल्फ रेसप्लेंडेंट—मरंदों से वपु का निर्माण करना अधिक पोएटिक है दैन मरंद से निर्माण करना। मरंदों से मरंद के भीतरी रोमों की सुकुमारता तनिमा एटसेट्रा सब आँखों के सामने आ जाती है। २६—नाव के पर=पाल और डांड चैतन्य=टर्म ऑफ कांशसनेस इन जनरल. ऋत चैतन्य=ट्रूथ कांशसनेस ऑर सेन्ट्रल कांशसनेस। अब १८ ता० के पत्र का उत्तर—पृ०३० से ३६ तक।—तद्गत उर ऐज़ अपोज्ड टू क्षुब्ध द्वन्द्व निरत उर—किसी का भी।—क्योंकि जीवन का तन (फॉर्म) भंगुर है यह भंगुरता उसकी निर्मम सीमा है—जब हम जीवन के बारे में सोचते हैं तो इस सीमा को आँखों से ओझल नहीं कर सकते—नहीं तो सब परिणाम ग़लत होंगे। हाइफ़न है।—उसकी=जीवन की भव गति का—टाइम स्पेस में बंधी गति का।—आधि व्याधि रोग शोक महामारी दुकाल बवंडर सभी दुर्निवार स्थितियां हैं। इन स्थितियों से रक्षा के हित।—अनंत पीढ़ियों के क्रम में जीव की अमरता है (देह भले ही उसकी अनित्य हो) उसकी यह अमरता की अभिव्यक्ति ही विधि की श्रेष्ठ कला का उदाहरण है कि मृत्यु के भीतर से होकर जीव की अमरता निखरती रहती है।—व्यक्ति मुक्ति को सभव करने के लिए मनुज प्रीति अर्जित कर तथा लोक साम्य को विश्व ऐक्य के आश्रित रख मानवता को निर्मित करना है। मेन्स ईक्वैलिटी शुड बी सबसर्वियेंट टु वर्ल्ड युनिटी—अदरवाइज़ द इगोइस्टिक प्राइड ऑफ बींग ईक्वल विल बिकम डेस्ट्रक्टिव ऐंड गो अगेंस्ट वर्ल्ड युनिटी ऑर गुड—३२—स्वर्ग वह्नि का कसेप्शन वेदों में बहुत है—अग्नि इज़ इनर ट्रूथ ऐसपिरेशन—अपने मौलिक रूप में ज्योति और तम दोनों डिवाइन हैं इसलिए गोल्डेन लाइट और गोल्डेन डार्कनेस कहा है। अकेले ज्योति से स्वर्ग रचा भी नहीं जा सकता।—३३—अधिमानस की कामधेनुएं=हायर इंटुइशस (ऑफ नालेज) ऑर हायर डिवाइन पावर्स—प्रज्ञामृत=द नेक्टर ऑफ ज्ञान। सजीवन का अर्थ तुम्हारे कोश में अमृत का होगा। संजीवन=ब्रिंगिंग टू लाइफ—रेस्टोरिंग लाइफ़—रिएनिमेशन एटसेट्रा ३४—मुग्धा भू अपने हृदय के यौवन से उत्फुल्ल निखरेगी।—लोकायतन का मूल ध्येय है उन्नत भू जीवन—जिसके मंत्र हैं—शुद्ध प्रीति, रचना मंगल सृजन, संयुक्त

जीवन—भगवन् बोध एटसेट्रा इमोशनल्स और राग शुद्धि भी बहुत इंपोरटेंट है इसलिए इसे महत्व का स्थान दिया है। नर नारी के प्रेम से कोई संबंध नहीं—राग चेतना की शक्ति से संबंध है।—अमृत घट तो आज की जीवन स्थितियों में विष घट बना ही हुआ है—शंका का प्रश्न ही नहीं उठता।

लोकायतन पुराण नहीं नया जीवन बोध, नयी जीवन दृष्टि है।

यह पत्र भी तुम्हारा समाप्त हुआ। तीन पत्र शेष हैं—कल उत्तर दूंगा—बहुत बातें तुम जरा दिमाग लड़ाने पर समझ सकते हो—मूर्ख हो! शेष फिर—बहुत प्यार—

माईदा

इलाहाबाद
२४-४-६४

प्रिय बच्चन,

३६ से ४५ पृष्ठ—शून्य=ऐब्सोल्यूट शून्य के बाद (,) है। दिक् पट पर काल तूलि से रहः सष्टि (सृष्टि ?) अंकित है। यह मायावाद नहीं। काश, तुम्हें थोड़ा भारतीय दर्शन का भी बोध होता। सृष्टि देश काल के ताने बानों से गुम्फित है—सापेक्ष है।—सूत्र धर=कथासूत्र पकड़कर।—रोटी पोने का तो तुम्हें अनुभव है ही—वेणी पोने का भी अवश्य होना चाहिए। तुलसी बाबा गीतावली में कहते हैं—अनुराग ताग पोऊ। पिरोना, गूंथना भी इसका सकर्मक क्रिया के रूप में अर्थ है। पोहने से पोहो गँवारु लगता है, तुम जैसे गँवार के लिए ठीक है। —धरा स्वर्ग ही रमणी की रस वेणी ही मानो संस्कृति की मणियों से विरचित श्रेणी (सोपान है)—श्रेणी इसलिए कि नित्य उन्नयन और विकास की संभावना रहे। मानस जीवी=मनुष्य=मनो जीवी=बुद्धि जीवी ऐज अपोज्ड टू इंद्रिय

जीवी पशु=योरसेल्फ. जीवन मूल्य फॉर इंस्टेंस जाति संघ निर्माण और उनके नियमों का संगठन।—नए सांस्कृतिक वृत्त के संवत्सर को मैंने ऋत संवत्सर कहा है जो ऋत ऑर ट्रूथ पर बेस्ड होगा।—लोक पुरुष=गांधीजी।—ह्री=लज्जा, व्रीड़ा जिसका स्वभावतः तुम में अभाव है। श्री का अंतर्जात गुण ह्री।—खिसका =खिसका हुआ।—कला को घर कर—स्पष्ट है।—दर्पण के बाद डैश—है। वैसे भी लैंस को स्टोन/पाहन ही कहते हैं। मन युग दर्पण बनेगा तो युग सत्य की मूर्ति अपने आप ही उसमें बिम्बित हो सकेगी।—नमस्तर में रवि तिरता है।—सखि नील नभस्सर में तिरता—गुप्त जी०—शव भुक्=शव नोचने वाले कौए को कहते है।=द्रोण। पहिले मैंने आर्त द्रोण स्वर लिखा था। फिर आज चिन्ताहीन मनुष्य शव के समान है की इमेज को कंज्योर करने के लिए शव भुक् रख दिया।—प्रकृति सबन्धी पदों की प्रशंसा के लिए धन्यवाद। एक डा० बच्चन गोल्ड मेडल ही दे देते। पर १४ कैरट का न हो।—अब दूसरा पत्र ४६ से ६० तक।—तुम शिष्य नहीं गुरू हो—गुरू घंटाल। हाँ, छोटे भाई अवश्य हो।—सिराएँ=शीतल हो। सिराना=शीतल होना, समाप्त होना। देखो हिन्दी शब्द सागर—बचा युध जल बरपि सिराने—सूर०—लागन (लगान?)—कर से मेरा अर्थ फसल की पैदावार के अतिरिक्त राज्य में जो कर वसूल किए जाते हैं उनसे है। रियासतों में ऐसे बहुत कर देने पड़ते थे।—जो कुचले जा सकते हैं वे पीसे भी जा सकते हैं। भारतीय जनता तो कुचली ही नहीं गई पीसी भी जा चुकी।—हरि स्वयं कहता है कि मेरा मन उथला होने के कारण विधि का विधान का रहस्य नहीं थाह पाता कि महापुरुषों (बच्चन जैसे) की भू पर अंधकार छा जाय—दैदीप्य और गढ़हों दोनों ग़लत हैं। देदीप्य, गड्हों ही होना चाहिए। दैदीप्य तो संभवतः टाइपिस्ट या प्रेस वालों की कृपा है।—जैसे वन में देवदारू भरापुरा ऊँचा होता है वैसा जनों में।—आस्य=मुख।—प्रकाश अंध अहं को छूकर मन का पथ विस्तृत करता है।—लोकायतन की छपाई खराब है तो ओमप्रकाशजी से कहो—मेरी जान मत खाओ—सौ बार लिख चुके हो।—झोंक-झौंक दोनों ही चलते हैं—झौंक ज्यादा पावरफुल भी है शायद। वैसे झोंक भी स्वीकृत है—तुम्हारी मन की झोंक ही सही।—व्यक्ति की अंतः शुद्धि मुख्यतः चाहिए। संघ की बहिः शुद्धि अर्थात् संघ संबंधी नियमों के पालन के विषय में तत्परता और

८८

१८/७ बी०, स्टेनली रोड,
प्रयाग
२६-४-६४

प्रिय बच्चन,

जान पड़ता है मेरे मूर्ख संबोधन से दुखी हो। अरे भाई, वह मैंने अर्ध-सत्य लिखा था। पूर्ण सत्य यह कि तुम मुझे बहुत मानते हो, इसलिए मैं तुम्हारे सिर की मणि ठहरा अर्थात् मूर्खशिरोमणि! कवि होकर व्यंजनार्थ नहीं समझते! अब तो प्रसन्न हो? भाई तुम ठहरे केम्ब्रिज के डाक्टर और मैं निपट गँवार तुम्हें भला क्या सद्बुद्धि दूंगा।—खैर, परिहास से दुःखी होना ठीक नहीं, हे विद्वद्वर! —अब ६१ से ८१ पृष्ठ तक। भावी=भाप के रंग की, कुहरे के रंग की। बहुत हल्की स्लेटी रंग।—स्मृति मन अंतःकरण का एक भाग है जहाँ मेमोरी स्टोर्ड रहती है। मन का अभिन्न अंश—पर अंश मात्र। मन=जो मनन करता है। इसी अंतःकरण के चित्, बुद्धि, अहं, हृत्, मन, संकल्प-स्मृति आदि भारतीय मानस शास्त्र के अनुसार भाग होते हैं—अंग्रेजी मनःशास्त्र के अनुसार केवल इमोशन, कागनीशन एण्ड वोलीशन तीन भाग होते हैं।—शठ नायक नायिका भेद के अनुसार नायक का एक भेद—जो नायिका से छेड़खानी करता है इत्यादि—जैसे तुम पहिले थे! धृष्ट, चतुर, उदात्त आदि और भी भेद हैं।—छद-पुट=पत्रों के पुट में। छद=पत्ता।—भ्रू धनु में डोरी (गुण) नहीं थी। भ्रू भंगिमा कुशल श्री नहीं थी। सीधी गांव की कन्या थी। कालिदास मेघदूत में लिखता है ग्राम कन्या के लिए भ्रू विकारानभिज्ञा। भ्रू का गुण यही था कि वह ऋजु सरल था।—मुख कमल था और गला कंबु=शंख का-सा गौर वृंत=कमलनाल। मुख सरोज की नाल।—प्रतनु=तनु=दुबला। विद्यापति का 'हिय' का अर्थ उरोज नहीं हृदय है—अर्थात् निर्मम हृदय। कालिदास कहता है अंगानि चंपक दले सविधाय वेधा कांते कथं घटितवानुपलेन चेतः। विधाता ने सब अंग चंपा

८९

१८/७ बी०, स्टेनली रोड,
इलाहाबाद
२८-४-६४

श्रीमान् कविवर बच्चन जी को सविनय नमस्ते !

अब ६० से १०० पृष्ठ—फ़ीस १०००) होगई। ७०० पृष्ठ के लगभग हैं ७०००) फ़ीस अधिक तो हुई नहीं।—व्याकरण से राष्ट्रिय ही ठीक है। इस सम्बन्ध में चर्चा भी पत्रों में चल चुकी है। वैसे भी कविता में राष्ट्रीय ऊँट की तरह गर्दन उठाए अच्छा नहीं लगता मुझे।—चाटुकार कहो चाटुकर—कलाकार-वलाकार तुम्हारा ही बोध होता है विशेषकर पहिले शब्द से।—भक्त=विभक्त।—प्रतिकार=प्रतीकार—पर्याय है।—मारे जोश और खुशी के मोट पहाड़ी आदि भी सजीव होकर मुक्ति दास्य मांडने लगे—वैसे तो तुम अकेले बैल काफ़ी हो—पर मोट जगत आदि बैलों के पोषण में भी सहायक होते है।—रहा रक्त लथपथ—काल सूचक—कुछ देर या बड़ी देर तक मूर्छित पड़ा रहा।—हुआ भी अस्वीकृत नहीं।—तुम्हारे सब प्रश्नों का उत्तर होगया। तुम तो बकरा खाते नहीं—ईद की मुबारक बादी देना व्यर्थ ! कम से कम ईद के दिन तो नियम तोड़ दो !······अब २४/४ का पत्र—१०१ से ११५ पृष्ठ तक—ग्राह्य वधु—अंग्रेजी मुहावरा है—सैकड़ों ऐसे मुहावरे हिन्दी में आगए हैं, इसीने क्या बिगाड़ा। अच्छा एक्सप्रेशन है। शासन गवर्नमेन्ट भले ही मूलतः ईविल हो—मनुष्य की दुर्बलता का द्योतक क्योंकि ही हैज़ टू बी गवर्नड पर उसकी वर्तमान स्थिति में अनिवार्य आवश्यकता या प्रयोजन है।—कृमि तन का कृमि—घृणा द्योतक—शत्रु का शत्रु—वर्तमान कांटेक्स्ट में सैनिकवादी जापान—द्वितीय विश्व युद्ध में।—भारत क्या था अर्थात् ब्रिटिश शासित भारत क्या था और इण्डियन गवर्नमेन्ट तक क्या थी मूर्त दमन अहि—साकार दमनरूपी सर्प···।—हथियार डालना या रख देना=हार मानना। पर यहाँ हथियार अस्त्र-शस्त्र नहीं ट्रूल्स

या औज़ार भर है—यहि हथियार त्याग कर मैजुस्यिम में या कूड़े में जल्दी में डालकर धर दिया—पर यह भी त्यागने के अर्थ में—मुहावरे संबंधी भ्रान्ति हो तो माने फिर त्यागकर धर दिया जा सकता है।—मन के मूल्य=मेन्टल, रैशनल वैल्यूज़ ऐज़ अपोज़्ड टु स्पिरिचुअल वैल्यूज़—और इन्टेन मरयादा का सब और ह्यूमन नेचर ऐज़ ए स्पिरिचुअल बीइंग—मन के मूल्यों से मनोगत सब मानवी हानि पोषक मानसिक मूल्य आते हैं—द गो फ़ार्म स्पिरिचुअल वैल्यूज़ टु सर्व टाइम एटसेट्रा. फिर मर्म=सहज स्पिरिचुअल इक्वल फ़ॉर द गुड ऑफ़ ऑल. मोट प्रति मानव—मेन्टल वैल्यू—पर ओर ऑर दाद नेवर स्पिरिचुअल मूल्य—रैशनल और ईविल स्पिरिचुअल वैल्यू एटसेट्रा—मानव मूल्य=मूल्य प्रैक्टिस द डिज़ायर्स ऑफ़ ओरिजिनल युग—ऑफ़ सेल्फ़ फुलफ़िलमेंट—मिदर वगैरह एटसेट्रा—स्वराज्य क्यों मिला?—क्या यह अहिंसा की विजय थी? या विश्व युद्ध से बदली स्थिति? या गांधियन पार्टिसिपेशनिज़्म का आग्रह (विद इट मीन्स टु द वर्ल्ड) और वाज़ इट द फ़ोर्स ऑफ़ एक्सटरनल सरकमस्टांसेज़ अट फ़र्स्ट और वाज़ इट द रिज़ल्ट ऑफ़ द एज दैट इण्डिया गुड थी की—हाथ सेंकने के मैटा-फ़र को ट्रांसफ़र कर दो तो यज्ञाग्नि में बदल सको। वर्षा के बादलों से भरे आकाश की हाथी (द्वीप) से तुलना की है—जो सूंड में पानी भर भर भू को नहला रहा है—मन मोहा (हरा) जा सकता है तो लोचन क्यों नहीं? पहिले तो आँखें ही वकील बिहारी के छीनी जाती हैं।—स्वराज मिलने से संघर्ष के मेघों के छँट जाने के कारण भारत का गगन अनभ्र प्रतीत होता था—बिना बादल का पर उससे भी वज्रपात घटित होना (गांधी जी की हत्या) संभव हो गया! क्योंकि अचेतन में अभी दुष्प्रवृत्तियाँ बंदी हैं।······प्रश्नोत्तरी समाप्तम्।

११६ से १४४ तक—२५-४-६४ नैतिक अमर्ष से बापू का अंतर—जो स्वभावतः करुणा जल बरसाने वाले जलधर-सा था—अब तड़ित स्तनितमय लगता था—बिजली भरे गर्जन भरे बादल सा। मात्र जलधार बरसाने वाले घन सा नहीं।—दिग् गज को अलग कर दिग्गज ही की तो टाँग टूटी तुम्हारी तो नहीं टूटी? फिर व्यर्थ आक्रोश क्यों?—आशा का पातक=आशा पूर्ण न करने का पाप। भारत की आशा थी वह अखण्ड रहेगा।—'हो' इसलिए कि भले ही कुछ को यह आशा का पातक प्रतीत हो, पर परिस्थिति, (कि?)

अन्य उपाय नही था—इसलिए 'भले ही हो !' को प्रयोग किया है।—तिमि= मगरमच्छी, कम से कम तुम्हारे आकार की। कुत्सा=निन्दा। सब प्रश्न समाप्त। सब पत्र समाप्त—अब कान में तेल डालकर चैन की सांस लेकर सो सकता हूँ। शांता कहती है बच्चन को यहाँ कष्ट होगा हमारे पार्टटाइम सर्वेन्ट के कारण—अक्टूबर मे ही बुलाओ। सो पत्रों का ही सहारा लेना पड़ेगा। तुम्हें, तेजी जी को बहुत प्यार—

साईंदा

९०

इलाहाबाद
१-५-६४

प्रिय बच्चन,

तुम्हारा प्रश्नहीन पत्र मिला। मुझे पता नही कि मैंने किस बात मे नाराजी दिखलाई है। तुमने तो अपनी टोपी मेरे सिर पर मढ दी। खैर, इन बातो मे कोई सार नही। तुम अपनी ही सुविधानुसार प्रश्न पूछते रहो। मैं उसी प्रकार उत्तर देता जाऊँगा और तुम्हारे साथ ही स्वय भी कठिन काव्य के प्रेत को तुम्हें साधने मे सहायता करूँगा।

आशा है सपरिवार प्रसन्न हो। तुम्हारे नौकर चले गए दुख है। कहो तो अपनी बुढ़िया आया को भेज दूँ, वह तुम्हें पालना भी भुलाएगी और दूध की शीशी भी भरकर तुम्हारे मुँह पर लगा देगी।

तुम्हें और तेजी जी को बहुत प्यार—मैं अगर उस बीच आगया तो साग तरकारी तो बनाना आता है, रोटी बेलना पौना, पकाना नही आता। वह तेजी जी बना ही लेगी। न हो तुम मुझे बाकायदा २ महीने के लिए रख ही लो। वैसे हूँ तो मैं भी पहाडी ही।

साईंदा

'पु—श्रद्धा तो तुममें कूट २ के भरी हुई है। मैं ही श्रद्धा का पात्र नहीं हूँ।

सु०

९१

इलाहाबाद
३०-४-६४

प्रिय बच्चन,

अप्रेल भी आज समाप्त होने को है। तुम्हारे पिछले सब पत्रों का उत्तर दे चुका हूँ। यह २७-४ का पत्र है—अब १४५-२१० पृष्ठ तक। १४३ (*i*) सिर सूंघने की प्रथा गांवों में भी है, स्मृति मन में भी। १४७ (*i*) तंत्र=स्टेट जैसे प्रजातंत्र—तांत्रिक=तंत्र संबंधी—सोवियत जनतंत्र है कि डेमोक्रेसी है कि राज्य-तंत्र है एटसेट्रा (१४८) मध्य बिन्दु नामक अगले ज्ञान परिच्छेद में—जिसे भारतीय सांस्कृतिक विकास वृत्त का केन्द्र बिन्दु माना गया है क्योंकि वह ज्ञान या प्रकाश बिन्दु है। 'तुम' वह वाणी से कहता है।—वह कथा पुरातन कविते, से तात्पर्य है। (१४९) मेरा अभिप्राय है कि उस युग में जो कला और शिल्प में विशेषकर संगीत में मुसलमानों की संस्कृति का प्रभाव पड़ा वह केवल कलाकारों की प्रेरणा के कारण—न कि उसके लिए छुटपुट प्रयत्नों के अतिरिक्त कोई आंतर या संगठित प्रयत्न टू युनाइट हिन्दू मुस्लिम्स ऑर टू वाइडन देअर आउटलुक किए गए हों। (१५०) मुख यहाँ पर मुखौटा, (*iii*) पूय=पीप। (*iv*) छूटते=छूटते ही ऑर वेग से आते ही बलपूर्वक घुसते ही एटसेट्रा (१५१) (*iii*) छल=फाल्स. स्वर्ग का भय इसलिए कि अच्छे कर्म—धर्म त्याग आदि नहीं करेंगे तो स्वर्ग नहीं मिलेगा यह भय बहुत कॉमन बात है। १५२ (*iv*) व्यापक चैतन्य न बनकर योग बल चेतना का छल या छायाभास बन गया। (१५७) तामस का विषधर अविद्या और दैन्य की मणि से शोभित भू को फॅटों में कसे है। (१६०) (*iii*) उगहाया=उगाहा, दोनों ठीक हैं। (१६१) हम रूस अमरीका दोनों को दृढ़

रहे हैं—क्योंकि वे विरोधी शिविरों में बँटे होने के कारण हमें अपना रहे हैं—यह कहीं हमारी अपॉरचुनिस्ट अवसरवादी मनोवृत्ति न हो—क्योंकि हम स्वयं तो अपने श्रम से कुछ पैदा कर नहीं रहे हैं। १३८ (*i*) भीतर से खोखले राष्ट्र का गौरव इसी में है कि वह महत् कृपा के कुछ कण पा जाय—जैसे हम इस अमरीका की कृपा पाकर। १७४ (*iii*) आज लोग घर द्वार बेचकर भी शिक्षित होना चाहते हैं और नागरिकों के समकक्ष आना चाहते हैं—यही नगरों की मौनचुनौती स्वीकार करना है। गाँवों के लड़के कर्ज लेकर भी आज पढ़ रहे हैं। (१७८) यदि मर्त्य नर लोक मंगल के लिए बलिदान हो तो वह अमर हो जाता अमरत्व का वर पाकर। स्पष्ट है तुम्हारे जैसे लोगों को मर-मरकर ही भटकाया करती है। (१७८) विगत जीवन की परिस्थितियों की सीमाओं के कारण लोक अस्मिता का स्ट्रक्चर या विधान भी संकीर्ण हो गया—इतिहास प्रमाण है। फ्यूडल आउटलुक कहते हैं।

१८५ (*i*) सुदर का पुर कान का पुर नहीं है—फिर मूर्ख कहने को जी करता है। अभिप्राय है तत्वत: एसेन्श यह भू का प्रांगण सुदर का द ब्युटिफुल अर्थात् गॉड का पुर या प्रांगण है जो आज रुद्ध होने के कारण अपने अवरोधों के कारण असुदर लगता है। १८६ (*i*) जयशंकर प्रसाद। त्रिपुर की परिणति आगे के सर्ग हैं जहाँ धरा जीवन का ही रूपांतर हो गया है—तीनों पुर विकसित हो गए हैं—समतल जीवन ही ऊर्ध्व जीवन बन गया है—इसलिए मानव (श्रद्धा के पुत्र) को हिमालय पर चढ़ने की आवश्यकता नहीं (अतुल की तरह, देखो उत्तरार्द्ध) धरती पर ही वह उस दिव्य ऐश्वर्य और शांति का भोग कर सकेगा जिसके लिए श्रद्धा मनु अधर में लटके है। (*iii*) मुख पर जो प्रिय कनक मरद (केसर) है वही चंचल अलकें हैं—वमन के लिए कहा है। वह=वसंत=मधु १८७ (*i*) वन=बन कर। १८८ (*i*) यह कोयल कोई निर्दोष इनोसेंट पक्षी नहीं—कैसे सरल बातें भी तुम नहीं समझते! (*ii*) दैट इन एक्सप्रेसिबिल समथिंग—द गोल्डन फायर्स ऑफ ह्यूमन डिजायर्स—जिसका सिंबल वसंत भी है।—तुम=गोल्डन वर्जिन फ़ायर्स—जलते रहते नि.स्वर—एक अनिर्वचनीय आकांक्षा—द डिजायर ऑफ द मॉथ फॉर द स्टार—मानव उर में सुलगती रहती है ऐंड मेक्स इटसेल्फ़ फेल्ट फ्रॉम टाइम टू टाइम. १६५—वह गुह्य अंग

का प्रतीक जलभँवर मानो मनकौशल की ड्रिजायर में (फॉयड) के डार्क फायरी पेटल्स खोले था। (२०२) ये भिन्न २ संप्रदायों के रंग हैं—केसरी। बुद्ध—श्वेत। जैन—नील। वैष्णव—(भाव वर्ण) २०३ (ii) वह भंवर जिसे (जिस ने) चिद् नभ में उसे उड़ा दिया।—कर्मफल त्याग के सिद्धांत पर जो बौद्धों के कर्म त्याग का परिणाम है उस पर व्यंग्य है। कि वहाँ फल रहित फूल से सत्कर्मों के सुरभित ग्रह थे—इच्छा पावक ठंडा पड़ गया था (इच्छा त्याग पर व्यंग्य) इस प्रकार पीयूष (सत्यामृत) जो था वह स्वादहीन था (कठोर इंद्रिय संयम यम दम पर व्यंग्य) (iv) उस मन को जो इन्द्रियों के वृंतों पर विभिन्न गुणों में कुसुमित (विकसित) था उसे बलपूर्वक उनसे छुड़ाकर भीतर खींच लिया। (२०६) पुलोमजा की स्मृति के रूप में उनकी स्वर्ण पुष्पों की वेणी (जो बालों में बाँधी जाती है) को लेकर अपनी बाईं भुजा में (नाभांगिनी की स्मृति रूप में) बाँधे। २०७(iii) बिस=मृणाल तंतु या सूत्र सा सूक्ष्म ध्यान सूत्र. २०८ (ii) इन्द्र ही वेदों में दिव्य प्रकाश एवं मन के प्रतीक हैं तब विष्णु उपेन्द्र कहे जाते थे। पीछे उन्हें सात्विक रूप देकर वर्तमान विष्णु का रूप दे दिया।

बहुत प्रश्न बड़े टचकाने हैं—जी ऊबता है। शेष कल—

बहुत प्यार—
साईंदा

९२

इलाहाबाद
२-५-६४

प्रिय बच्चन,

तुम्हारा ३०-४ के पत्र का उत्तर। एक बात है, तुम्हें जहाँ ग़लतियाँ लगें वहाँ ज़रूर लिखो। भला मैं तुम्हारी आलोचनात्मक दृष्टि से क्यों रुष्ट हूँगा। मुझे तो उससे लाभ ही होगा। अवश्य अपने सुझाव दो। अपने कार्ड में तुमने

हृदय गुहा को बुद्धि गुहा कह व्यंग्य किया है—हृदय गुहा की गिरा राधा जी के लिए कहा है। मेरी तो बुद्धि ही गुहा रही।—२१५ (v) प्रथम दो पंक्ति पृथक् अन्तिम दो पृथक् हैं—इन सब चित्रणों द्वारा मैं गाइलिक एटमॉस्फियर क्रिएट करना चाहता हूँ—यह हृदय की चेतना या भावना का उन्नयन द्योतक है। २२० (vi) ग्रालोक स्पर्श कवि के हित शापित वर इसलिए था कि उसके प्रकाश में उसे जन भू तम से निरन्तर संघर्ष करना पड़ा—टु इलूमिन हिज ग्रोन क्लाउडेड स्पॉट्स एंड देन एंड टु एनलाइटेन द ग्रॉन राउंड डार्कनेस २२१ (vii) लघु द्वार देहरी कुलों में बँटे हुए युग्म मुग्धतर निम्न कामवृत्तियों ने प्रभावित रहे—वे उन्नत व्यापक प्रीति चेतना के विकास में सहायक नहीं हो सके ग्रौर राग चेतना का उन्नयन होने के बदले वह देह के मूल्यों में सीमित रही—यही उनकी निर्मम सीमाएँ हैं—सर्व प्रीति भावना का विकास अवरुद्ध हो गया। स्त्री को पुरुष ने भाव के स्तर पर भी हथिया लिया। वह बॉडी यूनिट मात्र बन गई। २२२ (viii) जिस प्रकार पुष्पों के वक्षों पर शोभा प्रेमी मधुकर उन्मुक्त मँडरा रहे हैं उसी प्रकार शोभा के उर में यौवन के स्वप्न अपना घर बनाएँ। यौवन के स्वप्नों का शोभा उन्नयन करे—यौवन के स्वप्न उसका पूजन करें—एडमायर करें। शोभा के पावक में सोने की तरह निखर कर—निम्न वृत्तियों पर जय पाकर ह्यू टु एलीवेटिंग इनफ्लूयन्सेस ग्रॉफ द ब्यूटी—मुक्त हृदय मन प्रकृतिस्थ किशोर-किशोरी नया भू जीवन गढ़ें—उसका निर्माण करें। २२३ हे मधु दीप शिखे, रोम्रों को हर्ष से उद्दीपित कर तुम अपने ग्रानन्द के करों से शोभा तन्त्री को झंकृत करो। *कामा इत्यादि तुम सब अपने अन्दाज से भर लो अगले संस्करण* में ठीक कर लेंगे।

तुम्हारे सब प्रश्नों का उत्तर दे दिया। पता नहीं तुम्हारा समाधान हो पाता है कि नहीं—ग्रामने-सामने डिस्कस करना ग्रासान होता है पर यह अक्टूबर ही में संभव हो सकेगा। नौकर के बारे में लिख ही चुका हूँ—खाना पीना रात को चरण सेवा—बस ग्रौर सब काम रोटी बनाने के अलावा मैं कर दूँगा।

"ग्रभिनव सोपान" का मूल्य क्यों नहीं वह १५) रखने को तैयार हैं—तुम्हारा प्रकाशक। तुम जोर दो। लोकायतन के ७०० पृ० के २५) हैं तो ६०० के १५) बिलकुल ही ठीक हुए। लो० का तो लोग ग्रधिक मूल्य बतलाते हैं।

दर्शन कहते हैं। चिति और चित् और चेतना और चैतन्य प्रायः एक ही हैं—यहाँ चित् से चिति अधिक पोएटिक लगती है।—तुमको—चिति से कहना है। वे=श्रुति, या, वेद। २२८ (ii) चतुर्वर्ग=धर्म अर्थ काम मोक्ष। इनको व्यक्ति दृष्टि से न देखकर सामूहिक या सर्व दृष्टि से आँका जाए। (२३२) आनन्द सर्वोच्च श्रेणी और अन्न निम्नतम श्रेणी चिति की है। अन्न कोशों की सर्वोच्च तथा निम्नतम श्रेणी। बीच में प्राण मन इत्यादि। २३५ (ii) विभिन्न नामों में एक ही सत्य के विभिन्न गुण व्यक्त या स्थित हैं। (iv) विज्ञान करण=इनर इन्स्ट्रूमेंट और अन्तःकरण।—*सृष्टि स्वयं बन जाते ठीक नहीं—बल सृष्टि* पर देना नहीं स्वयं प्रभु के बनने में देना है वैसे भी इस छंद में ऽ।ऽ (सृष्टि-स्वयं) कॉम्बिनेशन से ।ऽऽ। काम्बिनेशन अधिक मधुर लगता है।—भिन्न रविहि-तोयः। प्रश्न समाप्त। तुम बड़े बुद्धिमान हो—थोड़े ही प्रश्नों से काम चला लिया। जब २३६ से २४७ तक—२३९ (iii) प्रग्रह=रश्मि=लगाम। राजधानी वालों को तो सबको मुँह पर लगाम रखनी पड़ती है। २४०—उपनिषद् कहते हैं रवि लोक चक्षु है, पर उसे आँख के रोग कभी नहीं होते—या वह ठीक २ देखने में भूल कभी नहीं करता इसी प्रकार आत्मा जो चेतना गगन का रूप है वह संसार का परिचालन करने पर भी भव दुःख से लिप्त नहीं होती, *उससे बाहर या ऊपर तटस्थ या निःसंग रहती है। २४१ (i) जिस प्रकार* धरती और देह औषधि में और रोम राजि में परिणत हो जाते हैं और मकड़ी जाले में बदल जाती है—एक-दूसरे का अंग होने के कारण उसी प्रकार अक्षर क्षर बन जाता है अक्षर मकड़ी से क्षर जाल—अक्षर रूपी देह की क्षर रोम राजि० २४४ (१) तुम=सृजन चेतने के लिए। २४७ (iv) विकास श्रेणियों की प्रतीक तुमने ठीक लिखी हैं। सब प्रश्न समाप्त। अब बाह्य परिवेश समाप्त हो गया। अतश्चैतन्य बड़ा आसान है। तुमने इस चैप्टर पर अपने *क्रिटिकल रिमार्क्स नहीं लिखे। अवश्य लिखा करो। और सब ठीक है। आशा* है तुम सब लोग प्रसन्न हो!

सबको बहुत प्यार—

साईंदा

९४

इलाहाबाद
५-२-५४

प्रिय बच्चन

गई रविवार से आगे की सोपान पर लिख रहा होगा—उसकी मुद्रित प्रतिमा का ... जीवन का नया दिग्दर्शन—मेरे विवाह सम्बन्धी ... की रिपोर्ट कर रहे हैं—लिखा है गांधीजी की मृत्यु के बाद मैं उदयशंकर के साथ गया। और—यह कोई नई बात नहीं है—न उसमें कुछ सार ही है। अब सोपान २५३-२७० तक।—२५३ (ii) कमे—इसा का सर्वोत्तम मानव रूप।—२५४ (i) कला से कहता है स्वीय और अस्वीय मूल्य दोनों ही मानों तुम्हारे दो हाथ हैं जिनसे तुम सत्य का स्वरूप सँवारती हो। तुम सुंदर-असुंदर स्वीय अस्वीय को अतिक्रम कर सत्य शिव मय भू शोभा सार रचो। २५५ (i) संस्कृति पीठ नौर में स्थापित है—किसी विशेष स्थान का वातावरण तो उसमें नहीं। किसी भी बड़े नगर के उपकंठ (सबर्ब) में रखा जा सकता है जहाँ गंगा जी हैं। २६३—रत्नकेन्द्र में विभिन्न धर्मों संप्रदायों के अधिक संस्कृत लोग हैं जो विगत से बँधे नहीं हैं न किसी न्यू फैंगिल्ड मोड के लिए कमिटेड हैं। २६५ (ii) वह सगीर जिसके रोमों में गंगा तट के निकट होने के कारण सन कण या सीकर गुँथे हुए हैं। २६६—छूट गई की भाँति पुरातन पंथी दृष्टिकोण है जो समृद्धि के विमुख है—वह विस्तृत होगा और मानवता रूपी ऊँट अपने बहिरन्तर वैभव सहित मान्य हो सकेगा—स्वर्ग में स्थान पा सकेगा—इस ए धरा स्वर्ग में—पिछले धर्मों के स्वर्ग में नहीं। बाइबिल ही से रूपक लिया है।

प्रश्न समाप्त हुए। गर्मी है ही यहाँ। आजकल डा० गोपाल रेड्डी आए हुए हैं। कल आकाशवाणी में भी यों ही मिलने आए थे। रात्रि को उन्हीं के साथ उनके आतिथेय मि० माथुर के यहाँ डिनर भी था—फ़िराक़ महादेवी भी

है। चीफ जस्टिस देसाई साहब भी। मार्क्स का लेख पढ़ो तो अपने रिऐक्श
लिखना। हां तो अगर लोकायतन को नहीं भी पढ़े तो (तब) भी उनके विरु
ही लिखते। उनकी मनस्थिति से मैं परिचित हूं। वे भी इस युग के ढेर दा
कृतियों के परिवार के रेंगने वाले प्राणियों में हैं, जो आत्म रक्षा के लिए तो
पंकिल दलदल सिर उससे ज्यादा उठाए रहते हैं—बहु विधा कर्दम
लिपटे सब !

यह पिछले ही पत्र में लिख चुका हूँ कि मई भर प्रयाग राज में ही रहूँगा-
जून में रानीखेत।

आशा है सपरिवार प्रसन्न हो—

बहुत प्यार—
सारदा

९५

इलाहाब
७-५-६

प्रिय बच्चन,

तुम्हारा ४-५ का पत्र। उसके का दंड तुम्हारे जैसे उद्दंड व्यक्ति के लि
क्या हो सकता है? तेजी जी की सेवा किया करो—यही दंड न्यायालय
तुम्हारे लिए निश्चित किया गया है। अब लोकायतन २३०—२८५—अब ज
ही आधा हो जाएगा। पूरा कर लेने पर गुरु दक्षिणा तुम्हें सोचनी पड़ेगी।
वह होगी तुम्हारी निष्पक्ष सम्मति—बिना रत्ती भर भी संकोच के। २
(iii) नारी को त्वचा के पिंजर में बंदीकर उसे असूर्यंपश्या बना देना इत्या
देखो पृष्ठ—६५-६६ श्री के विचार—यही जीर्ण युग्म मूल्य हैं। २७२ (
स्नान के बाद भोजन आदि इज अंडरस्टुड—इस उम्र में भी तुम्हारा ध्यान
ही पर रहता है यह अच्छा नहीं। २७३ (iii) पद्‌दल पद्म के दल छः ज्ञ

न्द्रिय इनक्लूडिंग माइंड । कबीर के अष्ट कमल अष्ट चक्र हैं मूलाधार से सहस्र तक । मैं मानस चैतन्य की बात कह रहा हूँ—समन्वित हो मानस चैतन्य कबीर चित् सोपान की ओर संकेत कर रहा है जिस पर योग पथ से म आरोहण करता है । २८० (i) भय बल प्रयोग—सहृदय शक्ति प्रयोग—यों ध्येय और परिणाम शुभ हो तो क्यों वर्जित हो । प्रारंभिक मन ही शैशवास्थ शैशवावस्था के लिए आवश्यक हो सकता है—फिर भय बिन होत न प्रीति ! (ii) अनुरक्ति विदेह होकर, देह मोह या रूप मोह से शोभा प्रेम बनकर रुद्ध प्रीति मुक्त तथा व्यापक बनती थी । २८३ (iii) वीणा सितार आदि स्ट्रिंग इन्स्ट्रूमेंट्स का नाम तत है । वंशी आदि को सुषिर कहते है—जो श्वास से बजते हैं । झाँझ मंजीर को घन कहते है और मृदंग आदि को आनद्ध । तुम भी आनद्ध के अन्तर्गत आते हो, जिससे ठोक पीटकर काम लिया जा सकता है ।— तुम्हारे सब प्रश्न समाप्त हुए । लगता है अब तुम्हें लोकायतन अधिक कठिन नहीं लग रहा है—इधर के सब प्रश्न तुम्हारे बड़े ही सरल होते हैं ।

यहाँ भी नयी कहानी पर एक साहित्य गोष्ठी हुई थी जिसमें विशेषकर नए लेखक ही बोले थे ।—अश्क जी को छोड़कर । धर्मयुग में विवरण पढ़ा होगा । तुम्हारा प०प० (पत्र के लिए धन्यवाद) का किस्सा भी धर्मयुग ही में पढ़ा । गर्मी यहाँ भी बहुत है । ग्रीष्म ने तो अपनी राजधानी के रूप में प्रयाग ही को चुना है, तुम्हें मालूम ही है, इस बात में दिल्ली होड़ नहीं ले सकती ।

दुष्यंत का काव्य नाटक अभी नहीं मिला । धर्मयुग का १० ता० का अंक देखा होगा । कु० सुरेशसिंह का संस्मरण है, कालाकाँकर की बड़ी याद आई । मेरी भी दो रचनाएँ है । २४ ता० के इलस्ट्रेटेड वीकली में मि० रमन के साथ मेरी इंटरव्यू भी निकलने वाली है—शायद लोकायतन पर भी एक लेख—

पहाड़ मई ३० को जाऊँगा उससे पहिले शायद ही संभव हो । मैंने सोचा था तुम मई के लिए मुझे आमंत्रित करोगे पर तुम्हारा अपना ही नौकर का रोना है, मैंने अपने को भी आफ़र किया था, तुम इस पर भी चुप्पी साध गए । अब लाचार होकर प्रयागराज ही में तपस्या करनी है ।

१५ मई को द्विवेदी जी के कांस्य वक्ष का उद्‌घाटन करने मैं नागरी प्रचारिणी सभा के आग्रह पर काशी जा रहा हूँ । १४ की शाम को कार से जाकर

२५ की शाम को कार से लौट आऊँगा। शेष समाचार सामान्य।—शीला के [illegible] चल रहे हैं।

सबको बहुत प्यार—

गाईंदा

९६

१८/७ बी०के०जी० मार्ग,
इलाहाबाद
६-५-६४

प्रिय बच्चन,

प०घ० यह ५/५ के पत्र का उत्तर है। सोपायनन अब तुम्हें हस्तामलकवत् हो गया है। दूसरे संस्करण के लिए तुम अपने विस्तृत सुझाव पूरा करने पर देना—नए संस्करण में सध०(सधन्यवाद) इनकारपोरेट कर लिए जाएँगे। अब २८५—३०० तक।

२८८ (*ii*) तुम्हारे नतशिर सम्बन्धी सुझाव के सम्मुख नतशिर हूँ। २८९ (*i*) दूरान्वय हटाकर सन्तुलन प्राप्त कर लिया जाएगा—और भी कहीं दूरान्वय हो तो बताना। २९० (*iii*) होता यहाँ क्रिया है—प्रकृति का सार प्रेम है और स्त्री पुरुष पृथक् नहीं (जैसे हमारे सामंती समाज में हैं) एक हैं—जीवन का यह सत्य उन्हें धीरे-धीरे उपलब्ध होता। २९१ (*i*) विगत द्वन्द्व मूल्यों ने मनुष्य के मनुष्यत्व को जो स्त्री-पुरुष में या लिंगों में विभक्त कर दिया था जिसके कारण एक-दूसरे से मिलने में संकोच लज्जा का अनुभव करते—वह भावना—लाज भावना उन्नमित हो गई—उन्नत एवं विकसित होकर मुक्त होने से। प्रेम के सिर का काँटों का ताज स्वर्गिक पुष्पों के मुकुट में बदल गया। २९९ (*ii*) अनूढ़ा जो ऊढ़ा न हो। बिना

ब्याही स्त्री जो किसी पुरुष से प्रेम रखती हो। तुम बिना ब्याही लड़की होते तो तुम्हारी निश्चय यही स्थिति होती। प्रश्न समाप्त।

बंटी जी के जन्म-दिवस पर उनको बहुत-बहुत प्यार, शुभाशीर्वाद और बधाई। अपने पिता से बहुत बड़ा आदमी हो। माता-पिता की सेवा करे—विशेषतः माता की। आज के युग में सच्चरित्रता (का) मूल्य पहचाने। मन से मैं भी समारोह में उपस्थित रहूँगा। ट्विस्ट डांस भी करूँगा। कोका कोला भी पीऊँगा—आइस-क्रीम तो कैसे छोड़ सकता हूँ—सो बंटी जी को बता देना। लोकायतन की रिव्यू इत्यादि कहीं नजर आए तो मेरे लिए कटिंग भेज देना। वैसे मुझे अपनी कृतियों से लिखने तक ही प्रेम रहता है। धर्मयुग के १० मई के अंक में मेरी दो कविताएँ निकली हैं—कैसी लगीं! एक माध्यम में भी निकली है। गर्मी का प्रकोप धीरे-धीरे बढ़ता जा रहा है। तुम तो गर्मी में प्रसन्न रहते हो—एक और जन्तु भी रहता है यहाँ उसका नाम लिखूँगा तो तुम नाराज हो जाओगे। जहाँ तक कार्यभार ढोने का सवाल है वहाँ तक दोनों ही में बड़ी समानता है।

तेजी जी को बहुत याद कर देना। मेरे हिस्से की सब कुलफियाँ जमा रखें, जुलाई-अगस्त मे आकर खाऊँगा।

सबको बहुत प्यार—

सुमित्रानंदन पंत
साईंदा

९७

१८/७ बी०के०जी० मार्ग,
इलाहाबाद
११-५-६४

प्रिय बच्चन,

प०घ० तुम्हारे आभारीपन से मन भारी होने लगता है। इतना आभार प्रकट करने की बात नहीं। १०० पृष्ठों की १०००) फीस है, पुस्तक पूरी होने पर चेक भेज देना वह आभार से अधिक ठोस होगा। अब लोकायतन ३०१—३२५ तक।—३०३ (ii) चाँद ने भू को कलंक दिया यह कल्पना है, ग्रहण के समय पृथ्वी की ही छाया चाँद पर पड़ती है। ३११ (i) नक्षत्र मानों दिव्य के रागराग हों—उत्प्रेक्षा है। दिव् या दिव्य का अर्थ ज्योति या ब्रिलिएन्स भी होता है। ३१३ (iii) अष्टांग योग=यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान, समाधि।—थोड़ा भारतीय दर्शनों का बोध प्राप्त करो। ये छोटी-छोटी बातें तभी स्पष्ट होंगी। ३२४ (i) ऐसे प्रश्नों के लिए दर्शन-शास्त्र का अध्ययन करना ठीक है—बारीक बातें किसे याद रहती हैं? षोडश पदार्थ हैं—प्रमाण, प्रमेय, संशय, प्रयोजन, अवयव, दृष्टांत, सिद्धान्त, तर्क, निर्णय, वाद, जल्प, वितंडा, हेत्वाभास, छल जाति और निग्रह-स्थान—जब तक कोई न्याय के कांटेक्स्ट में न पढ़े ऐसे प्रश्न निरर्थक प्रतीत होते हैं।

चार प्रमाण हैं प्रत्यक्ष, अनुमान, शब्द-प्रमाण, उपमान-प्रमाण—इनके कई उपभेद हैं। एटसेट्रा. शेष ऐसे प्रश्नों का उत्तर नहीं दे रहा हूँ क्योंकि वह व्यर्थ है, तुम्हें उनसे कोई लाभ नहीं होगा जब तक दर्शन की पृष्ठभूमि में न पढ़ो—(iii) अविद्या और अस्मिता का बोध। (ii) तत्त्व=एलिमेंट शब्द सत् और शाश्वत रूप।—वाचस्पति मिश्र का समय सम्भवतः ९०० ई० के आसपास होगा। ठीक नहीं कह सकता। प्रसिद्ध दर्शनज्ञ। जयन्त भट्ट भी इन्हीं के समकालीन या कुछ बाद में रहे हों। प्रसिद्ध टीकाकार। एटसेट्रा. ३२५—(i)

कणाद के षट् पदार्थ—द्रव्य, गुण, कर्म। सामान्य, विशेष और समवाय।—लेकिन जब तक इनका विस्तृत विवेचन तुम न पढ़ो नाम रटने से लाभ ?—प्रश्न समाप्त। ३२५—३५० तक। (३२५) (v) कारण=बाह्य अंतःकरण—पंचभूत=पंचतत्त्व एटसेट्रा. ३२६ (i) प्रकृति अंध (ज्ञान शून्य) पुरुष पंगु। लौह चुम्बक परस्पर आकर्षित होते हैं प्रकृति पुरुष की तरह पूर्व संस्कार या प्रालब्धवश (प्रारब्धवश ?)। पुरुष ही को चुंबक कहना ठीक होगा। ३२६ (iii) पाँच प्रवृत्तियाँ हैं प्रमाण, विपर्यय, विकल्प, निद्रा, स्मृति। (iv) अष्टांग बता चुका हूँ (i) शबर स्वामी के मत को शाबर मत कहते हैं। शाबर भाष्य। (vi) उर की वृत्ति विएशन ऑफ माइंड. (३३४) गुप्त ओकल्ट.—सूक्ष्म ओकल्ट फोर्सेज देवों का गुण और धर्म। महापुरुषों के सहायक के रूप में विटप खग पशु भी उन्हें विकाज ऑफ देयर ओकल्ट नॉलिज पथ संकेत करते हैं। राम भी वन में भटक कर लता विटपों के पास सीता का रास्ता पूछने जाते हैं। ३२५—वृष पुरुष=उद्दण्ड अदम्य पुरुष। बैल सा—जैसा कौन है तुम स्वयं समझ लो। ३३६—उपमा

> कालिदासस्य भारवेरर्थं गौरवम्
>
> दंडिनः पदलालित्यं माघेसति त्रयोगुणाः।

३४३—मंडन मिश्र ही मीमांसाकार उवेक बने थे उन्हीं का उपनाम जैसे हरिवंशराय का बच्चन। ३४६ स+आशंक=साशंक। ३४९ सापेक्ष का अर्थ लिख चुका हूँ। वर्ल्ड ऑफ रिलेटिविटी। 'राग हो' ही है। रागद्वेष मुक्त होकर चरितार्थ बने। जीवन का सत्य जन्म-मृत्यु से परे द्वन्द्वातीत सत् और परात्पर रस में है। जो स्वयं में पूर्ण और अद्वितीय है—बहुत बोर किया तुमने। बहुत प्रश्न व्यर्थ के हैं—आशा है प्रसन्न हो। तेजी, तुम्हें बहुत प्यार—

साईंश

एर है—जाति वर्ण व्यर्थ हैं। यह केवल आर्गोनेशन पीरियड्स का देशकाल का संयोग है (देशकाल कांकर नहीं हो गये थे) कि मनुष्य पृथक्-पृथक् बँटा हुआ है। २७५ (i) मनगढ़ द्रव्य रॉ मैटिरियल टू फीड द मशीन—जैसे रुई कच्चा लोहा इत्यादि। प्रश्न समाप्त। जिस सच्चाई का सबूत मांगते चाहिए उसकी अभी जरूरत नहीं। न उसे उठाना चाहिए। काव्य काव्य है, निमित्त को]

छोड़कर व्यापक मनुज की पृष्ठभूमि में इसे देखना ठीक है। इस देश में अविद्या तंत्र ब्लैक मैजिक का दुष्परिणाम दिखाया है। पृ० ३७६—४००तक।—३७६ (i) विश्लेषण ठीक है रेडिएशन—प्रेम की भूख। ३८२ (iv) पावर का कुछ के हाथ में रहना ठीक नहीं—डिसेन्ट्रेलाइजेशन इज अनिवार्य (है)। वैल्थ का डिस्ट्रीब्यूशन। शक्ति और गुण में (क्वान्टिटी क्वालिटी में भी समृद्ध हो) समता आने से ही विकास सम्भव है। अर्थात् क्वालिटेटिव ग्रोथ कुछ ही की हो शेष राशि—जनता अपढ़ कूढ़ इल प्रोवाइडेड रहे यह विकास नहीं कहा जाएगा। ३८५ (iii) भावी मानव के सामने विगत युग का मानव कपिवत् है—जैसे ? तुम्हें स्वयं अपना नाम सूझेगा। ३८६ (i) द्वन्द्वमय प्रेम—सेक्सुअल लव—युग्म प्रेम। देखो ग्राम्या द्वन्द्व प्रणय पृ० ८६। और भी पहिले कई बार प्रयोग कर चुका हूँ। ३८७ (ii) ह्रोन—फ्रांस स्विजरलैंड (स्विटजरलैंड ?) की नदी। (iv) तक्ष कला = वुड वर्क सूचिका कला नीडल वर्क—(iii) ऋभु = देवताओं के शिल्पी। ३९४ (iv) 'वेमिन' प्रिन्टर्स डेविल 'वेनिस' नगर है। ३९५ (ii) सतुलित, सभ्य सौम्य सविवेक होने के कारण हृदयहीन न होने तथा दूरदर्शी होने के जातीय गुणों के कारण अंग्रेजों को विप्लव युग की टेक—आधार माना है—वे अनर्थ नहीं होने देंगे। कूटनीति निपुण होने के कारण ठीक सलाह देंगे।

तुम्हारे सब प्रश्नों का उत्तर दे चुका। मि० माचवे ने जो मेरे जीवन-संबंधी फ़ैक्ट्स डिस्टोर्ट करके दिए हैं वह उनके विटास और मैलिशियस होने के कारण। पुअर माचवे ! खैर छोड़ो—

आशा है तुम सब लोग प्रसन्न हो। २५ को जाना यहाँ से निश्चित हो चुका है। पहाड़ पहुँचने पर पता दूँगा। जाने तक लोकायतन समाप्त कर सको तो बड़ा अच्छा हो। जल्दी में श्रम अधिक पड़ेगा फ़ीस भी बढ़ जाएगी—डेढ़ गुना।

बहुत प्यार—

साईंदा

९९

इलाहाबाद
१४-५-६४

प्रिय बच्चन,

तुम्हारे १०-११-१२ के पत्र कल मिले मैं आज तीसरे पहर बनारस द्विवेदी जी के शती समारोह मे जा रहा हूँ—कल शाम लौटूंगा। डा० नगेन्द्र को लो० मे दमित वासना अवश्य मिलनी होगी—पिछली समस्त मानव संस्कृति दमित वासना की संस्कृति रही है। लो० मूलतः उन्नमित वासना का काव्य है। मैंने मनुष्य के उच्चतम संस्कृत उपभोग (उपयोग ?) के लिए प्रेम को कायिक पंक से उठाकर मुक्त कर दिया है जिससे उसकी लँगड़ाहट चली जाय। लो० लिख-कर मैंने पिछली मध्य युगीन चेतना के निष्क्रिय सिवार सड़ांध भरे तालाब मे एक बड़ा सा ढेला फेंक दिया है, जिससे खलबली तो धीरे-धीरे अवश्य ही मचनी चाहिए। यह पिछली सदियों के अंधकार के साथ नयी मानव चेतना के प्रकाश का अज्ञात युद्ध है—दीर्घकाल तक जारी रहेगा। कौन प्रकाश के पक्ष मे है, कौन अंधकार के—पता चल जाएगा। बहुत सोच समझकर ही मैंने लोकायतन को उठाया है—यह एक छोटासा उपक्रम अपने मे है, पर विकासकामी है। खैर यह तो कल की बातें हैं। लोग विधाना की सृष्टि के बारे मे इतनी बातें कहते है—लो यह तो कवि की सृष्टि है—विधाना भी कवि ही है और सृजन कला के नियम एक ही हैं, अनेक गहन गूढ तत्व लो० के भविष्य लोक मे अंतर्हित है—मेरी अनुभूतियो का सार सत्य।—अब ४०१—४२५ तक—४०५ (iv) अधिवास=स्थायी आवास। मूल स्थान। ४०९ (ii) प्रेस की भूल। हो होना चाहिए। ४१३ (iv) यह जापान की दंत कथा है—सूर्य देवी ने चार ओस की बूँदें घुमाकर चार मुख्य द्वीपो को (जापान के) जन्म दिया। ४१५ (i) सौरी=सूर्य देवी (iv) ऐसा लगता है कि भू सिन्धु धधक उठे हो—कल्पना की आँखों से देखता है विनाश की तैयारियो का परिणाम।

दौलता=ऐज इफ़, इट सीम्स, ४१६ (i) प्रेम वंशी का नाम है। देखो पृष्ठ १२—'प्रेम नाम वंशी जनप्रचलित' ! तसल्लुस बच्चन नहीं वंशी। (iii) कवि के पास ईश्वरदत्त दृष्टि थी। ४१७ (iv) चिन्मयानन्द ने केवल उसके मन को उबारने में मदद की—व्रण पीछे मिटा। ४२३ (iv) काम जब तक रस शुद्ध नहीं होगा आध्यात्मिक संस्कृतिक विकास संभव नहीं। प्रेम यदि पुष्प धनु काम ही बना रहे रूप का सौन्दर्य (जो नारी देह में सर्वाधिक विकसित हुआ है) तीर (फुलबाण) सा चुभे यह अच्छी स्थिति नहीं। एटसेट्रा।—४२४ (i) षड् रिपु वही तुम्हारे चिर परिचित मित्र हैं जिनका तुम (तुमने ?) काम क्रोध इत्यादि के रूप में चर्चा की है। (iii) प्रेम=वंशी। यह प्रतीकात्मक है—जो बारह वंशीलय की व्याप्ति है वह अंततः प्रेम है।—अब ४२७—४५० तक। ४२८ (iii) प्रेम की भूल—यौवना होना चाहिए। ४३० (ii) मुद्ग=मूंगा कोरल. प्रवाल =पल्लव आल्सो कोरल. (iv) कांक्षाएँ ठीक है। ४३१ अंतिम पद—'जन ने' इज करेक्ट—'से' इज प्रिन्टर्स डेविल. नृत्य मुद्राओं के आलिंगन बाँधे। हाथों से आलिंगन की मुद्रा बनाई। ४३२ पंस्बंध=प्रकृति पुरुष का समागम, जिससे सृष्टि बनी। ४३५—पाप क्या है ? अंत: स्खलन और भेद-बुद्धि जो 'तू मैं' देती है ऐज अपोज्ड टु अभेद भाव।—वह भावों का ऐश्वर्य हायर ऐंड सब्लीमेटेड इमोशनल कन्टेन्ट जो उसे केन्द्र में मिलता था, अन्य देशों में नहीं मिला—क्योंकि वे पिछली चेतना में ग्राउन्डेड हैं—वर-वरदान। स्वर्ग चेतना का वरदान लिए हुए था। ४४८ खर्चीला रिलेटिव वर्ड है—तुम कंजूस न होते तो तुम्हें पंजाबी युवती (तेजी) खर्चीली नहीं लगती। ४५०—पट सांस्कृतिक=परदे की संस्कृति—दक्षिण में परदा नहीं—इसका चटकीले रंग से कोई सम्बन्ध नहीं। चटकीला घूँघट भी हो सकता था, पर वहाँ नहीं है। ४५०—शिल्प द्वारा मुक्त हस्त वितरित लावण्य। कला ने मुक्त हस्त होकर लावण्य का वितरण युवतियों के अगों में किया था।—पृ० ४५०—४७५=४५१ (vii) नवल जैव मूल्य—न्यू बायोलोजिकल वैल्यूज़ आफ फ़ायड एटसेट्रा, ४५२—न्यस्त स्वार्थ=स्थापित स्वार्थ वैस्टेड इंटरेस्ट ४५६—युवतियों की स्थूल देह से उनका सूक्ष्म भाव शरीर निखर कर अपनी उच्च सौन्दर्य गरिमा में ध्यान आकृष्ट करता था।—रुक्मिणी कहते हैं 'इक्ज़ोरा' को—जो एक बुश होती है—लाल, पीले, गुलाबी रंग की। ४५८ (v) प्रीति

की कंठ ध्वनि जो प्रणय की स्रोत सी थी। ४५९ (ii) उसके जघन शोभा-पादप की आत्मा (आभा ?) के लिए मूल (जड़) स्वरूप थे। शोभा तरु आत्मा जघन मूलों से ही सिंचित उनकी उच्च विकसित रूप थी एटसेट्रा. (iv) अन्वय का एक ही अर्थ है—परस्पर सम्बन्ध—मेल। पिछली मान्यता के अनुसार आत्मा और इन्द्रिय जीवन में विरोध है। =प्रीति शंकर का प्रेम प्योर साइकिक लव है—वह विश्व कल्याण के भी स्वप्न देखता है। आस्था सुन्दर के प्रेम में वाइटल टच भी है। अजित कुसुम के प्रेम में अजित देह तृषा से विवश हो उठता है—केन्द्र के कार्य के लिए तीनों ही प्रकार बाधक हैं—केन्द्र प्रेम का अनुभव लोक रचना या सौन्दर्य सृजन में करवाना चाहता है—इसी से वशी [सी पेज ४८२ (v)] हरि को केन्द्र में राग भावना की वर्तमान स्थिति अवगत कराता है ऐंड स्टूडेन्टस् ऑर सेन्ट टू विलेजेज टु डू क्रिएटिव वर्क एटसेट्रा. ४६५—त्रिदिव= स्वर्ग। ४६५ अन्तिम कवि वंशी की रस प्रतिभा (प्रतिमा ?) पावक। ४६६ (i) भूमिजे=गत सीता संस्कृति की नारी। ४६७ (vi) सुन्दर आस्था से कहता है। ४६९ (iv) शोभा के मार्ग में तद्गत। ड्रान इन्वर्ड बाई हायर ब्यूटी —४७५ (iv) अपराजिता लता=ज्योत्स्ना—ब्लू ऐंड व्हाइट. ४७० (iii) आस्था सेज—मेरे तन-मन में बिम्बित अन्त. सुषमा ही तुम्हें आकर्षित कर रही है—पर जीवन हृदय को मोहित नहीं करता।

समाप्त—बहुत प्यार—

गार्डदा

१००

इलाहाबाद
१६-५-६४

प्रिय बच्चन,

१४ की शाम काशी गया था कल शाम कार से लौट आया—सारनाथ भी देखा—द्विवेदी जी की कांस्य मूर्ति का अनावरण किया। दलित कामना का

होगी पर वह क्रिएटिव न होकर एनालिटिकल ऐन्ड फ़िलोसोफिकल अधिक रही होगी और अधिक विश्लेषण तथा अघोरपंथी साधना से वह शुष्क हो गई थी ऐसा लगता है। बुद्धि तत्व के आधिक्य के कारण हृदय तत्व सूख गया था। और भी कारण हो सकते हैं। ५११ [अंतिम पद] प्रतिभा के रवि, स्वाभिमान के सूर्य एटसेट्रा अस्तोन्मुख रवि, गजेन्द्र गर्जन और भियरली इमेजेज. ५१३ (अंतिम) छत्रक वन एटसेट्रा. यह गुरु के फ़ालोअर्स के लिए कहा है।—भगरूम ग्रोष कहते हैं। ५१४(v-vi) में तो स्वयं भुक्त भोगी हूँ—हो सकता है अन्यकांसस में तुम्हारे आर्टिकल का भी याद हो। ५१६ (अंतिम)—ये सब जीवन (आइडियल लाइफ़) के विशेषण हैं। (सी vii स्टेन्जा) प्रभु शोभा जीवन का शाश्वत स्वरूप, रस प्रहर्ष शोणित एटसेट्रा. ब्रह्म ज्ञान एटसेट्रा उसके (लाइफ के) मणि सक्र—वाइटेलिटी (प्राण) जीवन की श्वासा है, जड़ चेतन हाथ पाँव हैं—सहज स्फुरण (इन्ट्यूशन) जिसका सक्रिय चित् मन है।—५२३ (iv) प्रभु=प्राण तत्व। प्राण।—प्रश्न समाप्त।

सेवस ऑब्सेशन जो सदस्य अनुभव करते हैं उन्नयन के पथ में उसकी चर्चा मैंने स्वयं ४८० पृष्ठ (vii—viii) छंदों में की है। तुम्हारे पिछले पत्र का एक प्रश्न रह गया था ४७५ पृ० का (iii) पद गलती से वहाँ आ गया है यह होना चाहिए ४७४ पृ० के तीसरे स्टेन्ज़ा के बाद चौथा स्टेन्ज़ा यह स्वयं क्लियर है। टाइप कराने में कुछ स्टेन्ज़ास फिर टंकित कराके चिपकाए गए थे क्योंकि वे अशुद्ध टाइप हुए थे। चिपकाने में जल्दी में भूल हो गई।

लघु तुकों के बारे में भी तुमने पूछा था—इसका उत्तर "उत्तरा" की भूमिका में मिलेगा। लम्बे तुक मुझे कृत्रिम लगते हैं—रूसमॉन लाइन्स का जो भी दब जाता है।

नरेन्द्र से जो बहुत हो उसके बारे में लिखना। मैं २५ को जा रहा हूँ। तुम २२-२३ तक सब प्रश्न पूछ लो। शेष फिर—

सबको बहुत प्यार—

सुमित्रा

न्सल फिन. से दर्शनों का जन्म हो रहा है। वर्टिकल दृष्टि की आवश्यकता है। आज के युग जीवन की अभिव्यक्ति के भीतर से युग संकट का समाधान पाना सम्भव नहीं। ५४६ (i) मैनाक आदि विज़न की ट्रूथ भी हैं पर कलात्मक अभिव्यक्ति के लिए कल्पना प्रतीकों की भी सहायता ली गई है। मैनाक तो अनरियलाइज़्ड इनर ट्रूथ का प्राचीन प्रतीक है ही। मैनाक=सत्ता ऑफ इनर कान्शसनेस।—अब ५५०—५५५ तक=जहाँ चिति रिलेटिव अर्थ में इस्तेमाल होती है ऐज़ अपोज़्ड टु जड़ वहाँ वह अपूर्ण है—जड़ चित् से परे जो परात्पर चैतन्य है वह पूर्णों का पूर्ण है। ५५२ (iii) चिद् अणु=कान्शसनेस के अणु का विस्फोट—इन्डीकेटिंग इनर ग्रोथ ऐंड चेन्ज—चित् को अणु का रूप देने का प्रश्न नहीं उठता—चदणु (चिदणु) मोनाड्स हैं ही—इन्डिविडुअल सोल्स—५५३ (ii) ऑल एवोल्यूशन इज़ ड्यु टु इन्वोल्यूशन—निर्वतित गोपन क्षण=इन्वोल्वड सीक्रेट मोमेंट—प्रतिम-वृन्त सिपर=स्पाइरल—५६४ (ii) नर···की हृदय मुक्ति जो अभी तक (गत युगों में) शंकित थी—जिसके प्रति शंका थी अब स्वर्ण प्रीति में परिणत होती है (प्रतिम) प्रीति अब काम से भी सबल रस बनकर मानव आत्मा को धारण करती थी। उसकी स्वर्गिक सौरभ से सम्मोहित मानव हृदय (उर) अपनी ओर सब कामनाएँ प्रीति को (उसको) अर्पित करता था। ५६६ (i—iii) स्त्री नर के प्रेम का स्वर्गिक पावक। वह=स्त्री नर का पवित्र प्रेम। ५६८ (iii) रिपीट होने में कोई हानि है—टू स्ट्रेस ह्यूमन युनिटी ऐज़ इट एक्ज़िस्ट्स इन नेचर—५७१ (i) युग नर के हृदय में अन्धकार छाया हुआ है, वह शिक्षित भर था, संस्कृत नहीं—शिक्षा भी क्या बाह्य जगत् का ज्ञान (साइन्टिफ़िक नालेज एलोन) जड़ बाह्य जगत के रोमों से भर परिचित—बाह्य जगत की इनर मिस्ट्री से नहीं। रोमों=छिलकों से। एटसेट्रा प्रश्न समाप्त शेष फिर—

बहुत प्यार—
शांता

१०१

१८/७ बी०के०जी० मार्ग
इलाहाबाद
१६-५-६४

प्रिय बच्चन,

प०प०—ग्रब लोकायतन ५२५—५०—५२६।—५२६ (ग्रंतिम) 'व्रण' के कारण ही कवि को युग की कुत्सित वास्तविकता तथा मानव पतन का ग्रनुभव हो सका—इसलिए वह तब से उसके प्रति सदैव सजग है। ५३१ (*ii*) ग्रत्यय=मृत्यु। ५३८ (*iii*) हृदय चक्षु की पवित्र (साइकिक लाइट) ज्योतिस भू जीवन के पथ पर घिरे वासना के ग्रंधकार में पथ निर्देशन करती थी। जीवन कामयोनी इसलिए भी कि यह मैथुनी सृष्टि है। (ग्रंतिम) माणिक रवि उर। दिव्य मात्र चेतना के प्रकाश का द्योतक—लक्ष्मी जी रक्त ग्राभा से परिवृत रहती हैं। माणिक रवि उर उच्च प्रीति चेतना का प्रकाश केन्द्र। ५४१ (*vii*) कवि के उर में नहीं थी इसीलिए उसे छल नहीं सकी। प्राणों के स्तर से जो ग्राकांक्षाएँ उठी थीं उसी की प्रतीक ग्रप्सराएँ थीं। ५४२ (*vii*) 'ब्रह्मसूत्र, ग्रंथ से कोई तात्पर्य नहीं—ब्रह्म टु बी द थ्रेड सूत्र ५४३ (*ii*) भूमा या निखिल की संगति में व्यक्ति प्रकृति के विशिष्ट गुणों की सौरभ से युक्त ग्रब जीवन था। सामूहिक संगति बिठाने में व्यक्ति रुचि ग्रौर व्यक्ति के विशेष गुणों की उपेक्षा नहीं की गई थी। ५४६ (*i*) श्रीहरि=कृष्ण (*iii*) स्वभू प्रीति समग्रता से भी ग्रतिशय थी—टोटैलिटी को भी ट्रान्सेन्ड करती थी। स्वभू प्रीति जिसके सूक्ष्म रूप शिव शक्ति है। प्रेम के लिए द्विल चाहिए शिव शक्ति का। शक्ति जिसका परिणय शिव(कल्याण) से हो। (*viii*) एक छोटे से छोटा तृण भी सार्वभौम स्वर संगति में बँधा उसके ग्रानन्द से पोषित था। ग्राल एम्ब्रेसिंग हारमनी ऐंड युनिटी ग्रॉफ कांशसनेस. ५४७ (*v*) 'भावों' ठीक है ग्रॉफ न्यू ग्राइडियल्स ऐंड ग्राइडियाज़. ५४८ (*vii*) भू संकट का कोई होराईजोनल ग्रॉर रेशनल सोल्यूशन न पाकर ग्रस्तित्ववाद या एक्ज़िस०

टेन्शन फिन. से दर्शनों का जन्म हो रहा है। वर्टिकल दृष्टि की आवश्यकता है। आज के युग जीवन की अभिव्यक्ति के भीतर से युग सकट का समाधान पाना सम्भव नही। ५४६ (i) मैंनाक आदि विजन की ट्रूथ भी हैं पर कलात्मक अभिव्यक्ति के लिए कल्पना प्रतीकों की भी सहायता ली गई है। मैंनाक तो अनरियलाइज्ड इनर ट्रूथ का प्राचीन प्रतीक है ही। मैंनाक=सत्ता ऑफ इनर कान्शसनेस।—अब ५५०—५३५ तक=जहाँ चिति रिलेटिव अर्थ में इस्तेमाल होती है ऐज़ अपोज्ड टु जड़ वहाँ वह अपूर्ण है—जड चित् से परे जो परात्पर चैतन्य है वह पूर्णों का पूर्ण है। ५५२(vii) चिद् अणु=कान्शसनेस के अणु का विस्फोट—इन्डीकेटिंग इनर ग्रोथ ऐंड चेन्ज—चित् को अणु का रूप देने का प्रश्न नही उठता—चदणु (चिदणु) मोनाड्स हैं ही—इन्डिविडुअल सोल्स—५५३ (ii) ऑल एवोल्यूशन इज ड्यु टु इन्वोल्यूशन—निवर्तित गोपन क्षण=इन्वोल्वड सीक्रेट मोमेंट—प्रतिम-वृन्त शिखर=स्पाइरल—५६४ (iv) नर···की हृदय मुक्ति जो अभी तक (गत युगों में) शकित थी—जिसके प्रति शका थी अब स्वर्ण प्रीति में परिणत होती है (प्रतिम) प्रीति अब काम से भी सबल रस बनकर मानव आत्मा को धारण करती थी। उसकी स्वर्गिक सौरभ से सम्मोहित मानव हृदय (उर) अपनी और सब कामनाएँ प्रीति को (उसको) अर्पित करता था। ५६६ (i—iii) स्त्री नर के प्रेम का स्वर्गिक पावक। वह=स्त्री नर का पवित्र प्रेम। ५६८ (iii) रिपीट होने में कोई हानि है—टू स्ट्रेस ह्यूमन युनिटी ऐज इट एग्जिस्ट्स इन नेचर—५७१ (i) युग नर के हृदय मे अन्धकार छाया हुआ है, वह शिक्षित भर था, सस्कृत नही—शिक्षा भी क्या बाह्य जगत् का ज्ञान (साइन्टिफ़िक नालेज एलोन) जड़ बाह्य जगत के रोओं से भर परिचित—बाह्य जगत की इनर मिस्ट्री से नही। रोओ=छिलकों से। एटसेट्रा प्रश्न समाप्त शेष फिर—

बहुत प्यार—
साईदा

१०२

१८/७ बी०के०जी० मार्ग
इलाहाबाद
२१-५-६४

प्रिय बच्चन,

तुम्हारी शुभकामनाओं के लिए कृतज्ञ हूँ—तार भी बधाई का मिल गया था। क्या दिनकर जी लोकायतन के बारे में कुछ अपनी प्रतिक्रिया बता रहे थे ? अवश्य लिखना। अब लोकायतन ५७५—६०० तक।—५७६ (iv) नरवर गांधीजी। वंदी के लिए कहीं नरवर प्रयुक्त नहीं किया है, वह केवल कवि है—कवि वाल्मीकि का नवीन संस्करण, जिसमें मेरे जीवन के भी अनुभव व्यक्त हो सके हैं। ५८१ (vii) जिसमें=जिस भारत—आत्मा में मध्य युगीन भावनाओं की अहन्ता (मध्य युगीन दोषयुक्त नैतिक आध्यात्मिक दृष्टिकोण) नवीन युग संघर्ष में (जिसे आप लोकायतन में मूर्त पाते हैं) नवीन चित् रस बोध—नवीन चेतना सम्बन्धी रस बोध के सम्मुख पराजित हुई है। अर्थात् नवीन (भावी) विश्व संयोजन के लिए चेतनात्मक या आध्यात्मिक दृष्टि भारत ही को प्राप्त हो सकी है। इन्डिया एलोन कैन गिव दैट लाइट. ५८२ (i) जब नई लाइट ड्रान होती है तो वह अपने साथ अंधकार की प्रतिक्रियाओं को भी जन्म देती है—पिछली अहन्ता का विद्रोह और विक्षेप इस अंधकार के रूप में प्रकट होता है अत: विश्व संक्रमण का प्रकाश एण्ड तम अद (भ्रम ?) नव प्रहर्ष भरता (प्रकाश) और गर्जन करता (तम)। ५८४ (i) जग=जग कर, सचेत होकर। ५८५ (ii) दो पाटन के बीच में सगरा बचा न कोय में भी कबीर ऊपर नीचे के पाटों की बात कहता है। युग प्रवोध और नवीन चेतना का भी अत्यधिक प्रेशर पड़ता है—मॉरल दबाव।—अपचित कर—त्यागकर—उन्हें कमकर। ५८७ (ii) भर=मात्र। ५८६ (ii) भंगुर रूप सदैव ही भाव की अमरता का इच्छुक

होता है, और इन्कुर होने के कारण अनुचर। अर्थात् वैनिटी टूव ग्राऊ दाने देयर इम्मोरटेलिटी सन द फाइटिंग ऐंड मान्केंड फालोज द फाइटिंग—जहाँ फाइटिंग डाले को खाली करती है वहाँ फाइटिंग मृत हो जाती है, क्योंकि मंदिर बन जाता है। ५९६ (ii) आदर्श और यथार्थ (व्यवहार) के दो मुखड़े जिनके प्रतीक ज्योति और तम हैं। (iii) सत्य का धाम इटरनिटी है और सब गति की सीमा नहीं—बनई डेविल ऐंड मूवमेंट इज इन्फिनिट आदर्श और यथार्थ प्रगति (प्रोग्रेस) के दो चरण हैं। प्रोग्रेस केवल यथार्थ के बल पर (एज इट प्रेजेन्ट) या केवल आदर्श ही के बल पर सम्भव नहीं—ऐज इन (मोडिफिकेशन अध्याय)। ५९८ (i) आत्मा की इटरनिटी के शुभ्र स्पर्श से प्रेरित कवि प्रसाद को ट्रेजेडी के लिए स्थान ही नहीं दीखता है—आत्मा के सत्य की विजय भू-जीवन में अनिवार्य है। कम्पा रस का प्रेम भू समर्पण की कुंठा भर है। रसो वै सः आनन्द मूर्ति है। यह दृष्टि इतिहास के भूमि की नहीं है—इतिहास तो देश काल विधि (कार्डेशन) का प्रत्यावर्तन भर है। यह तो मन-विकास के क्षेत्र का, संस्कृति के क्षेत्र का सत्य है जो इन्टेलिजिबल प्रकार, अजेय है। जिस स्तर पर निर्माण कला केन्द्र करना चाहता है। ५९९ (iv) आत्मा के मूल्यों पर हँसना मन=आज के भू मन से तात्पर्य है सो (v) वर्तमान पृष्ठभूमि में जहाँ प्रत्येक देश अपने में सीमित है विश्व एका के प्रयत्न ढोंग हैं=सत्य कहते हैं सत् के भाव को। जब तक मनुष्य जो उसकी वास्तविकता-सत्ता है उसका प्रतिनिधि न होगा—जिस सत्य को अन्फोल्ड करने के लिए सारा सोत्साहन लिया गया है—भव ग्राह मोचन सम्भव नहीं। ६०० (v) अब सर्वांगीण उन्नयन के लिए मनुष्य को अपने साधना जनित कठिन कर्म (यत्न) श्रद्धार्पित करने है—पिछली दान त्याग की धारणाएँ और नेतागीरी आदि के मूल्य अहता द्योतक हैं—विनम्र होकर—विश्व चेतना के सम्मुख प्रणत होकर निरंतर कर्म रत रहना ही श्रेयस्कर है। (अंतिम) विवर्तन=चेन्ज ऐज द वैल्यूज इनर ऐन्ड आउटर आर इन ए स्टेट आफ़ फ्लक्स हेन्स दिस काम अधिका उत्सर्जन—बिकाज ऑफ साइकिक अन्वैलेन्स द वाइटल इज अपसेट. सब प्रश्न समाप्त। दूसरे लाल स्याही से लिखे पत्र का उत्तर अलग से दे रहा हूँ—

मीटिंग में आना संभव नहीं। मैं अपनी सम्मति देसाई साहब के पास भेज रहा हूँ।

बहुत प्यार—

सुमित्रानंदन

१०३

१८/७, बी०के०डी० मार्ग,
इलाहाबाद
२१-५-६४

प्रिय बच्चन,

तुम्हारा ६०० से ६२५ पृ० तक का पत्र मुझे नहीं मिला। यह लाल स्याही से लिखा—६२६—६५० पृ० तक के प्रश्नों का उत्तर है। ६३० (*iii*) अतुल भी एक नाम है जिसकी परिणति इस जन्म में ऐसी हुई। इसी प्रकार नाम रूपों का सत्य चेतना के अक्षय पथ में निरंतर विकसित होता रहता है। चेतना सागर में अतुल बुद्बुदवत् विलीन हो गया। अन्य नाम रूप भी अपना अभिमत प्राप्त कर विकास क्रम में उदय अस्त होते रहेंगे। चेतना सिन्धु ही मुख्य है—वैयक्तिक बुद्बुदों की परिणति गौण। ६३२ (*i*) चक्र दंत=कॉग ऑफ द व्हील (*iii*) वाह्य जीवन के साधन अब स्वल्प और सीमित हैं—पीपुल डॉन्ट अटैच इम्पॉर्टेंस टू देम—यंत्र अब सबके सुख के वाहन हैं—मशीन हैज़ बीन सोशलाइज्ड—यंत्र संस्कृति केन्द्र में बराबर रहे हैं—अब भू जीवन ही संस्कृति पीठ बन गया है। ६३६ (*i*) प्रभु रज—धरा धूलि को पहिले भी कहा गया है। इसीलिए धरती जो प्रभु पद रज है भू यौवन अब उसे अर्पित है—टू बिल्ड अर्थ लाइफ़ (*iii*) जग और ईश्वर दोनों की जननी। 'जग ही में संभव प्रभु दर्शन'—विकास सापेक्ष है—उस विकास को सिद्ध पराशक्ति करेगी इस लिए उसकी चर्चा स्वभावतः आ गई। ६३८—ऊरु कूप=नितंबों के गड्ढे।

१०४

१८/७ बी, स्टेनली रोड,
इलाहाबाद
२२-५-६४

प्रिय बच्चन,

तुम्हारा २० मई का पत्र—सो० ६५०—६८० तक। ६५४ (*i*) अब ग्रहं के स्थान पर ईश्वर बोध का केन्द्र बन गया था, वही व्यक्ति था वही विश्व। ६५६ (*ii*) विराम=विश्राम=आराम। ६५७ (*i*) काम (रति कर्म) अब आवेदाज नहीं रह गया था। सित संयम की शोभा से युक्त था—प्रजनन के हेतु। ६५६ (सं) देही=आत्मा, यन्त्री—द रियल सेल्फ ऐज सपोज्ड टू इंद्रियबद्ध जीव। ६६२ (*iii*) जैसे कपिला गाय स्वयं दूध देती है ऐसे ही भक्ति भी प्राणों के खूंटे से निरन्तर युक्त भगवत् रस का मन में संचार करती रहती थी। भक्ति का रंग भी कपिला से मिलता है। ६६२ (*iv*) हमारे देश में प्रचलित कर्म फलवाद की पृष्ठिभूमि में इस पंक्ति का अर्थ होता है कोई अच्छा-बुरा कार्य इसलिए अब नहीं करता कि वह पूर्व जन्म के कर्मफल से बाध्य है—प्रत्युत इसलिए कि वह युग प्रबुद्ध है या नहीं युग बोध इज द ड्राईविंग फ़ोर्स आफ़ वन्स गुड आँर बैड ऐक्शन्स—नॉट पूर्व जन्म के कर्म। ६६५ (अ) यू में ऐड अदरवाइस आर विकाज एटसेट्रा ६६७ (*ii*) संयुक्ता संभ्रम के कारण नगपति को बंधु कहती है। उसे नगपति के मन के भाव तो ज्ञात तो थे नहीं —जब वे उसे उमा तुल्य कहते हैं तो वह आश्वस्त हो जाती है। बंधु का अर्थ भाई ही नहीं है—कोई भी आदरणीय आत्मीय ईविन ए सखा। ६६६ (अ) वे (शिखर) रस स्पर्श रहित शून्य स्फटिक मंदिर से हैं ६७३ (*i*) घन इज द ऐब्सट्रैक्ट एन्टिटी फॉर एक्जाम्पल सच्चिदानंद घन कहते हैं। इस घनत्व में पोटेन्शलिटी में तन्मय होना अधोपलब्धि है। घन ऊपर आकाश में रहता है। उसे ऋत रस में धरती पर बरस कर यथार्थ में मूर्त होना है—वह क्षमता ही

न रह जाय। ६७४ (iii) भगवत् रूप चेतना का अमृत पीने के बाद गूंगे का गुड़ हृदय को मोहित नहीं करता। गूंगे का गुड इज द इनर इनएक्सप्रेसिबिल एक्सपीरियन्स ऑफ द ट्रूथ—वन गुड नॉट स्टाप ऐट दैट—लैट दैट एक्सपीरियन्स बिकम कान्क्रीट मास्टर बीन इस्टैब्लिस्ड इन द फार्म आफ़ डिवाइन ब्यूटी ऑन द अर्थ—लाइफ ६७५ (ii) नीहार=ओस और गलित हिम जल के सरोवर में इन द हिमालयाज़. ६७७ (ii) वही कवि संयुक्ता के विजन में उससे आँख मिचौनी खेलता है। वह छवि=वही की रेखा छवि आँखों के सम्मुख ज्योति वर्ण घन के रूप में उदित होगी—शी यूज्ड टू सी हिम इन द फ़ार्म आफ ए क्लाउड आफ़ लाइट इन हर विज़न. ६७८ (i) वह संयुक्ता—द कान्शसनेस ऑर स्पिरिट आफ संयुक्ता इज सीन इन द हैवेन इन द फार्म आफ ए रैस्प्लेन्डेन्ट रेनबो—शी इज डेड नाउ ऐंड हर बॉडी (शव) लाइंग आन द अर्थ ऐज़ शशि लेखा। ह्वाइट इज द कलर आफ़ डेथ—६७८ (iii) मृत्यु के बाद उसकी चेतना भी भगवान में (अपने धाम में) लय हो गई क्योंकि ईश्वर ही मात्र है।

बहुत २ बधाई लोकायतन मेरा तुच्छ प्रयत्न तुमने समाप्त कर डाला। वैसे विदाउट टॉकिंग ऐनी प्राइड आइ कैन से कि इसमें मेरी भागवत अनुभूतियाँ अंकित हैं और जो भी इसे आस्था से बार २ पढ़ेगा—इट विल रिवील इट्स लाइट टू द ऐस्पीइमस रीडर—इट इज ए काव्य आफ डिवाइन लव विच कैन बी रियलाइज्ड ऑन दिस अर्थ इन ह्यूमन लाइफ़—अन्यत्र ईश्वर प्रेम या ज्ञान की सार्थकता नहीं। मध्य युगीन निवृत्ति में या वैराग्य में खो जाना मन की स्टेट को क्लियर बना सकता है पर उस पर भगवत् मूर्ति नहीं आंक सकता—लोकायतन के अनुसार भगवान केवल अर्थ लाइफ के एवोल्यूशन द्वारा ही प्राप्त हो सकते हैं —रेस्ट इज आइडिया, इमोशन, एक्सपीरियन्स ऐंड फिलोसफी आफ़ गॉड—वट नाट लिविंग इन गॉड एण्ड लिविंग विद गॉड—यही लोकायतन रूपी लघु-लघु काव्य का विनम्र प्रीति प्रणत संदेश है, जो भगवान करें तुम्हारे कंठ के नीचे भी उतर सके—

सबको बहुत प्यार—

साईंदा

ों से बच जाऊँगा। ४-५ जुलाई तक अल्मोड़ा होते हुए इलाहाबाद ा। आशा है तुम सपरिवार प्रसन्न हो। तेजी जी का स्वास्थ्य भी ठीक । नौकर आ गया होगा। खाने-पीने जेबखर्च में मुझे भी रख सकते हो। र्च जितना हो जाय। ३१ ता० की मीटिंग में हिन्दी समिति ने क्या य किया अवश्य लिखना। आज तो बहुत थका हूँ। शेष फिर—

बहुत प्यार—

साईंदा

२०६

वैस्ट व्यू होटल
रानीखेत, (यू०पी० हिल्स)
३-६-६४

प्रिय बच्चन,

पंडित जी के निधन से पत्र लिखने को जी नहीं किया। एक तरह से सभी प्रकार का उत्साह मंद पड़ गया। संसार ने जिस प्रकार मरने पर उनको सम्मान दिया उससे उनका प्रच्छन्न व्यक्तित्व उभर आया और देश उससे गौरवान्वित हुआ। कल रेडियो से पता चला कि शास्त्री जी एक मत से अब नए प्रधान-मंत्री चुने गए। इससे संतोष हुआ। वह शुद्ध, धीर, विनम्र तथा सुदृढ़ सूझबूझ के व्यक्ति हैं उनके नेतृत्व में देश नेहरू जी से प्रेरणा ग्रहण कर आगे बढ़ सकेगा, ऐसी आशा है। अनेक गुत्थियों को वह अधिक कुशलता से सुलझा सकेंगे, जिन्हें पंडित जी अपनी भद्रता के कारण उलझाए रखे थे। तुम लोग अवश्य ही बहुत दुःखी होगे क्योंकि पंडित जी के निकट सम्बन्ध में रहे हो। मुझे भी बड़ी व्या-कुलता प्रतीत हुई। रेडियो से उनके महाप्रस्थान की रनिंग कमेन्ट्री सुनकर आँसू रोके नहीं रुके। सारा देश हाहाकार कर उठा, और संसार शोकमग्न हो गया। इससे प्रतीत होता है कि आज ऐतिहासिक दृष्टि से विश्व एक ऐसे संधि-स्थल

पर है जहाँ विश्व-एकता और मानवता का स्वप्न जन्म लेता दिखाई पड़ता है, साथ ही भारतीय जीवन दृष्टि के प्रति अन्य देशों का हृदय उतना रुद्ध अब नहीं रहा, वे उसका आदर करने लगे हैं और उसमें विश्व कल्याण के तत्व उन्हें दिखाई देने लगे हैं। क्योंकि हमारे देश के देवता पंडित जी की आदर्श-मूलक दृष्टि के मूल भारतीय पृष्ठभूमि में ही थे, जिसे उन्होंने गाँधी जी के संपर्क से प्राप्त किया और मन में संजोया। ऐतिहासिक पुरुष मुख्यतः होने पर भी उनके हृदय को गाँधी जी पर अनन्य श्रद्धा के कारण ऊर्ध्व का अज्ञात स्पर्श मिल चुका था, जो उनके रेशनलिज्म या बौद्धिक विवेक को भीतर ही भीतर परिचालित एवं नियन्त्रित करता रहता था। यह जो भी हो देश के वह हृदय सम्राट थे और देश ने उन्हें असीम प्यार दिया। यह उनकी महानता है कि उन्होंने उसका दुरुपयोग नहीं किया।

पंडित जी के निधन के धक्के से संभलने के बाद अवश्य अपने समाचार तथा दिल्ली का आँखों देखा हाल लिखना। तेजी जी तो दुःख से टूट गई होंगी पंडित जी उन्हें बहुत प्यार करते थे और उनका ख्याल रखते थे। पंडित जी के देहावसान के, तुम्हारे परिवार के तथा देश के दुःख से मैं भी भीतर से बहुत संतप्त हूँ। इंदु जी का भी बार-बार ध्यान आता है, उनका मूर्तिमान शोक का चित्र टाइम्स ऑफ़ इण्डिया में देखकर मन अवसन्न हो गया। भगवान उन्हें इस दुःख के पर्वत को झेलने की शक्ति दें।

तब से दिल्ली के जितने भी पत्र यहाँ सुलभ हो सके—स्टेट्समैन, टाइम्स ऑफ़ इण्डिया, हिन्दुस्तान टाइम्स आदि सबमें पंडित जी को जो ट्रिब्यूट्स देश-विदेश में मिलीं उन्हें ही पढ़कर मन को सान्त्वना देने का यत्न करता रहा। वहाँ गर्मी बहुत होगी—यहाँ भी है ही। मैं और सब तरह से ठीक हूँ। अनागरिक होने से होटल में रहना पड़ता है। अल्मोड़े में शांता के यहाँ आजकल बहुत भीड़ रहती है—सारा परिवार जुटा रहता है। २६-२७ तक एक सप्ताह को अल्मोड़ा जाकर ३-४ जुलाई तक प्रयाग लौट जाऊँगा। तुम्हें, तेजी जी को बहुत प्यार—

साइंदा

सु०

चि० अमित का पता अवश्य भेज देना—बंटी जी को प्यार—

२०७

वैस्ट व्यू होटल
रानीखेत (यू०पी० हिल्स)
६-६-६४

प्रिय बच्चन,

तुम्हारा १८-५ का पत्र कल ८ जून को मिला। आपने उस पर दया करके मेरा पता ही नहीं लिखा था। पोस्ट ऑफिस ने उसे इलाहाबाद भेजा—शायद डेड लैटर ऑफिस ने—वहाँ से वह कृष्णकुंज, रानीधारा, अल्मोड़ा गया, वहाँ से मेरे पास आया। तुम्हें इसके लिए फ़ाइन करना पड़ेगा। कल रेडियो से ज्ञात हुआ कि श्री इंदिरा जी प्रसारण सूचना विभाग की मंत्री नयी कैबिनेट में बन गई हैं। अब तुम वहाँ से रिटायर होने के बाद ए०आई०आर० में चीफ़ प्रोड्यूसर बन जाना—मेरी पोस्ट अभी तक रिक्त है। नरेन्द्र विविध भारती का चीफ़ प्रोड्यूसर है।—आशा है तुम प्रयाग से लौट आए होगे। रनिंग कमेन्ट्री द्वारा फूल विसर्जन के समाचार मैंने सुने थे। जवाहरलाल जी इस युग की आत्मा ही थे।—अमित को एक पत्र २-३ दिन हुए मैंने भी तुम्हारे भेजे पते पर लिख दिया है। अब लोकायतन के ६००—६२५ तक के प्रश्नों का उत्तर देकर तुम्हारा ऋण पूरी तरह अदा करता हूँ। दिनकर जी के रिमार्क्स काफ़ी डिस्करेजिंग है—कवित्व अपने ही में कुछ अर्थ नहीं रखता—जहाँ जितनी आवश्यकता थी उतना मैंने देने की चेष्टा की है, पर दिनकर जी में कवित्व के प्रति कैशोर अनुराग अभी है। उर्वशी और परशुराम की प्रतीक्षा इसके उदाहरण है—पर उनका कहना भी ठीक हो सकता है—अच्छा—६०५ (viii) मेरा अभिप्राय है जो परदेशी युवती—शोभा सरसिज—भारत स्थित रवि वशी के कर से खिलने के निमित्त ही बनी थी। ६०७ (प्रतिम) मेरी के अपने आदर्श रहे होंगे नहीं तो वशी का संस्कृति केन्द्र ज्वाइन करने क्यों आती। उसके क्या आदर्श थे मैं भी नहीं जानता, पर रहे जरूर होंगे, नहीं तो वह क्यों कहती। वशी ने जो आदर्श उसके मन में जागृत

१०९

१८/७ बी०के०जी० मार्ग
इलाहाबाद-२
८-७-६४

प्रिय बच्चन,

१ ता० को चलकर २ को यहाँ पहुँचे। यहाँ इतनी गर्मी है कि साँस लेना कठिन है! जैसी गरम तेल की कड़ाह में मछलियाँ भुन रही हों—ऐसी दशा त्वचा की हो गई है। तुम यहाँ होते बड़ा अच्छा होता, एक के बदले दो मछलियाँ—एक मगरमच्छ (तुम) एक छोटी मच्छी साथ ही भुनते। ऐसे समय तुम्हारी बड़ी याद आती है। यात्रा सम्बन्धी व्यस्तता के कारण तुम्हारे पिछले पत्र का उत्तर मैं देर से दे रहा हूँ। 'देर से दे रहा हूँ' में यमक आ गया है।

जी०के० अग्रवाल को तो मैं नहीं जानता, पर दो-एक दिन में पूछताछ कर प्रयत्न करूँगा—अगले पत्र में लिखूँगा। डिवीजन ठीक से मालूम होता तो आसान होता, प्रभात को भी कान्टैक्ट करना कठिन है। देखो, कुछ हो सका तो भरसक प्रयत्न करूँगा।

तुम टंकित पत्र भेजकर अफसरी क्यों बघारते हो? अँगुली में क्या पट्टी बँधी है? टंकित पत्र फीका लगता है। हाथ के अक्षरों में भावना का प्रवाह रहता है। यंत्र अभी निश्चेतन ही पड़ा हुआ है।

अच्छा है, बंटी जी कलकत्ता महानगरी में बँगला संस्कृति का रस ले रहे हैं। बच्चे बुढ्ढा-बुढ्ढी के चंगुल से बाहर निकलकर कुछ दिन चैन की वंशी बजा रहे हैं। तुम्हारे रात-दिन के उपदेशों से, धर्मकियों (धमकियों?) से मिल गई। मैं तुम्हारा लड़का होता तो कभी की हाथापाई हो जाती। शरीफ़ है, बंटी अभी भोला बच्चा।

स्वास्थ्य काम चलाऊ ठीक ही है। आशा है तुम और तेजी जी स्वस्थ

और प्रसन्न हो। तेजी जी को अंग्रेजी पाकर बुरी मत करना। वह भी बतकहना सा लगती है—कम से कम मैं इसी कोशिश में रहूँगा।

शेष फिर—

बहुत प्यार—
माईदा

११०

१८/७ बी० स्टेनली रोड
इलाहाबाद
२०-७-६४

प्रिय बच्चन,

तुम्हारा पत्र मिला, समाचार विदित हुए। तेजी जी घर पहुँच गए हैं अच्छा हुआ। अमित को बँगला सीखने पर १००० का पुरस्कार मिला प्रसन्नता हुई। चलो, तुम्हें एक बार तो उसने हराया—तुम तो बँगला सीख नहीं सके—बेकार मास्टर भी रखा—हमने बिना मास्टर ही के सीख ली। 'बूली' जब हारते हैं तो बड़ा मजा आता है।

पंडित जी वाली कविताएँ अंग्रेजी रूपांतर सहित शीघ्र भेजना—यदि मेरा स्वास्थ्य ठीक रहा तो संभवतः मैं १२ अगस्त को २-३ दिन को दिल्ली आऊँ। दिल्ली स्टेशन के कवि सम्मेलन के निमंत्रण पर तुम भी अवश्य ही आमंत्रित होगे—'पैट्रियोटिक पोइम्स' पर।

नई धारा में प्रो० विमल की आलोचना लोकायतन की पढ़ी—सीता जी के बारे में तो सीतोपनिषद (८ ?) में जो कहा है उससे अधिक मैंने कोई अति-रंजना उनके पराशक्ति होने के बारे में नहीं की है। लक्ष्मण का उन्हें जीजी कहना प्रो० विमल को अखरा है। तुलसी बाबा रामायण में बार-बार यही कहते थक गए कि पर ब्रह्म ही कौशल्यानंदन हैं—जो दोनों में भेद करता है उसकी

दशा गरुड़ काक भुशडि जैसी होती है और अंत में काक भुशंडि से भी दोनों के
अभेद की बात कहलाते हैं—बात सही भी है। तात्विक दृष्टि जिन्हें प्राप्त है
उन्हें अभेद के अतिक्ति और क्या दिखाई (दे ?) सकता है। खैर—

मेरा स्वास्थ्य इधर पहाड़ से लौटने पर विशेष ठीक नहीं—संग्रहणी के
कारण पेट में दर्द रहता है। बीच २ में बुखार हो जाता है। रानीखेत का पानी
बहुत हार्ड होने के कारण वहीं कष्ट का समारंभ हो गया था।

वहाँ तो बेहद पानी बरसने के कारण त्राहि-त्राहि मची है—आशा है इस
पत्र के मिलने तक १३ विलिंगडन क्रिसेंट नहीं कोलैप्स होगा। नरेन्द्र न जाने
बंबई से कब लौटने वाला है उसके ज्योतिष की इस समय सख्त ज़रूरत है।

आशा है तुम सपरिवार प्रसन्न हो। तेजी जी भी पूर्णतः स्वस्थ होंगी
उन्हें बहुत याद कर देना—मेरे हिस्से की आम की कुल्फ़ी रखे रहना। विचारी
पिरती भी मेरा इन्तज़ार करती होगी कि उसे कुल्फ़ी खिलाऊँ।

और दिल्ली महानगरी के नवीन समाचार हों तो लिखना। भगवती बाबू
आजकल उपन्यास पूरा करने में जुटे हुए हैं—उसके बाद नेतागीरी का झंडा
उठाकर फूड फ्रन्ट और प्राइस फ्रन्ट पर उतर कर क्रांति मचाने वाले हैं—आज-
कल बहुत जोश में हैं—उनका पत्र आया था।

और क्या लिखूं ? गर्मी बहुत है। डीप फ्रीज मिले तो उसमें एक आध घंटे
पड़ा रहूँ।

पत्र अब तुम बहुत देर में दिया करते हो—जल्दी-जल्दी दो एयर मेल,की
रफ्तार से।

सब को बहुत प्यार—

सांद

१९१

१८/७ बी०के०जी० मार्ग
इलाहाबाद
२७-७-६४

प्रिय बच्चन,

तुम्हारा पत्र तथा कविता मिली—कविता और उसका अनुवाद दोनों बहुत अच्छे लगे। दूसरी कविता भी भेजना। आशा है तुम कलकत्ता से लौट आए होगे।

मैं अब पहिले से अच्छा हूँ, पर पूर्णतः नहीं। छायावादी कवियों को मन तकलीफ दे यह बात तो समझ में आती है, पर पेट कष्ट दे यह तो विधाता का सरासर अन्याय है। पेट तो तुम्हारा दुखना चाहिए या जिसने हलाहल का मेविल लगाकर घड़ों मलाई खाई होगी। पर पक्षपात सर्वत्र मिलता है, विधाता के यहाँ भी।

मैं १२ ता० अगस्त को मेल से आकर १६ ता० तक अकादमी की बैठक के लिए दिल्ली रहूँगा। तुमसे गपशप का काफी मौका मिलेगा। अ० पु० सूची में दस तस्वीरें मैं भी दे रहा हूँ। आजकल में उन्हें उत्तर दे दूंगा। और भी पुस्तकें देखूंगा। समय और हम तो मैं नहीं देना चाहता, मुझे नहीं अच्छा लगा।

यहाँ पानी इधर अच्छा बरसा है, गर्मी दब गई है। ठंडक है।

आशा है तेजी जी, बंटी जी दोनों प्रसन्न हैं। दोनों को मेरा बहुत प्यार देना। तुम्हारे हिस्से का प्यार अलग से भेजता हूँ। माली को जाने की देर हो रही है, इसलिए पत्र जल्दी से समाप्त करना पड़ रहा है—

बहुत प्यार,
गाईदा

१२२

१८/७ बी०के०जी० मार्ग
इलाहाबाद
३-८-६४

प्रिय बच्चन,

मेरा पिछला पत्र मिल गया होगा। तुम्हारी दोनों नई कविताएँ मिलीं, बहुत ही अच्छी लगीं। हालां तुमने दूसरी कविता में क्वारों पर चोट की है जो मित्र होने के नाते तुमसे आशा न थी। उसी के उत्तर में मैं एक विवाहित बजनियों पर लिख रहा हूँ जिनकी साँस पाइप बजाने में फूल जाती है और सोचते हैं कि यह नयी नवेली भी किसी तरह हमीं हथियाते तो क्या अच्छा होता।—धनी लोग सदैव लोभी होते हैं।

अज्ञेय जी के लिए सुना जाता है केवल मेडीकल चेकअप के लिए ही अस्पताल में भरती हुए हैं— कोई विशेष बात हो तो लिखना।

मेरा स्वास्थ्य अभी तो पूरी तरह ठीक नहीं हुआ है—ठीक होने पर १२ ता० को मेल से दिल्ली पहुँचूंगा—यथासमय सूचना दूंगा। नरेन्द्र का पत्र आया था। लिखता है अगस्त मे वृहस्पति के वृष मे आने के बाद स्वास्थ्य ठीक हो जाएगा। ज्योतिष का फतवा है। डा० रामविलास ने धर्मयुग में नागर जी का बड़ा अच्छा संस्मरण लिखा है, पढ़ना। तुम्हारे संस्मरण न जाने कब निकलेंगे। चपा वाले चैपटर में इन्ट्रेस्टेड हूँ।

अमित की नौकरी पक्की हो गई हो तो उसकी भी कहीं शादी तै कर दो। मुझे भी लडकी दिखा लेना। एक बजनिया तो मैं हुआ ही, और भी जुटा लेंगे। आशा है तेजी जी का स्वास्थ्य बिलकुल ठीक है। अब तो इन्दु जी आ गई हैं, सभवतः उनके साथ व्यस्त रहती हों। वटी जी खूब मेहनत करते होंगे।

खाना ठीक ही है। तुम्हें याद करती है। इधर पानी रुक जाने से बड़ी गर्मी है। लोकायतन की एक छोटी सी समीक्षा नवनीत मे सत्यकाम जी ने दी है—देखना।

शेष फिर—

तुम सबको बहुत प्यार—सिरी को भी।

साईंदा

११३

१८/७ बी०के०जी० मार्ग
इलाहाबाद
१०-८-६४

प्रिय बच्चन,

तुम्हारा पत्र कल मिला। मेरा वहाँ ग्राना तो इस बीच संभव न हो सकेगा। डिसेन्ट्री मे खून भी प्राय: १-२ चम्मच निकल जाता है—इतनी लंबी यात्रा करना इस मौसम में ठीक नही होगा। डॉक्टर भी कहते हैं टाल सकते हैं तो ग्रच्छा होगा। लगता है पूरी तरह ठीक होने मे १। ग्राध महीना ग्रभी ग्रौर लगेगा। खाना ग्राजकल दही ईसपगोल (ईसपगोल ?), दही का ही दलिया खाता हूँ। घबड़ाने की बात नही ठीक हो जाएगा—सल्फा क्विनोवेल, इन्द्रा-गोनेडीन रोज ले रहा हूँ। कभी २ तापमान हो जाता है, वह भी ठीक हो जाएगा।

तुम्हारी 'वर्जनिए' मैंने फिर पढ़ी, कविता नि.संदेह अच्छी है। तुम्हारे नए प्रयोग ग्रौर भी देखना चाहता हूँ। नरेन्द्र ने ग्रभी 'प्यासा निर्झर' नही भेजा, वह प्याना ही रखेगा।

डॉ० विश्वंभरनाथ उपाध्याय की ग्रालोचना 'वातायन' मे पढ़ चुका हूँ। खास तौर पर वह ग्रंक मेरे पास ग्रा गया था। उपाध्याय वैसा न लिखते तो

तभी आश्चर्य होता। लोग शास्त्रीय प्राचीन मानों से आज के काव्य को देखते हैं—इसे ही दृष्टिशून्य पांडित्य कहता हूँ। कया इस युग में कौन प्रमुख हो सकती है—मूल्य की दृष्टि से कया बना है यह उनकी समझ ही में नहीं आता। इस युग में भाव की प्रेरणा ही से कया ना रस सम्भव है। खैर, यह सब चलता रहता है। उनके पूर्वग्रह तो स्पष्ट ही हो जाते हैं।

अब मैं सम्भवतः अक्तूबर ही में दिल्ली आऊँगा—या नवम्बर में अपनी भतीजी की शादी के अवसर पर। वात्स्यायन जी के हृद् रोग की बात पढ़कर चिंता हुई—अब उन्हें हमेशा सतर्क रहना चाहिए।

आजकल यहाँ बहुत गर्मी है। एक हफ्ते से पानी नहीं बरसा है। परिमलेन्दु जी को तुमने लिख दिया कि लोकायतन के सम्बन्ध में मेरे पास अनेक पत्र आदि सामग्री सुरक्षित है—उनका आग्रह है कि उनके पास भेज दूँ—वह उस पर कुछ लिखना चाहते हैं—मेरे पास तो ऐसी कोई सामग्री नहीं।

कवि सम्मेलन के समाचार भेजना। आशा है सपरिवार सानन्द हो। शांता तुम्हें नमस्कार भेजती है। वहाँ के और नवीन समाचार देना—

सबको बहुत प्यार—

सा‍ईंदा

११४

१८/७ बी०के०जी० मार्ग
इलाहाबाद
१७-८-६४

प्रिय बच्चन,

तुम्हारा पत्र मिला। मुझे नहीं स्मरण था कि १२ अगस्त को तेजी जी का जन्मदिवस है, मेरी ओर से बहुत २ बधाई और शुभकामनाएँ। वोल्गा में जो तुम मेरी दावत करने वाले थे वह अगली बार वहाँ आने पर करना। 'आभास'

सचमुच में बहुत अच्छी रचना है—मुझे ऐसी ही गंभीर अनुभूति की रचनाएँ अच्छी लगती है। 'अभिनव सोपान' का क्या हुआ ? कब प्रकाशित होगा, तुमने नही लिखा।

मेरा स्वास्थ्य, बच्चन, बिलकुल अच्छा नही—आने को मेरा भी बहुत जो था, डाक्टर ने कहा कि एव्वायड कर सको तो अच्छा है, क्योकि रास्ते का स्ट्रेन और खाने-पीने में परिवर्तन अच्छा नही होता। खासकर जब रक्त संग्रेहणी हो तो। अभी भी कभी निकल जाता है खून—धीरे २ ही ठीक होगा, डाक्टर कहते हैं—रानीखेत के पानी से इन्फ़ेक्शन हो गया। अकादमी की मीटिंग तथा कवि सम्मेलन के समाचार भेजना। मैं रेडियो में सुन भी नही पाया—आजकल ९ बजे सोने चला जाता हूँ। क० स० कैसा रहा ? अपनी रचना की प्रति भेजना यहाँ इधर अभी तक बड़ी गर्मी थी—कल से पानी बरसना शुरू हुआ, वहाँ तो बहुत पानी इधर बरसा—ऐसे समाचार पत्रो द्वारा मिले।

तेजी जी को मेरी ओर से जन्म दिन के लिए बहुत प्यार देना—मैं इतनी कमज़ोरी महसूस करता हूँ कि इतना सा पत्र लिखने मे थकान मालूम देती है। मौसम ठीक हो तो स्वास्थ्य भी ठीक हो। नरेन्द्र से कहना कि वह अपनी कविता की प्रति भी मेरे पास भेज दे और 'प्यासा निर्झर' भी—बहुत आलसी नरेन्द्र हो गया है—

बंटो जी को प्यार देना—मेरे यहाँ एक पुसी—टाम कैट आ गया है—बच्चा है, सुदर है। वही तो पिल्ती के साथ के लिए तुम्हारे पास भेज दूँ।

दिल्ली के समाचार भेजना—लंबा पत्र लिखना—बीमारी मे मनोरंजन होता है।

शेष फिर—

बहुत प्यार—

साईदा

१२५

१८/७ बी०के०जी० मार्ग
इलाहाबाद
२४-८-६४

प्रिय बच्चन,

तुम्हारा पत्र शनिवार को मिला था कल इतवार था, आज उत्तर दे रहा हूं। कल रक्षा बन्धन के कारण सवेरे से बहुत लोग आते रहे—शाम को भी बहुत लोग थे। बाँदा से रञ्जन भी केदारनाथ अग्रवाल और अपने एक डाक्टर मित्र को लेकर आ गया था, जो मेरे लिए एक नयी दवा प्रिसक्राइब कर गए हैं, आज मँगा लूंगा। मेरे स्टूल से अब रक्त आना तो इधर ४-५ दिन से बंद हो गया है पर और सब अलामातें डिसेंट्री की जारी हैं—चिन्ता करने से कोई लाभ नहीं होता—धीरे २ ठीक हो जाएगा।

भगवती बाबू एक दिन को आए थे। अब लखनऊ चले गए हैं। तुम्हारी कविता 'गुलाब की पुकार' पंडित जी सम्बन्धी पिछली सब रचनाओं से श्रेष्ठ तथा मर्मस्पर्शी है। ७४ तो नहीं ५१ कविता लिखकर तुम एक पुस्तिका उनकी स्मृति को भेंट कर सकते हो। मुझसे लिखना इसलिए सम्भव नहीं होगा कि मेरे कोई पर्सनल सम्बन्ध पंडित जी से नहीं थे, इसलिए खादी के फूल की तरह का सम्मिलित प्रयास करना सफल न रहेगा। ७४ रचनाएँ वर्षों की संख्या के अनुपात में होने पर भी अधिक हो जाएँगी। तुम्हें जितनी प्रेरणा मिले लिखो पर चुनकर ५१ ही की माला ठीक रहेगी।

नरेन्द्र का 'प्यासा निर्झर' भगवती बाबू दे गए थे। बहुत सुन्दर छपा है। पढ़ तो अभी नहीं सका—अभिनय सोपान का गेटअप भी सुन्दर बनाने को कहना। कवि सम्मेलन यहाँ भी जिन्होंने सुना उनकी बड़ी बुराई कर रहे थे। जब लखनऊ इलाहाबाद से रिले होगा मैं भी सुनूंगा। यहाँ आना तो अब अक्तूबर ही में हो सकेगा, तब तक मौसम और स्वास्थ्य दोनों ठीक हो जायेंगे।

तेजी जी को बहुत याद कर देना—ग्राशा है उनका स्वास्थ्य ठीक है। और तुम भी दुरुस्त हो। काष्ठमौनी बाबा के क्या समाचार हैं?

यहाँ पानी न बरसने से बड़ी बेचैनी है। तुम बम्बई से लौट ग्राए होगे। मैंने एक बिल्ला छोटा-सा पाला है—शांता ले ग्राई। तुम कहो तो तुम्हारे ग्रागामी जन्मदिवस को तुम्हें भेंट कर दूँ—ग्रगर दो बिल्ले ग्रापस में नहीं लड़ेंगे यह वादा देते हो तो—

शेष फिर—

बहुत प्यार
साईंदा

११६

१८/७ बी०के०जी० मार्ग
इलाहाबाद
३१-८-६४

प्रिय बच्चन,

तुम्हारा पत्र ग्रौर रेडियो वार्ता मिल गई थी—वार्ता बहुत सुन्दर तुमने लिखी है, धन्यवाद। ग्राशा है तुम बम्बई से लौट ग्राए होगे। चि० ग्रमित का ग्रापरेशन कलकत्ते में ठीक हो गया होगा, एक पत्र तेजी जी को भी लिख रहा हूँ। इधर मेरे यहाँ मेहमान ग्रा गए थे इससे दैनिक कार्यक्रमों में बाधा पड़ जाने के कारण पत्रोत्तर शीघ्र नहीं दे सका।

मेरा स्वास्थ्य ग्रब पहिले से काफ़ी ग्रच्छा है—जब सामान्य दवाग्रों से ग्रच्छा नहीं हुग्रा तो फिर एन्टीबायटिक्स मिस्टेक्लिन की इक्कीस केप्सूल्स लेनी पड़ी—ग्रब प्राय: ठीक है—एक सप्ताह के बाद एक कोर्स ग्रौर लेना पड़ेगा। तेजी जी इस रास्ते ग्राईं तो उन्हें यहीं रोक लिया जाएगा—जब तक तुम स्वयं उन्हें लेने न ग्राग्रो उन्हें नहीं जाने दिया जाएगा। ग्रौर तुम जितना उनका मूल्य समझते हो उतना तुम्हें रेन्सम देना पड़ेगा।

अमित को तकलीफ़ है जानकर चिंता हुई। तुमने बंटी को भेज दिया, ठीक किया। सिम्पिल ट्यूमर था इसलिए विशेष चिन्ता की बात नहीं है। वहाँ दिल्ली के डाक्टर ठीक पता नहीं लगा सके थे। अमित की स्वास्थ्य की प्रगति के समाचार भेजते रहना। तेजी जी को भी मैंने पत्र लिख दिया था।

भारती की चिंता की बातें पढ़कर दुःख हुआ। आशा है नरेन्द्र कोई न कोई उपाय निकालेगा ही। ११ ता० को यहाँ आने वाला है तब उससे पता चलेगा कि क्या स्थिति है।—मेरा स्वास्थ्य अब पहले से ठीक ही है, पर अभी कभी-कभी पेट में दर्द हो उठता है—हलका सा बाईं ओर—डाक्टर निरीक्षण कर रहे हैं।

जैसा कि मैं लिख चुका हूँ सा० अ० की जनरल कौन्सिल की मीटिंग के लिए (लिए) मुझे अंतिम सप्ताह में दिल्ली आना है। तब तुमसे भेंट होगी। शांता ठीक है उसके भाई श्रीकृष्ण का यहाँ एज डिप्टी रजिस्ट्रार आफ़ हाई कोर्टस् बदली तथा उन्नति हो गई है। ६-७ दिन में आ जाएगा। उसके लिए घर ढूँढ़ना पड़ेगा क्योंकि इस मकान में तो ६-७ नए प्राणियों के लिए एकदम स्थान की कमी रहेगी।

यहाँ पर आजकल काफ़ी पानी बरस रहा है इससे गर्मी नहीं लगती। दिल्ली के उपकंठ तो जलमग्न हैं—प्रति वर्ष यही होता रहता है—न जाने क्यों नहीं इसके लिए ठीक प्रबन्ध सरकार करती है—कभी दिल्ली है तो कभी पंजाब और कभी बिहार इत्यादि। देश की दशा बिलकुल भी अच्छी नहीं—बड़ा कष्ट लोगों को है—सब चीज़ के दाम बेहद बढ़ गए हैं। उस पर भी ठीक चीज़ें नहीं मिलतीं—बड़ा ढीला-ढाला शासन चल रहा है। देखें, कब सुमति आती है लोगों को।

आजकल कोई विशेष काम नहीं कर रहा हूँ—एक 'रचना' नामक गोष्ठी की यहाँ श्री अमृतराय ने स्थापना की है—मुख्यतः सर्जनशील विचार विनिमय तथा रचना 'विनिमय' के लिए। नरेन्द्र का भी १३ को उसमें एक कार्यक्रम रखने का विचार है। तुम कभी आए तो तुम्हें भी सादर आमन्त्रित किया जाएगा।

लोकायतन के बारे में 'विचारक' में यहाँ ७ ता० को गोष्ठी है—तुमने तो तब से सम्भवतः उसे रख ही दिया है—या कोई लेख-वेख लिखने का इरादा

पहुँचने पर। एक लेख 'विचारक गोष्ठी' में जोशी जी ने भी पढ़ा था, बहुत सारगर्भित था। भारती जी ध०यु० में उस पर एक इन्टरव्यू छापना हैं।

मेरा स्वास्थ्य पहले से तो काफ़ी अच्छा है पर अभी पूर्णतः नहीं। इधर पडित जी पर नयी कविताएँ लिखी हों तो भेजना। यहाँ आज हिन्दी बड़ी धूमधाम से मनाया जा रहा है—वैसे एक सप्ताह से यह कार्यक्रम रहा है। वहाँ भी डा० नगेन्द्र वगैरह प्रधान मत्री जी से मिले, ऐसा मैन में है। आजकल जनमत और जनबल का युग है, बिना सगठन के नही बनते।

तुम और बटी और पिस्ती प्रसन्न होगे। एक बिलौटा जया ने शांता को दे है, अब हमारे यहाँ उसे महीना भर हुआ चाहता है। खूब खेलता है। शेष फिर—

बहुत प्यार—
साईदा

विक्रय के लिये नहीं

१२९

१८/७, बी०के०जी० मार्ग
इलाहाबाद
२१-६-६४

बच्चन,

जब से तेजी जी वहाँ पहुँची तुम्हारा पत्र तब से नदारद ! पत्नि प्रेम का यह ष्ठ उदाहरण है। खैर, मैं २६ ता० की शाम को मेल से दिल्ली आ रहा हूँ—२८ वहाँ रहूँगा। २८ की रात का रिज़र्वेशन तुम्ही अभी से करवा लेना। २९ को अवश्य पहुँचना है।

आशा है तुम प्रसन्न हो और स्वस्थ्य भी। पत्र न मिलने से चिंतित हूँ। शेष मिलने पर—अब तार नहीं दूँगा। सबको बहुत प्यार—

साईंदा

१२०

१८/७ बी०के०जी० मार्ग,
इलाहाबाद
७-१०-६४

प्रिय बच्चन,

जबसे यहां पहुँचा हूँ घोर अव्यवस्थित रहा हूँ, अभी १० ता० तक अव्यवस्थित ही हूँ बल्कि १२ ता० तक। तब कहीं शांति मिलेगी। इसीसे तुम्हें पत्र नहीं दे सका। अब भी सूचना भर दे रहा हूँ। तुम्हारी दो कविताएँ इधर हिंदुस्तान और धर्मयुग में देखीं—अच्छी लगीं। तुम अब नये कवियों के निकट आ रहे हो—भाषा की दृष्टि से—यद्यपि रूपविधान वही है। पर कविताएँ सुन्दर हैं। कल बड़ी कठिनाई से घर श्रीकृष्ण के लिए मिल गया। एक परेशानी यह दूर हुई। अभी दो परेशानियाँ और रह गई हैं। आशा है तुम, तेजी जी और बंटी जी प्रसन्न हो। मैं अबके बीमार पड़ने से बच गया—अब गरदन का दर्द भी चला गया है, मोटर एक्सिडेंट में जो हो गया था। आजकल हिन्दी विभाग में स्नातकोत्तर शिक्षण के बारे में सेमिनार चल रहा है। शेष फिर। बहुत प्यार—

साईंदा

१२१

१८/७ बी०के०जी० मार्ग,
इलाहाबाद
१३-१०-६८

प्रिय बच्चन,

तुम्हारा पत्र मिला। कल तक युनिवर्सिटी का एक सप्ताह का सेमिनार था—बाद में बड़ी कठिनाई से छुट्टी मिल सकी है।

तेजी जी का स्वास्थ्य अभी ठीक नहीं जानकर दुःख हुआ—तुम्हें तुरन्त उसी वैद्य की दवा फिर बनवाकर उन्हें देनी चाहिए। उससे उन्हें बड़ा लाभ पहुँचा था।

अमित को जन्मदिवस के अवसर पर बहुत-बहुत मेरा प्यार और आशीर्वाद और शुभ कामनाएँ देना—बंटी को भी प्यार देना।

एक पत्र तुम्हारे केयर ऑफ गिरीन्द्र (गिरीश) को भेज रहा हूँ। उसे कृपया कष्ट कर तुरन्त उसे बुलाकर उसे पहुँचा देना—अत्यावश्यक पत्र है, उसका उत्तर मुझे तुरन्त चाहिए। आशा है तुम किसी प्रकार उसके हॉस्टल को फोन कर पत्र उसे पहुँचा दोगे।

तुम यहाँ आ रहे हो जानकर प्रसन्नता हुई। परेशानी तो जब से तुमसे परिचय हुआ तबसे तुम्हारे कारण होती रही—इस बार भी सही—पर ठहरना मेरे ही साथ। माली को देर हो रही है पत्र ले जाने को इससे समाप्त करता हूँ—बहुत प्यार—

साईंदा

१२२

इलाहाबाद
२०-१०-६

प्रिय बच्चन,

गिरीश का पता किसी प्रकार अवश्य लगाकर उनके पास मेरा पत्र पहुँचा देना है। सिर्फ इंटरव्यू के लिए दो ही हफ्ते हैं—डा० नगेन्द्र को मालूम हो।

तुम २३ को गोरखपुर आने के बाद यहाँ कब आ रहे हो—लिखना।

तेजी जी ने वैद्य की दवा शुरू कर दी यह अच्छा हुआ। तुम्हें, तेजी जी, अमित, बंटी को बहुत प्यार—

सुमित्रानंदन

१२३

१८/७ बी०के०जी० मार्ग,
इलाहाबाद
६-११-६४

प्रिय बच्चन,

मैं तुमसे सख्त नाराज़ हूँ। तुमने एक महीने तक इंतज़ार कराया और उसके बाद चुपचाप रात की गाड़ी से दिल्ली चले गए। इसे धोखा देना कहते हैं और इसकी तुम्हें अवश्य सज़ा मिलनी चाहिए। इस प्रकार के अन्यायों को सहते-सहते राष्ट्र की शक्ति क्षीण हो गई है। तुम तुला लग्न वाले हो स्वयं अपने लिए दण्ड का विधान करो। मेरी समझ में तुम दो टिन थ्रेप्टिन ग्रेन्यूल्स मेरे लिए वहाँ से भिजवा दो—यहाँ नहीं मिल रहे हैं। १०।, १॥ (१०॥) रु० में दं

१२४

१८/७ बी०के०जी० मार्ग
इलाहाबाद
१४-११-६४

प्रिय बच्चन,

तुम्हारी साल गिरह के अवसर पर २७ नवम्बर को शायद ही आना संभव हो सके—इधर मैं तो ठीक हो गया हूँ—पर शांता की तबियत अच्छी नहीं चल रही है। वैसे भी जाड़ों में बूढ़ी हड्डियों को कष्ट देने की हिम्मत नहीं होती है। ६०वीं साल गिरह के अवसर पर अवश्य आऊँगा।

आशा है तुम बुरा नहीं मानोगे। इसी आशय का पत्र श्री बाँके बिहारी जी को भी लिख रहा हूँ। उनका परसों ट्रंककाल आया था, कल पत्र। १००)रु० जो वे भेजेंगे उन्हें वापस कर दूंगा। वैसे भी तुम्हारे जन्म दिवस के समारोह में सम्मिलित होने के लिए मुझे रुपए तो स्वीकृत होते नहीं—भद्दी बात है।

मेरा पिछला पत्र तुम्हें मिल गया होगा। तुमने अपने लिए दंड भी तै कर लिया होगा। यहाँ ऋतु परिवर्तन के कारण अबके बहुत फ़्लू है। मेरी तबियत भी अभी बहुत ढीली-ढाली है। फ़्लू की गिरफ़्त में आ गया था, ऐंटी बायटिक्स की महिमा है जल्दी छूट गया हूँ। पर शरीर श्लथ ही चल रहा है। इसी से राइटर्स मीट में भी नहीं आ रहा हूँ और श्री राव साहब आगरा ले जाना चाहते थे, उन्होंने भी आग्रह वापस ले लिया है।

आशा है तुम सपरिवार सकुशल हो। तुम्हारा जन्म दिवस अबके उच्च स्तर पर दिल्ली वाले मना रहे हैं—शास्त्री जी उद्घाटन करेंगे—यह जानकर बहुत प्रसन्नता हुई। मेरी हार्दिक अगणित बधाइयाँ तथा शुभ कामनाएँ लो। शेष आयु में जो अभी कम से कम ५० साल की होगी तुम खूब लिखो पढ़ो—१-२ दर्जन [illegible], अनगिनती लोक-गीत और मुक्त काव्य लिखो—भोजन कम करो, ... अधिक करो—यद्यपि माइन्ड ही अल्टीमेट रिअलिटी है, बकौल तुम्हारे।

और क्या लिखूँ ? कभी से तुम्हारे समाचार नहीं मिले। पत्र देने में भी अब तुम कृपणता बरतने लगे हो।

नरेन्द्र को कभी से पत्र लिखना चाहता हूँ—शायद आज लिख सकूँ। आशा है वह ठीक होगा।

तुम सबको बहुत प्यार—

सांईदा

१२५

१८/७ बी०के०जी० मार्ग
इलाहाबाद
१-१२-६४

प्रिय बच्चन,

तुम्हारे २३ नवम्बर के पत्र और तार जो मैंने तत्काल किया था उससे तुम्हारे स्वास्थ्य के समाचार मिले। खैर, इसमें घबड़ाने की कोई बात नहीं तुम ८-१० दिन में ही ठीक हो जाओगे—हाँ विश्राम अवश्य १ महीने कम से कम करना आवश्यक हो सकता है। तुम बहुत ही ओवर स्ट्रेन अपने को करते हो—यह तुम्हारी पुरानी गँवारों की सी आदत अभी भी नहीं गई। अब तुम्हें मिताहार विरामस्थ का जीवन व्यतीत करना चाहिए। जनगीता का रिवाइज्ड एडीशन जब छपे भिजवाना—और तुम पर जो पुस्तक अभिनन्दन समारोह वालों ने प्रकाशित की उसे भी भिजवाना—अभिनव सोपान पता नहीं कब निकलेगा—नरेन्द्र का लेख सा० हि० में तुम पर अच्छा था—

मैं समझ गया था कि तुम बाबा जी से मिलने के बाद सेल्फी ओकूपाइड हो इसलिए मैंने पत्र देकर डिस्टर्ब नहीं करना चाहा। पत्र-पत्रिकाओं के अनुसार तुमने अभिनन्दन के अवसर पर कविता पाठ भी किया था। अभिनन्दन में जो ताम्र पत्र मिला है—*जैसा कि मि० भटनागर ने लिखा था—वह तुम्हारा है* और जो शाल मिला है वह मेरा रहा। दिल्ली आने पर वसूलूँगा।

१२४

१८/७ बी०के०जी० मा
इलाहाबाद
१४-११-६८

प्रिय बच्चन,

तुम्हारी साल गिरह के अवसर पर २७ नवम्बर को शायद ही आना संभ हो सके—इधर मैं तो ठीक हो गया हूँ—पर शांता की तबियत अच्छी नहीं च रही है। वैसे भी जाड़ों में बूढ़ी हड्डियों को कष्ट देने की हिम्मत नहीं होती है ६०वीं साल गिरह के अवसर पर अवश्य आऊँगा।

आशा है तुम बुरा नहीं मानोगे। इसी आशय का पत्र श्री बाँके बिहारी जी को भी लिख रहा हूँ। उनका परसों ट्रंककाल आया था, कल पत्र। १००)रु० जो वे भेजेंगे उन्हें वापस कर दूँगा। वैसे भी तुम्हारे जन्म दिवस के समारोह में सम्मिलित होने के लिए मुझे रुपए तो स्वीकृत होते नहीं—भद्दी बात है।

मेरा पिछला पत्र तुम्हें मिल गया होगा। तुमने अपने लिए दंड भी तै कर लिया होगा। यहाँ ऋतु परिवर्तन के कारण अबके बहुत फ्लू है। मेरी तबियत भी अभी बहुत ढीली-ढाली है। फ्लू की गिरफ़्त में आ गया था, ऐंटी बायटिक्स की महिमा है जल्दी छूट गया हूँ। पर शरीर श्लथ ही चल रहा है। इसी से राइटर्स मीट में भी नहीं आ रहा हूँ और श्री राय साहब आगरा ले जाना थे, उन्होंने भी आग्रह वापस ले लिया है।

आशा है तुम सपरिवार सकुशल हो। तुम्हारा जन्म पर दिल्ली वाले मना रहे हैं—शास्त्री जी उद्घाटन प्रसन्नता हुई। मेरी हार्दिक अगणित ब- ... में जो अभी कम से कम ५० साल की होगी महाकाव्य, अनगिनती लोक-गीत और भजन अधिक करो—यद्यपि मा...

मैं ठीक ही हूँ। शांता का स्वास्थ्य इधर कुछ ठीक नहीं चल रहा है। सर्दी यहाँ पर इधर २-३ रोज से बहुत बढ़ गई है।

आशा है आप समय निकालकर बच्चन के स्वास्थ्य का समाचार भेजती रहेंगी—

प्यार—
माईदा

१८/७ बी०के०जी०मार्ग
इलाहाबाद
१०-१२-६४

प्रिय तेजी जी,

बच्चन जी के स्वास्थ्य के बारे में समाचार मिले—नवम्बर १४ से २१ दिसम्बर तक दशा बुरी है। वे २२ दिसम्बर से अवश्य ही स्वस्थ हो जायेंगे, इसमें संदेह नहीं। इधर कई लोग अस्वस्थ हैं—मैं भी काफी बीमार था, अब भी हूँ। आजकल छुट्टी में हूँ। बच्चन जी अवश्य ही, शीघ्र ही, अच्छे हो जायेंगे उनको तो घबराहट होनी नहीं चाहिए—'हृदय शक्ति [illegible]' [illegible] 'गरल सुधा रिपु करय मिताई। गोपद सिंधु अनल सितलाई।'

मैंने तो बच्चन जी की बीमारी के समाचार मिलने के [illegible] दिन पूर्व ही कह दिया था कि वे अस्वस्थ हैं—और अब मैं कहता हूँ कि वे शीघ्र ही अच्छा पहलवान का स्वास्थ्य पा लेंगे।

बच्चन जी से मेरा सादर समाचार कहियेगा—

[illegible] —
[illegible]

मैं ठीक ही हूँ। शांता का स्वास्थ्य इधर कुछ ठीक नहीं चल रहा है। सर्दी यहाँ पर इधर २-३ रोज में बहुत बढ़ गई है।

आशा है आप समय निकालकर बच्चन के स्वास्थ्य का समाचार भेजती रहेंगी—

प्यारा—
माईदा

१८/७ बी०के०जी०मार्ग
इलाहाबाद
१०-१२-६४

प्रिय तेजी जी,

बच्चन जी के स्वास्थ्य के बारे में समाचार मिले—नवम्बर १५ से २१ दिसम्बर तक दशा बुरी है। वे २२ दिसम्बर से अवश्य ही स्वस्थ हो जायेंगे, इसमें संदेह नहीं। इधर कई लोग अस्वस्थ हैं—मैं भी काफी बीमार था, अब भी हूँ। आजकल छुट्टी में हूँ। बच्चन जी अस्वस्थ हों, सोच लें, अच्छे हो जायेंगे उनको तो घबराहट होनी नहीं चाहिए—'हृदय राखि कोसलपुर राजा' के लिए 'गरल सुधा रिपु करइ मिताई। गोपद सिंधु अनल सितलाई।'

मैंने तो बच्चन जी की बीमारी के समाचार मिलने के १०-१० दिन पूर्व ही कह दिया था कि वे अस्वस्थ हैं—और अब मैं कहता हूँ कि वे शीघ्र ही अच्छा पहलवान का स्वास्थ्य पा लेंगे।

बच्चन जी से मेरा सादर नमस्कार कहियेगा—

सस्नेह
[illegible]

१२७

१८/७ बी०के०जी० मार्ग
इलाहाबाद
१८–६५

प्रिय बच्चन,

तुम्हारा पत्र बहुत दिनो बाद आज मिला—यह जानकर बड़ी प्रसन्नता हुई कि तुम अब प्राय: स्वस्थ हो। अभी प्रॉपर रेस्ट की तुम्हें ज़रूरत रहेगी—कम से कम ३ से ६ महीने और—उसके बाद कुश्ती लड़ सकते हो!

मैंने तुम्हें पत्र इसलिए नहीं लिखा कि तुम रेस्ट कर रहे हो—पर तुमने कविता संग्रह नए वर्ष के लिए तैयार कर डाला! बधाई! 'अभिनव सोपान' क्या अभी नहीं छपा? अब तुम्हारा अपने नाम का नया संग्रह भी आ रहा है।

मैं २३ ता० जनवरी की मेल से शाम को दिल्ली पहुँचूंगा—तुम्हें स्ट्रेन पड़ने का डर हो तो नरेन्द्र के साथ भी ठहर सकता हूँ। वैसे मैं तुम्हें डिस्टर्ब नहीं करना चाहता—ड्राइंग रूम में सोऊँगा, गरम भी रहेगा। रात को वहाँ छोटी सी खटिया—या सोफ़ा—दिन को बैठक की बैठक।

शांता बहुत बड़ी ज्योतिषी हो गयी है—भृगु जी ने उसे वरदान दिया है—कहती है, हे बच्चन, अभी तुम ६० साल तक जिओगे और हे महामानव तुम इस युग मे हनुमान के अवतार के समान पूजे जाओगे—बड़े-बड़े कार्य आनन फानन में संपादन करोगे और खड़ी बोली मे एक तुलसीदास के समान लोकप्रिय महाकाव्य राम की गुणगाथा मे लिखकर इस लोक में दूसरे तुलसीदास के समान प्रसिद्ध तथा जनप्रिय होगे और दूसरे लोक में सायुज्य मुक्ति का उपभोग करोगे। हे महाभाग, बीमारी से घबड़ाना नही चाहिए। प्रभु परीक्षा भक्त की लेते हैं। अभी तो तुम्हें सागर लाँघकर लका दहन करना है और हे वाग्वीर, तुम्हें अपनी लेखनी की नोक पर संजीवन पर्वत उखाड़कर रख कर लाना है! जिससे आज के शक्ति मूर्छित विश्व को नया जीवन मिले! शांता कहती है कि

भृगु कहते हैं यह भविष्यवाणी शत प्रतिशत सत्य है ! मृषा न होइ देव ऋषि वाणी । अतः इसे भृगु ऋषि की ही वाणी समझो ! शुभमिति । तुमने शांता से जो प्रश्न किया था उसने भृगु दृष्टि से उसका विचार कर दिया है ।

१। बड़े दिन को तुम्हारा पत्र मिला था, उसी हिसाब से प्रश्न कुंडली खोली गई।

तेजी जी का स्वास्थ्य बीच २ मे गड़बड़ हो जाता है जानकर चिन्ता हुई। यह भी लिखना कि इस बार मुझे कहाँ ठहरना है ? तुम्हारे साथ ठहरना है तो तुम स्टेशन पर मत आना । पर बंटी को जरूर भेज देना—नही तो मैं सरदारों की दिल्ली मे टैक्सी पर चक्कर लगाता हुआ कही किडनैप हो सकता हूँ !

अपने बारे में विस्तार से क्या लिखूँ ! कुछ बकौल भृगु के ग्रहो का ऐसा जोर है कि न पढ़ाई-लिखाई हो पा रही है—न आराम ही मिलता है । आने-जाने वालो की भीड़ लगी रहती है । अब जुलाई से पहिले शायद ही कुछ कर पाऊँ ।

'आजकल' में रामदरश मिश्र जी का लेख लोकायतन पर पढ चुका हूँ । उनके लिए क्मेंट्स की जरूरत नही । मध्ययुगीन मानसिकता की प्रतिक्रिया है ! यथासमय मैं अपना दृष्टिकोण दूँगा ।

तुम्हारा नया संग्रह देखने को बहुत जी करता है—अब वहाँ आने पर ही अवसर मिल सकेगा । तुमने सबके हाल लिखे पिस्ती के नही लिखे । मेरा बिलौटा खूब खेलता है । कहो तो नए वर्ष के उपहार के रूप मे तुम्हे देने दिल्ली ले आऊँ ।

आशा है अब तुम बीमारी की बात नही सोचते ! भृगु जी के इतने बडे भाषण के बाद ! प्रसन्न रहो—आराम करो—मिताहार विहार !

संयम ही मात्र सजीवन शक्ति है—संयम व्यापक अर्थ मे ! —अच्छा सब को प्यार और तुम्हे बहुत प्यार—

साईंदा

पी०एस०—सिसिफ़स तो इस युग मे थोडी बहुत मात्रा मे सभी हैं, पर तुम अधिक हनूमान ही हो—

सु०

१२८

इलाहाबाद
२२-१-६५

प्रिय बच्चन,

अभी तुम्हें फोनोग्राम ३५०५३ को किया है—अन्वेल इन्फार्म नरेन्द्र, मैं वहाँ आना तो ७-८ दिन को चाहता था, पर फ्लू ने घेर लिया। वैसे बुखार तो अब उतरने पर है पर कमजोरी, खाँसी और छाती-पीठ में दर्द काफी है—इसलिए आना स्थगित करना पड़ा। अब फरवरी १५-१६ तक आऊँगा। तब आकाशवाणी में मीटिंग है। आज मि० मल्लिक को भी इस हाल से सूचित कर रहा हूँ। आशा है तुम दिन पर दिन अच्छे हो रहे हो। अपना 'अभिनव सोपान' शीघ्र भेजना। भृगु का विचार ठीक आएगा। शाता भी फ्लू ने मारा है।

सबको बहुत प्यार—

नरेन्द्र

पु—

तुम्हारी रचनाएँ—पर्वपुण—सा० हिन्दुस्तान में पढ़ रहा हूँ—सुन्दर हैं।

न०

१२९

१८/७ बी० स्टेनली रोड
इलाहाबाद
७-२-६५

प्रिय हिंदी के मार्क्स बच्चन,

तुम्हारा पत्र मिल गया था, मैं अब ठीक हूँ, केवल ब्लड प्रेशर (रक्त चाप) थोड़ा बढ़ा हुआ है। मेरी दिल्ली आने की तिथि अब निश्चित हो गई, १७ ता० की शाम की मेल से ६ बजे के करीब दिल्ली पहुँचूंगा। १८ से मीटिंग्स हैं। अतः तुम आफिस की गाड़ी मँगवाकर स्टेशन पर मुझे लेने को नरेन्द्र, अजित, बंटी जो भी हो सके भेज देना।

तुम्हारी इधर कुछ रचनाएँ पत्र-पत्रिकाओं में देखीं—सभी अच्छी लगीं—मार्क्स वाली तो 'धर्मयुग' की रचना विशेष अच्छी लगी। तुमने संग्रह प्रेस में दे दिया बड़ा अच्छा किया। अब छपने पर ही देखूँगा। वैसे दिल्ली में तुम्हारे पास जो प्रतिलिपि रहेगी उसे भी उलट-पुलट कर देख सकता हूँ, पता नहीं दिल्ली में ३-४ के दिन ठहरना है। एक वशिष्ट जी का भी पत्र आया है (कि) नयी कविता की गोष्ठी में सम्मिलित होने के आमंत्रण स्वरूप। समय मिला तो वहाँ भी चला जाऊँगा।

तुम सब विशेष अच्छे होगे। मेरा तो स्वास्थ्य सामान्य ही चल रहा है। 'अभिनव सोपान' अब दिल्ली आने पर ही लूँगा। तुम्हारे थ्रेपटिन के भी दाम देने हैं। और ४-५ सौ रुपया उधार भी तुमसे लेना है—यहाँ बहुत चंदे माँगने वाले आते हैं—मैंने तुम्हारे नाम का खाता खोलने का विचार कर लिया है। हिसाब बिलकुल ठीक रखूँगा। सौ रुपयों का प्रबन्ध अवश्य कर रखना। शान्ता को कल से दुबारा जुकाम हो गया है।

आशा है तुम सपरिवार सकुशल तथा सानंद हो और तेजी जी पूर्णतया स्वस्थ हैं। बंटी महाशय परीक्षा निकल (निकट ?) आने के कारण प्रथम श्रेणी

१२८

इलाहाबाद
२२-१-६५

प्रिय बच्चन,

अभी तुम्हें फोनोग्राम ३५०५३ को किया है—अन्वेल इन्फार्म नरेन्द्र, मैं वहाँ आना तो ७-८ दिन को चाहता था, पर फ्लू ने घेर लिया। वैसे बुखार तो अब उतरने पर है पर कमजोरी, खाँसी और छाती-पीठ मे दर्द काफ़ी है—इस लिए आना स्थगित करना पड़ा। अब फरवरी १५-१६ तक आऊँगा। तब आकाशवाणी में मीटिंग है। आज मि० मल्लिक को भी ट्रंक काल से सूचित कर रहा हूँ। आशा है तुम दिन पर दिन अच्छे हो रहे हो। अपना 'अभिनव सोपान' शीघ्र भेजना। भृगु का विचार ठीक आएगा। शांता भी फ्लू से आक्रांत है।

सबको बहुत प्यार—

सुमित्रानंदन

पु—

तुम्हारी रचनाएँ—धर्मयुग—सा० हिन्दुस्तान में पढ़ रहा हूँ—सुंदर है।

सु०

में परीक्षोत्तीर्ण होने के लिए खूब जी लगाकर पढ़ रहे होंगे। और पिस्ती जी मेरे आने की प्रतीक्षा में होगी कि मैं अपने हिस्से का गोश्त उसे खिलाऊँगा। मलाई की शौक़ीन तुम्हारी ही तरह है। यहाँ सर्दी प्रायः नहीं के बराबर रह गई है। कृपया लिखना वहाँ का कैसा मौसम है, रात को रजाई ओढ़नी पड़ती है या कम्बल से काम चल जाएगा। और भारी गरम कपड़ों की ज़रूरत पड़ेगी कि सर्ज वगैरह से काम चल जाएगा। दिनकर जी भी रक्त चाप से आहत पटना में पड़े हैं अब भागलपुर से दिल्ली आने की तैयारी में हैं। अच्छा ही होगा। नरेन्द्र को पत्र लिखा था उसने उत्तर नहीं दिया—मेरे आने की तिथि उसे और ओंप्रकाश जी को सूचित कर देना।

शेष पत्र आने पर—शीघ्र मौसम के बारे में लिखना।

बहुत प्यार—

साईंदा

१३०

इलाहाबाद
१३-२-६५

प्रिय बच्चन,

मेरा पिछला पत्र मिला होगा, मैं १७ ता० की शाम को मेल से ६ बजे के करीब दिल्ली पहुँचूगा। आफ़िस की गाड़ी मँगवाकर मुझे स्टेशन से लेने किसी को भेज देना।

तुम २६ को आओगे बड़ा अच्छा हुआ। पैसों का प्रबन्ध हो जाएगा। तुम मुझे पैसे वहीं दे देना, मुझे बहुत कुछ खरीद-फ़रोख्त भी करना है—और मैं तुम्हारी हिन्दी-टाइपराइटर भी १-२ महीनों को ले जाऊँगा। उसे तैयार रखना और अभिनव सोपान भी।

शेष फिर—आशा है सपरिवार प्रसन्न हो। तुम्हें, तेजी जी और पिस्ती को बहुत प्यार—

साईंदा

पु० श०

मुझे [illegible] —इधर गोविंद का फोन आया था कि [illegible] ।

सु०

१३१

इलाहाबाद
२१-७-६५

प्रिय बच्चन,

आज ही सवेरे पहुँचा—२६ को तुम्हारी प्रतीक्षा रहेगी। यह पत्र तेजी जी के नाम का है। उनसे कह देना कि शांता के लिए जो कार्डिगन ३४ साइज खरीदा था वह छोटा पड़ गया—अब वह उसी रंग का गहरा हरा-काला मिला हुआ ३६ साइज का तुम्हारे साथ जरूर भेज दें। और दुकानदार से पूछ लें कि ३४ साइज का लौटा लेगा या नहीं। हर हालत में ३६ साइज का तुम्हारे साथ भेज दें। उन्हें कष्ट के लिए बहुत धन्यवाद देना। तुम सबको बहुत प्यार—

साईंदा

१३३

१८/७ बी, स्टेनली रोड,
इलाहाबाद
१५-३-६५

प्रिय बच्चन,

इधर प्रयाग विश्वविद्यालय में निराला व्याख्यानमाला के अंतर्गत मुझे ११-१२-१३ को तीन मार्च घंटे २ भर के निबन्ध लिखने और पढ़ने थे, इसी से व्यस्त रहने के कारण तुम्हारे पत्रों का उत्तर आज दे पा रहा हूँ। तुम्हें काफ़ी आराम करने की ज़रूरत है—धीरे २ काम की थकान भी जाती रहेगी। तुम २-३ अप्रैल तब भी आओगे। लिख देना। कालिदास के जो पैसे रह गए हों इस बार वसूल कर लेना। १ अप्रैल को तुम्हारा दिवस अब नए परिप्रेक्ष्य बीटनिक दिवस के रूप में यहाँ मनाया जाएगा। हिंदी के चार प्रसिद्ध पुराने बीटनिक्स—तुम हुए, जोशी जी,

जैनेन्द्र जी और तुम्हारा मित्र होने के नाते मैं अपने-अपने घर उत्सव मनाएँगे। बीटनिक्स अलग रहने पर भी संयुक्त ही रहते है अपनी आस्थाहीनता मे या ऋण आस्था मे।

तेजी जी कब तक आएँगी—तुमने नहीं लिखा—आशा है वहाँ कोई कष्ट नही है। रमानाथ जी को मैं स्वय भी लिख रहा हूँ। देखूँ, क्या हो सकता है। नरेन्द्र सभवत: अभी दिल्ली ही होगा।

'दिनमान' साप्ताहिक के ७-१४ मार्च के अको मे हम लोगों की चर्चा है। १४ के अक मे गोपिका, लोकायतन की तिमजिल इमारत और अभिनव सोपान पर समीक्षात्मक टिप्पणी है—तुम्हारी भाषा मदिरा की प्रशसा है—अब बीटनिक हो जाने से हम भी मदिरा सेवी बन सकते है भले ही भाषा की ही मदिरा हो। वैसे तुम्हारी भाषा की प्रशसा है—७ मार्च के अंक मे मेरे दिल्ली वि०वि० के भाषण की गलत रिपोर्टिंग भी है—भाई लोग नाराज लगते है। न देखा हो तो देखना—गर्मी यहाँ पर बढ़ने लगी है। यहां इस बीच अनेक साहित्यिक पर्व रहे—अच्छा रहा। अमृत का अभिनंदन—सा० सम्मेलन का समारोह—सब ठीक ही रहा।

और क्या लिखूँ! बटी को और तुम्हें बहुत प्यार—नरेन्द्र के घर फोन करके पूछना वह पहुँच गया कि नहीं—

शेष फिर—

साईंदा

१३४

१८/७ बी०के०जी० मार्ग
इलाहाबाद
२३-३-६५

प्रिय बीटनिक बच्चन,

क्या सुन्दर अनुप्रास तुम्हारे नाम से मिलता है! मधुशाला से तुमने जो नया मूल्य हमारे युग को दिया उसका नामकरण अब हो पाया! मगर तुम गभीरता-

पूर्वक विचार करो तो तुम रोम रोम से बीटनिक हो। घुंघराले बाल, 'हे मात्र भरी मेरी गागर' गाने वाले! ऐसा जीवन प्रतीक तो अमेरिका में भी देखने को नहीं मिलेगा।

तुम्हारा दीवाली का कार्ड जोशी जी को दिखाया—कैसे बीटनिक के रूप में बड़े प्रसन्न हुए। कहते थे उन्हीं जैसा कोई कहा सकता है जो बीटनिक का अभिनायक बच्चन ही! छोटा कोट बोट पहनना तो बाहरी फैशन मात्र है—भीतरी बीटनिक प्रतिभा तो तुम्हारे ही पास है! तुम्हारी हीरक जयन्ती इसी आधार पर मनाई जाएगी! तारा आजकल दिल्ली में है। ४७६१६—इस नं० के पास। संभवतः तुम्हें फोन करने में उसे संकोच हो—तुम्हीं कर लेना—तेजी जी की थकान अब दूर हो गई होगी।

तुम ३ अप्रैल को आ रहे हो, स्वागत है। तारा या २६ मार्च को लौटेगी, या फिर तुम्हारे साथ। १ अप्रैल को आते तो तुम्हारे लिए स्पेशल बीटनिक दिवस मनाते—

मेरे छायावाद पर निबन्ध अमृतराय जी छाप रहे हैं—दिनमान के बारे में तुम्हारी सम्मति से सहमत हूँ। नरेन्द्र वहाँ आ गया हो तो फोन से याद कर देना। फिर मैं भी पत्र दूंगा।

बिलोटा तुम्हें बहुत याद करता है—अब की बार तुम्हारे साथ उसका एक फोटो रहेगा। उसका भी बिलकुल गोल मुख है—हैपिस्ट (हैबिट्स) में वह भी पूरा बीटनिक है! रात-रात भर गायब रहता है! अकेला बाग में लेटा रहता है! अब तुम उसे भी फैलो बना लो तो बड़ा अच्छा हो। आशा है अब स्वस्थ्य हो। तुम्हें, तेजी जी और बंटी को बहुत प्यार—

साईंदा

तुम्हारा बीटनिक डिसाइपल

पु—

अभी दो तार दिनेश पंत को हिन्दी में मैंने भेजे—दोनों नहीं मिले—इसलिए पता अंग्रेजी में लिख दिया है—आजकल हिन्दी के प्रति राजनीतिक वातावरण आंदोलित है।

सु०

१३५

इलाहाबाद
२३-३-६५

प्रिय पंतो बीटनिक,

माना को युनिवर्सिटी के काम से कल लौट आना पड़ेगा। तुम्हारी प्रतीक्षा ३ ता० या २ मा० को रहेगी—समय की सूचना देना—शायद तुम अपर इण्डिया से आओ। एक काम मेरा भी करना है। २ डिब्बे डाइजेस्टिव बिस्कुट्स के भी (टिन) अपने साथ ले आना, यहाँ नहीं मिल रहे हैं। कुछ तुम्हारा पुराना हिसाब भी है।

आशा है तुम स्वस्थ हो और तेजी जी भी प्रसन्न हैं। एक पत्र तुम्हें पहले भी लिख चुका हूं। यह पत्र केवल बिस्कुट मंगवाने को लिख रहा हूं। तुमने अपने बीटनिक मंडल के हमारे अलावा कोई और भी सदस्य बनाए हों तो लिखना। तुम्हें एक पत्र—मासिक पत्र—भी अपनी बीटनिक विचारधारा का निकालना चाहिए, जिससे हम लोग भी बीटनिकवाद को भलीभांति ग्रहण कर सकें—नहीं तो तुम्हें सदैव कच्चे शिष्यों से काम लेना पड़ेगा और तुम्हारे महान उद्देश्य की पूर्ति ठीक २ नहीं हो सकेगी।

शेष फिर—

बहुत प्यार—बीटनिक प्यार
तुम्हारा शिष्य
साइंदा

१३६

१८/७ बी०के०जी० मार्ग
इलाहाबाद
१५-४-६५

प्रिय बीटनिक,

तुम्हारा पत्र मिल गया था। तुम यहाँ नहीं आए—यह सरासर धोखा है! पर बीटनिक्स के लिए तो यही जीवन मर्यादा है। पता नहीं अब तुम्हारा केस कब लगने वाला है—तबसे तुमने अपने समाचार भी नहीं दिए। मेरे हिम्मे के तुम बिसकिट खा गए, यह अच्छी बात नहीं! इस बीच मैंने विश्वविद्यालय के लिए 'छायावाद—पुनर्मूल्यांकन' पर तीन लिखित भाषण दिए। इस मासांत तक छप जाएँगे—तुम्हारे पास भेजूँगा। दिनमान में उनकी डिस्टोरटेड रिपोर्ट पढ़ी होगी। ११ ता० को 'विवेचना' नामक उमाराव की संस्था में लोकायतन पर अमरीकी संगठित ढंग से बम्बार्डमेंट भी हुआ। 'परिमल' ने अब विवेचना का घूँघट मुँह मे (पर?) डाल फिर से अपना अमरीकी प्रचार प्रारम्भ कर दिया है—लेकिन शीघ्र ही अब लोग पहचान लेंगे।

इस पत्र के साथ तुम्हें अमृत राय के बारे में भी लिखना चाहता हूँ—अमृत राय को सज्जाद जहीर आदि के साथ ६ लोगों को जर्मन डेमोक्रेटिक रिपब्लिक की ओर से इन्वीटेशन बर्लिन तथा वाइमार के लिए कल्चरल कान्फ्रेंस अटेन्ड करने का आया है। १४ से २२ मई तक का। वह चाहता है कि एक्सटरनल अफेयर्स के अन्डर सेक्रेटरी उपेन्द्रलाल अमृत के पासपोर्ट को एक्सपिडाइट करवाने के लिए लखनऊ को तथा कानपुर रिज़र्व बैंक को संकेत कर दें। वह लगे हाथ वेस्टर्न कन्ट्रीज़ इंग्लैंड, फ्रांस, स्विट्ज़रलैंड, इटली, नौरवे, स्वीडन, रूस, पोलैंड, चेकोस्लेवाकिया आदि भी हो आना चाहता है। तुम राजा दिनेश सिंह जी से भी अमृतराय को इन देशों के लिए पासपोर्ट आदि बनाने में मदद करने के लिए फ़ोन से कह सकते हो। मेरा

म भी कह सकते हो कि उनका पत्र आया है। तुम्हारा उत्तर पाने पर अमृत ल्ली आकर उनसे मिल लेगा। अतः तुम यथा शीघ्र उत्तर देना।

दो चट्टानें कब छप रही है? शीघ्र भेजना। आशा है तुम सपरिवार न्न हो—(तेजी जी तथा बंटी) को और (तुम्हें और पिरती को) बहुत प्यार।

मैं दो बार बीमार पड़ा—अब प्रायः ठीक हूँ।

तुम्हें बहुत-सा बीटनिक प्यार—

शिष्य—
सार्दंदा

१३७

१८/७ बी०के०जी० मार्ग
इलाहाबाद
१७-४-६५

प्रिय बच्चन,

तुम्हें एक बात लिखना भूल गया था। पिछली बार जब शाता वहाँ आई तो श्रीमती सरला जैन ने उससे जो बातें कही उसमें यह पता चला कि जो सीने की मशीन तेजी जी ने उससे ली है उसकी कीमत न मिलने के कारण वह असन्तुष्ट है। तुम्हारे लिए १८५)रु० कुछ नहीं हैं, जब वह मूल्य चाहती है तो उसका भुगतान कर देना ही ठीक होगा। वह कह रही थी कि व्यवहार व्यवहार सा ही होना चाहिए और सौहार्द सौहार्द। पर मेरी समझ में तुम उनके पास १८५) रु० का चेक मशीन की कीमत के रूप में भेज देना और पत्र में लिख देना कि तुम्हारे समझने में गलती होने के कारण मूल्य भेजने में देर हुई।

सरला के घर की बात है—मशीन मेरी उपस्थिति में नहीं आई, मुझे बहुत पीछे मालूम हुआ—तब भी तेजी जी ने सरला जी से दामों के लिए पूछा था, पर वह मेरी मैनेजिंग डायरेक्टर होने की बात कह कर टाल गई। पीछे दादा से उनको जो बात हुई उससे मुझे लगा कि उन्हें पैसे न मिलने का क्षोभ है। अतः मैंने तुमसे दिलवा दिए। मिलने पर सरला से भी कह दूँगा। तुम्हारा तो इसमें कोई दोष ही नहीं है—तब भी तेजी जी ने कहा था कि बच्चन बिना दाम चीज किसी से लेने में नाराज होता है। खैर, चलो—तुमने चेक भेज दिया, अब वह जो करें।

तीसरी बात अमृत के बारे में है—बिचारे को और देशों का पासपोर्ट न मिला तो उसका जाना ही व्यर्थ हो जाएगा। वह २-१ दिन में लखनऊ से उत्तर पाने पर दिल्ली आएगा। और नवीन समाचार तो आजकल बस प्रयाग की साहित्यिक दलबदी के अतिरिक्त और कुछ नहीं है—'दिनमान' से लेकर यहाँ की 'विवेचना' नामक संस्था तक एक गुट बनाए हुए है—अभी उनकी संस्थापकों की बैठक में उन्होंने यह निश्चय किया कि मुझे वह डिस्ट्राय करके छोड़ेंगे! हमारे एक मित्र भी उस गोष्ठी के सदस्य हैं जिन्होंने मुझे यह समाचार दिए - छ: घंटे तक यह आपसी विचार विमर्श की गोष्ठी चली। खैर—

गर्मी अब यहाँ भी पड़ने लगी है—सरगर्मी भी बढ़ने लगी है! पाकिस्तान जिस तरह चूहे की तरह भारत के किनारे कुतुर रहा है उसे देखकर अपने देश की नीति पर दुःख होता है! लगता है यह पक्षाघात के रोगियों का देश है। जहाँ न हाथ पावों में ताकत रह गई है, न मन-मस्तिष्क में! बड़ा दुःख इस दयनीय देश की दशा का (को?) देखकर होता है! बुड्ढा हो गया हूँ नहीं तो मैं भी देश की रक्षा के लिए फ्रंटियर पर पहुँच कर गोली दागता!

तुम्हारे हाथ पाँवों की सूजन दवाओं के कारण ही होगी—धीरे-२ ठीक हो जाएगी। हृत्पिंड तो ठीक काम कर रहा है? कभी २ उसके कारण भी इडिया हो जाता है।

मैं ठीक ही हूँ। तुमने १८५) का चेक सरला को दिया, १५०) का मेरे लिए भेज देना—टाइपराइटर की मरम्मत तथा सफाई के चार्जेज। मेरे

बिल्कुल तो तुम आ गए हो—अब अपने गाव से किसी बहर लेते आना। यहाँ नहीं है। तेजी जी का स्वास्थ्य अच्छा है जानकर प्रसन्नता हुई। बटी के इम्तहान हो गए, यह भी अच्छा हुआ। तेजी, बटी, तुम्हें और किसी को बहुत २ प्यार, बीटनिक गुरु को प्रणाम।

एकलव्य—शिष्य-
गाईन

२३९

१८/७ बी०के०जी० मार्ग,
इलाहाबाद
२२-५-६५

प्रिय बच्चन,

तुम्हारा पत्र मिला, यद्यपि विलंब से। खैर, तुम सपरिवार सकुशल हो जानकर बड़ी प्रसन्नता हुई। चि० बटी के जन्मदिवस के उपलक्ष्य में मैं अपना बहुत-बहुत प्यार, आशीर्वाद और शुभकामनाएँ भेजता हूँ। बड़ा शीलवान लड़का है—तुममें तो ऐसा मार्दव और शील छुटपन में कभी रहा नहीं—अब क्या होगा—होनहार बिरवे के चिकने पात होते हैं! पर यह तो कंक्रटाइ का युग है! उसमें भी तुम ठहरे बीट-कैक्टस!

मेरा जन्मदिवस तो यहाँ मित्रों ने बड़े प्यार से मनाया—श्रीमान जोशी जी ने एक अभिनंदन पत्र भी दिया, जिसमें प्रथम बार उन्होंने स्पष्टतः लिखा है "आप बच्चन से कहीं बड़े कवि हैं।" अब मैं भरी सभा में कैसे कहता कि बच्चन मेरा बीटनिक गुरु है। किन्तु 'विवेचना' वालों से (जो) अकारण ही मेरे वर्ष प्रवेश के दिनों में जो मतभेद या वैमनस्य उठ खड़ा हुआ है उसके कारण हृदय की एक नाड़ी में कहीं दुःख-ताप भी है। मेरे जीवन में तो ऐसा पहिली बार। पर शायद अब हमारा युग ही द्रवीभूत हो रहा हो! विरोध तो मेरा

बहुत लोग करते आए है—द्वेष भी बहुत रखते आए हैं किन्तु ऐसा स्पष्ट वैमनस्य या ओपिन स्प्लिट पहिले कभी हुआ हो ऐसा मुझे स्मरण नहीं। इधर कभी से सम्भवतः फरवरी से 'दिनमान' वालों की सद्भावना के कारण जो एक बहुत ही छिछला विरोधी स्वर उठा उसे अनेक नव लेखन वालों ने—दिल्ली में अज्ञेय के नेतृत्व में, प्रयाग में राव और श्रीमती रमाराव के नेतृत्व मे उसकी प्रतिध्वनियाँ सगठित रूप से बढ़ती गई—देखें, आगे युग क्या रूप ग्रहण करता है। मेरी छायावाद : पुनमूल्यांकन पुस्तक मेरे जन्मदिवस के अवसर पर प्रकाशित होगी। २-३ दिन में ब्लर्ब छपने के बाद तुम्हारे पास भिजवा रहा हूँ—पढ़कर अपनी राय देना। डा० नगेन्द्र और नरेन्द्र के पास भी भिजवा रहा हूँ। मैं ३० ता० को नैनीताल होते हुए रानीखेत—(१८ वेस्ट व्यू होटल, रानीखेत, यू० पी० हिल्स) चला जाऊँगा। प्रयाग मे समस्त नगरों से अधिक गर्मी है।

आशा है तुम्हारा स्वास्थ्य ठीक है। मुझे विश्वास है अब धीरे-धीरे तुम्हारा मानसिक शारीरिक स्वास्थ्य सुधरता जाएगा। 'दो चट्टानें' (जिनके बीच तुम आजन्म पिसते रहे—दो पाटन के बीच) छपते ही मेरे पास रानीखेत शीघ्र भेजवा देना। पिस्ती के बारे मे तुमने एक शब्द नही लिखा—सौतेली लडकी ठहरी! अबके शीघ्र उसके समाचार देना—मेरा बिनौटा ठीक है—गर्मी मे परेशान बाथरूम मे सोया रहता है। गर्मी मे १ मास को आया पर छोड़े जा रहा हूँ।

वहाँ नामवर जी जनयुग सम्पादन करेंगे यह बड़ा अच्छा हुआ। भारत जैसे देश को समाजपरक, मूल्यपरक साहित्य तथा विचारधारा की जरूरत है! क्षणवाद के रिक्त अंधकार की नही!

तुम जब घर बनाओगे—मेरे लिए एक कमरा १४'×१४' और एक अलग बाथरूम और डब्ल्यू०सी० जरूर बनाना—वहाँ मैं खुद कूलर लगाऊँगा और गर्मी मे रहूँगा—इस घर मे तो तुम गर्मी मे मेरा स्वागत करते नहीं हो, इसलिए आना सम्भव नही। कवन मेह से क्या होता है जो स्नेह न बरसे! आशा है पिस्ती के समाचार शीघ्र दोगे। आशा है तुम सपरिवार सानंद हो।

श्री तेजी जी को बहुत प्यार देना और बटी को भी और बचा-खुचा तुम्हें भी—अपने स्वास्थ्य का गर्मी मे ख्याल करना। शांता बहुत आदरपूर्वक नमस्कार भेजती है—मेरा प्यार लो तुम!'

सांईदा

१४०

वेस्ट व्यू होटल
रानीखेत (यू०पी० हिल्स)
१०-६-६५

प्रिय बच्चन,

प्रयाग छोड़ने से पहिले तुम्हें मैंने पत्र दिया था, पता भी, तुम्हारा न कोई उत्तर मिला न स्वास्थ्य के समाचार। कृपया लौटती डाक से अपने सपरिवार समाचार भेजो। तुम्हारे पास मैंने 'छायावाद : पुनर्मूल्यांकन' भिजवाया था, क्या मिला? नरेन्द्र की प्रति उसे फ़ोन पर बुलाकर उसे दे देना। आज लोक भारती को भी लिख रहा हूँ कि उन्होंने पुस्तक भेजी या नहीं। तुम्हारी पुस्तकों की प्रतीक्षा है। मैं यहाँ से ३० ता० को प्रयाग को चल दूंगा। कृपया पत्र शीघ्र भेजो।

बहुत प्यार—
भाईसा

१४१

वेस्ट व्यू होटल
रानीखेत
२४-६-६५

प्रिय बच्चन,

तुम बड़े [illegible] विरक्त हो गए हो, मेरे पत्र का उत्तर नहीं देते। मैं [illegible] जुलाई को [illegible] ता० को इलाहाबाद पहुँच जाऊँगा—'आनन्द' के पते पर [illegible] तुम्हारे पत्र की (प्रयाग पहुँचने पर) प्रतीक्षा करूँगा। तुम्हें

यह कविता पढ़ने पर भी लिखकर (मेरी भावनिका की तरह) उस संग्रह का नाम 'तीन चट्टानें' रख देना चाहिए।

आशा है तुम स्वस्थ हो और तेजी जी भी। बच्चे भी। तुम्हारा पत्र न मिलने से तुम्हारे स्वास्थ्य के बारे में चिन्ता रहती है। छायावाद : पुनर्मूल्यांकन की दो प्रतियाँ तुम्हें मिल गई होंगी। लोक भारती ने लिखा है कि तुम्हारे पास भेज दी गई हैं। इस पत्र का उत्तर यहीं दो तो मिल सकता है। नहीं तो प्रयाग के पते पर—

मैं ठीक हूँ। शेष तुम्हारा बड़ा प्रतीक्षित पत्र आने पर—

बहुत प्यार—
नाईदा

१४२

१८/७ बी, स्टेनली रोड,
इलाहाबाद
२६-७-६५

प्रिय बच्चन,

तुम बहुत झूठे हो! तुमने जून १० ता० के बाद मुझे कोई पत्र नहीं लिखा—जून १० का पत्र मुझे रानीखेत में मिला था, वहीं से मैंने उत्तर भी दिया। उसके बाद रानीखेत से आने के पहिले तुम्हें पत्र दिया—८-६ जुलाई को यहाँ से दिया, पर तुम्हारा एक भी पत्र १ महीना २० दिन तक नहीं मिला—कल तुम्हारा २६ ता० का पत्र मिला। तुम्हारी अगुलियों में क्या इतनी सूजन आ गई थी कि पत्र भी न लिख सको। यहाँ जुलाई में बड़ी तपस्या करनी पड़ी—२०-२२ तक एकदम पानी नहीं बरसा—रानीखेत में जो कुछ भी स्वास्थ्य लाभ हुआ था ब्याज सहित यहाँ चुकाना पड़ा, ऊपर से गर्मी का कष्ट अलग, नरेन्द्र को भी मैं २-३ पत्र लिख चुका हूँ—यह भी शिकायत उससे की है कि बच्चन

का इधर कोई पत्र नहीं मिला—खैर, इसके लिए तुम्हें क्या सजा दी जा
अभी सोचा नहीं।

तुम सपरिवार ठीक हो, यह जानकर प्रसन्नता हुई। अमित की अभिरु
मंच की ओर बढ़ रही है—यह अच्छा है। तुम उसके लिए कुछ अच्छे गद्य-प
नाटक लिख डालो तुम्हारा भी चेन्ज हो जाएगा—अमित उन्हें स्टेज भी क
सकेगा। नरेन्द्र सपरिवार प्रसन्न है जानकर खुशी हुई—तभी उसने पत्र देन
बन्द कर दिया है—बहुत दिनों बाद बीबी बच्चों के साथ रहने को मिला है
क्या सुशीलाबेन अब दिल्ली ही रहेंगी ?

तुमने मेरे 'छायावाद : पुनर्मूल्यांकन' की प्राप्ति स्वीकृति भी नहीं भेजी !
तुम्हें मेरा थीसिस कैसा लगा ? कुछ लोग मेरी स्पष्टवादिता से रुष्ट हैं, कुछ
प्रसन्न। दिनकर जी का घर का पता भेज सको तो उन्हें भी बधाई का पत्र भेज
दूँ। चलो, फिर दिल्ली आ गए—बड़ा अच्छा हुआ। मौसम ठीक होने पर २-३
दिन के लिए मैं भी तुम लोगों से मिलने दिल्ली आना चाहता हूँ। तुम पीले
शिवाला वाला घर मेरे नाम करने कब तक आ रहे हो ?

तेजी जी स्वस्थ हैं जानकर प्रसन्नता हुई। उन्हें बहुत याद कर देना—मेरे
हिस्से की आम की कुलफ़ी रखे रहने को कह देना। पिदली महाशया की तबियत
अब कैसी है ? क्या उसे हूपिंग कौफ़ हो गया था ? मेरा बिल्लू बड़ा बदमाश हो
गया है—रात-रात ग़ायब रहता है—जैसा पहले तुम करते थे।

तुम्हें, बटी और तेजी जी को बहुत-बहुत प्यार—मेरी सब बातों का उत्तर
शीघ्र देना—तुम्हारी 'दो चट्टानें' कब तक आ रही है ? 'दो पाटन के बीच में
कबीरा (साबित ?) बचा न कोय' कहा है, पर तुम तो तीसरी चट्टान के समान
हो—इन्सान को मोम की चट्टान बनना चाहिए पत्थर की नहीं—इसलिए पत्र
जल्दी-जल्दी दिया करो—

आदंद

यहाँ पानी न बरसने के कारण इतनी गर्मी है कि कोई सीरियस काम नहीं हो सकता। वहाँ तो मौसम अच्छा होगा। सा० ए० के लिए तुम कौन सी पुस्तक अवार्ड के लिए रिकेमेंड कर रहे हो ? अभी २-३ दिन हुए उनकी पुस्तक सूची मिली है, इधर बाहर के इतने कार्यक्रम रहे कि अभी मैंने देखी नहीं हैं।

तुमने यह नहीं लिखा आन द होल छायावाद का पुनर्मूल्यांकन तुम्हें कैसा लगा। उसकी यहाँ काफ़ी चर्चा है। मैंने तो केवल प्रवृत्तियों पर लिखा है व्यक्तियों के लिए न्याय तो उसमें हो ही कैसे सकता था—तुम्हारा उद्धरण अगले संस्करण में ठीक कर दूगा।

तुम घर मेरे नाम ट्रांसफर करने कब आ रहे हो यह तुमने नहीं लिखा—मकान की तो मुझे जरूरत है ही भेंट भी हो जाती।

नवीन समाचार सामान्य हैं। शांता तुम्हें और तेजी जी को बहुत याद करती है। मुझे भी आम की कुल्फियों की बड़ी याद आती है। आशा है अमित का पत्र मिल गया होगा और बंटी जी भी प्रसन्न होंगे—तुम्हें, तेजी जी और बंटी को बहुत प्यार—

पत्र शीघ्र देना

साईंदा

१४४

१८/७, बी०के०जी० मार्ग
इलाहाबाद
२६-८-६५

प्रिय बच्चन,

तुम्हारा पत्र कल बहुत दिनों बाद मिला और देर में उत्तर भेजने का कारण मालूम हुआ। हिंदी की हालत वही है जो देश की हालत है— लोगों की मनोदशा है। ठीक है अपने समय पर सब चीजें साफ हो जाएँगी—हिन्दी—हिन्दी प्रदेशों की

भाषा रहे तो बहुत है—अन्य भाषाएँ भी फूलें-फलें और राजभाषाएँ बनें—जिस देश में खाने-पीने को नहीं वहाँ के लोग भाषा प्रेम नही जान सकते—जिस देश के अन्तर मे प्रकाश नहीं, प्राणों में सच्छवित्र की साधना नही उस देश के वासियों के लिए अन्धकार मे ही भटकना अनाचार में पंक मग्न रहना स्वाभाविक है।

तुम्हारी सर्विस इसी वर्ष अक्तूबर-नवंबर में समाप्त होने वाली थी—क्या एक्स्टेन्शन मिल गया है, अमित ने क्या बर्ड एंड कंपनी छोड दिया था ?—लिखना। तेजी जी की वर्थडे को बधाई का तार भेजने वाला था, भूल गया। तेजी जी से कहना उनसे मेरे मन का तार मिला हुआ है उसके प्रत्येक क्षण उनके लिए शुभकामनाएँ और बधाई गूँजती रहती है—मेरे प्रति इस वर्ष उनके अनुराग में वृद्धि हो यही शुभकामना है। वैष्णवों के अनुसार अनुराग शुद्ध सात्विक होता है—यह राग के बाद की स्थिति है—राग भी सात्विक तत्व है—अतः तुम्हें चिंतित नहीं होना चाहिए।

मुझे विश्वास है अगले वर्ष साहित्य अकादमी का पुरस्कार तुम्हारी 'दो चट्टानों' को मिलेगा। इस वर्ष सुनता हूँ—'चांद का मुख टेढा है' के लिए लोगों ने बड़ा जनमत संग्रह किया है ! कहते है सीधी अँगुली से घी नही निकलता—इसलिए टेढ़े चाँद की विजय हो सकती है—

दिनकर जी का एक पत्र मेरे लिए भी आया था—लिखा था अक्तूबर के बाद पता चलेगा कि वह इस पद से कोई उपयोगी काम कर सकेंगे कि नही—वैसे निराशा ही आज की स्थिति से व्यक्त की थी। स्टेटस उन्हे जज का मिला है—जो सेक्रेटरीज से भी ऊपर है !

धर्मयुग में 'छायावादी : पुनर्मूल्याकन' पर छीटाकशी देखी—रामचन्द्र शुक्ल जी ने प्रसाद जी के बारे में जो कहा है उसे जानबूझ कर मेरे मुंह से कहलाकर ये लोग झूठमूठ आरोप लगाने ही मे अपनी सार्थकता मानते है। डा० हजारी-प्रसाद जी को बहुत पसंद आया है—लिखा है मेरा मूल्यांकन सही और ग्राह्य है—८० प्रतिशत वे भी वैसा ही समझते रहे हैं—लिखा है मैं इससे बहुत प्रभावित हुआ हूँ। आगे के आलोचकों के लिए आपने कई सूत्र इसमें दिए हैं—और भी विस्तार से प्रशंसा की है। आत्म स्फालन कहने वाले साहित्यकार कौन थे ? शायद उन्हें स्फालन का अर्थ न आता हो—स्फालन का अर्थ है

कल्पना, दुलकार, पैंटिंग (पुचकारने) को भी कहते हैं—पर यहाँ दोनों अर्थ नहीं बैठते!

यहाँ अभी बहुत पानी बरस रहा है—२ जुलाई से २२ अगस्त तक बड़ी तपस्या की—गर्मी के कारण पानी की बूँद नहीं—अब मन मयूर प्रसन्न है—तुम्हारे लिए कहना पड़ता मन दादुर!

आशा है तुम सब स्वस्थ हो! यहाँ मैं १५ अगस्त को अनाथाश्रम में झंडारोहण करने गया था—जस्टिस द्विवेदी जी के आग्रह पर वहाँ श्री गोपीनाथ जी भी मिले—कहते थे, तुम्हारे मकान का प्रबंध सब ठीक हो गया—अब तुम्हें आने की जरूरत नहीं—मैंने उनसे कहा, अरे भाई, कोई झूठमूठ बहाना बनाकर उसे बुलाइए—न हो यही लिख दीजिए कि दूसरों ने कब्जा कर लिया है।

पत्र जरा जल्दी-जल्दी दिया करो। मैं ठीक हूँ—आशा है तुम्हारा स्वास्थ्य भी अब ठीक होगा—एक बार मैं चाहता हूँ कि तुम फिर नौ दंड बैठक करके हम लोगों को दुखी करो! और दिल्ली की सड़कों में है आज भरा मुझ में जीवन है आज भरी मेरी गागर की प्रभातफेरी लगाते हुए दिनकर जी को विस्मित कर दो—

तुम्हें, तेजी जी और बंटी जी को बहुत प्यार—पिंटी की खाँसी अब कैसी है तुमने लिखा नहीं। मेरे हिस्से की आम की कुलफ़ी तुम सब चट कर गए होगे।

साईंदा

१४५

इलाहाबाद

३-१०-६५

प्रिय बच्चन,

तुम ७ को आ रहे हो जानकर प्रसन्नता हुई। अवश्य आओ। शाता ने तुम्हारे ॰ दवस के लिए एक उपहार तुम्हारे लिए रखा है जो यहाँ आने पर

|२०६

१८/७ बी॰ स्टेनली रोड
इलाहाबाद
२२-१०-६५

प्रिय बच्चन,

तुम वहां सकुशल पहुँच गए होगे—पुनी तुम्हें बहुत याद करता है—चाचा, चाचा रटता रहता है। मैंने कह दिया है कि दिल्ली गए हैं तुम्हारे लिए चूहों का मुरब्बा लाने। वहां सब लोग प्रसन्न होंगे। यह पत्र मुख्यतः तुम्हें श्री वसन्त कुमार बिड़लाजी को भेजने के लिए पत्र व्यवहार की सामग्री के संबंध में भेज रहा हूँ जो इस प्रकार है :

लीडर प्रेस भारतीय भंडार में मेरी बारह पुस्तकें है—(१) गुंजन (२७६३) (२) ग्राम्या (१०१८) (३) ग्रंथि (२५३८) (४) ज्योत्स्ना (१४१८) (५) मधुज्वाल (१३८) (६) पांच कहानियाँ (२८७) (७) स्वर्ण किरण (८८३) (८) रजतशिखर (८४४) (९) वीणा-ग्रंथि (६२५) (१० युगपथ (६५३) (११) उत्तरा (६६६) (१२) युगांत (५१०)।—'गुंजन' पाठ्यक्रम में है। उसकी मार्च '६५ के अंत में २७६३ प्रतियाँ शेष हैं। और पुस्तकों की संख्या उनके ऊपर लिख दी है। जून '६५ से वाचस्पति पाठक व्यवस्थापक भारती भंडार ने ३३% दाम मुहर लगाकर और बढ़ा दिए हैं। मैं इन पुस्तकों को वापिस लेना चाहता हूँ क्योंकि भारती भंडार की बिक्री नहीं के बराबर है। गत

वर्ष की मेरी रायल्टी १७६८-५० रु० है। '६३-६४ की इससे भी कम थी। राजपाल एंड सन्स में मेरी ११ पुस्तकों की रायल्टी भी १७६५) है। मेरी किसी भी पुस्तक का कोई भी कान्ट्रेक्ट कभी लीडर प्रेस से नहीं हुआ है। चूंकि मैं मुख्यतः रायल्टी की आमदनी में ही रहता हूँ इसलिए पुस्तकें किसी अच्छे पुस्तक प्रकाशक तथा विक्रेता को देना आवश्यक है। अधिकतर पुस्तकें प्रकाशकों से लागत मूल्य पर वापिस ली जा सकती हैं। भारती भंडार उनके लिए ५०% चाहता है, जब कि लागत मूल्य २५% होता है। मैं ३५ या ४०% देने को तैयार हूँ। यह ५०% मूल्य भी वह (भारती भंडार) ३३% बढ़ाए गए नये मूल्य पर चाहता है, जोकि किसी प्रकार भी न्यायसंगत नहीं है। अतः तुम वसंत कुमार जी को उपर्युक्त बातों के आधार पर पत्र शीघ्र भेज दो तो बड़ा अच्छा हो। एक प्रति मेरे लिए भी भेज देना। राय साहब के लेख का कटिंग भी।

शेष तुम्हारा पत्र आने पर। तुम्हारे जाने से घर सूना तो हो गया है—माता भी कहती है। तेजी जी और अजित को बहुत प्यार देना—

तुम्हें भी बहुत प्यार—

साईंदा

१४७

१८/७ बी०के०जी० मार्ग
इलाहाबाद
२-११-६५

प्रिय बच्चन,

तुम्हारे पत्र से समाचार ज्ञात हुए—इधर कवि सम्मेलन के सम्बन्ध में व्यस्त रहा, अब निश्चित रूप से ११ दिसंबर को ८॥ बजे रात को तय हो गया है—तुम्हें अवश्य आना है तुम्हारे बिना कवि सम्मेलन गूंगा ही रहेगा। अतः तुम स्वास्थ्य ठीक रखना।

१४८

१८/७ बी०के०जी० र
इलाहाबाद
२१-११-६५

प्रिय बच्चन,

यहाँ पहुँचने पर जुकाम खाँसी ने घर दबाया, अब प्रायः ठीक हूँ। आशा है तुम वहाँ सपरिवार प्रसन्न हो। अमृत के लड़के के अभी विशेष समाचार तो नहीं मिले, पर जनरल कंडिशन उसकी वहाँ बंबई में काफ़ी इम्प्रूव कर गई है—वैसे शायद डायगनोसिस कनफ़र्म ही सा हो गया है। आशा तो है ठीक हो जाएगा—तुम भी उस के लिए प्रार्थना करना। बड़ा ही प्यारा बच्चा है।

स्टेशन पर पहुँचाने बहुत से लोग आ गए थे—पुरस्कार समिति के बारे में भी अनेक नयी बातें मालूम हुईं—बन्ने भाई की बताई हुई। खैर, वह तो अब बीत गया है।

तेजी जी को बहुत-बहुत धन्यवाद दे देना। उन्हें और बंटी को मेरा प्यार—पुत्ती तुम्हें प्यार भेजता है और नमस्ते भी—कहता है चाचा जी अब कब आएँगे—मुझे भी राजधानी की हवा क्यों नहीं खिलाते?

वहाँ के नवीन समाचार लिखना—

बहुत प्यार—
साईंदा

१४९

इलाहाबाद
२६-११-६५

प्रिय बच्चन,

जन्मदिवस की हार्दिक बधाई!

मेरा पिछला पत्र मिल गया होगा—गोविन्द भूमि वालों ने कहा था कि वे तीन मेरे पास पिछले उत्सव के चित्र मार्फत भिजवा देंगे—कृपया समय हो तो उन्हें फोन से स्मरण दिला दो और मेरा पता बता दो—अवश्य।

अब मैं वहाँ १०-११ दिसंबर तक ४-५ दिन को आऊँगा। तब अधिक समय तुमसे बातें करने को मिलेगा। आशा है सपरिवार प्रसन्न हो। अमित का कलकत्ते से एक सुंदर-सा पत्र आया है, आज उत्तर दे रहा हूँ। तेजी को और बंटी को बहुत प्यार देना। दिल्ली अब अच्छी होगी।

पूजी चाचा जी को साष्टांग प्रणाम लिखवा रहा है—आगे के दोनों हाथों के पंजों के नाखून उसने प्रणाम की मुद्रा में फँसा रखे हैं। कहता है चाचाजी ने मेरे लिए मिल्क बेक नहीं भेजी है। बनचुन का एक चित्र खिंचवाना चाहता हूँ, अगली बार वह एक तुम्हारे साथ भी खिंचवायेगा—

बहुत प्यार—
साईंदा

१५०

इलाहाबाद
२-१२-६५

प्रिय बच्चन,

तुम्हारा कार्ड मिला। तुम्हें इस मानसिंह पर अभिनंदन ग्रंथ मिलने वाला था। नीरज जी उसकी व्यवस्था कर रहे थे, क्या हुआ? तुम्हें एक्सटेन्शन अभी साल भर का मिल गया है, यह अच्छा हुआ। गोविन्दलैंड वाले चित्र तथा मार्ग व्यय भेजेंगे, यह अच्छा हुआ—चित्र बहुत लोग देखना चाहते हैं।

तुम्हारे पैर में जो दर्द हुआ था—एड़ियों में—वही डा० राम कुमार को भी हो गया है—सभी डाक्टरों के लिए एक ही बीमारी बनाई गई है लगता है। डा० राम कुमार जानना चाहते हैं कि तुमने क्या ट्रीटमेंट लिया। वे भी आजकल परेशान हैं—धरती पर पाँव नहीं पड़ते!—इस बारे में अवश्य लिखना ताकि वे भी उसी लाइन में इलाज कराएँ।

मैं वहाँ ११ ता० की शाम को पहुँचूंगा—एयर कंडीशन में जगह मिल गई तो अच्छा रहेगा—यात्रा से बराबर बीमार पड़ जाता हूँ। मिसेज सधु का बड़ा आग्रह है कि उनके पास ठहरूँ—मैंने मना कर दिया है कि शादी के घर में रहना है। ठीक तिथि फिर से लिखूंगा।

यहाँ अब सर्दी पड़ने लगी है—कोई विशेष काम भी नहीं हो रहा है। दिव्स जात नहिं लागत बारा सुन कवि बच्चन वचन हमारा!—बच्चन और वचन में जो यमकनुमा अनुप्रास है वह तुलसी बाबा से भी बढ़ गया है।

आशा है पित्ती अब अच्छी है—वनपुत्र रात भर वन विहार करता है सवेरे वही ५ बजे माँउ-माँउ कर नींद खराब करता है—जाड़े के दिन छत से उतारो! वनप्रजा ठहरी—नागा लोग! क्या किया जाय!

तुम अपनी आत्मकथा अवश्यमेव अब हाथ में लो और उसे जल्दी पूरा करो—इस वर्ष अवश्य निकल जानी चाहिए। अवश्यमेव। तेजी जी और बटी प्रसन्न

होंगे। उन्हें मेरा बहुत प्यार देना—दिल्ली के नवीन समाचार लिखना। दिनकर जी मिलें तो उन्हें याद कर देना। नरेन्द्र को भी—

अमित के पत्र का उत्तर दे दिया है—उसके समाचार भी भेजना—शेष फिर—

बहुत प्यार
साईंदा

१५१

१८/७ बी, स्टेनली रोड,
इलाहाबाद
७-१२-६५

प्रिय बच्चन,

तुम्हारा पत्र कल मिला। डा० रामकुमार को समझा दिया कि उन्हें स्पर में क्या करना है। हिंदी की दोनो ही प्रतिभाओं के खुर निकल आए—भगवान करुणामय है।

इन पत्र के साथ तुम्हें अपने आने का तार भी भेज रहा हूँ—अब दूसरा तार नहीं दूंगा।

EXPRESS TELEGRAME

TO,
DR. BACHCHAN
13, WILLINGDON CRESCENT
NEW DELHI-11
REACHING ELEVENTH EVENING BY MAIL STOP PLEASE MEET STATION.

SUMITRANANDAN PANT

तुम्हें आने में परेशानी हो तो अजित वग़ैरह किसी मेरे जान पहचान के साथी को भेज देना—मैं तुम्हारे ही यहाँ उतरूँगा—हेमा वग़ैराह को भी लिख दिया है। मेरे लिए अपना कमरा तैयार रखना।

शांता को इधर फूड पाइज़निंग हो गया था—४ रोज़ बुरे हाल रहे—एग्जीबीशन में चाट खाने से ! अब ठीक है, पर कमज़ोर—

वनपुत्र के लिए अब के तुम एक ड्रेसिंग गाउन ज़रूर ले रखना—बिचारे को सर्दी बहुत लगती है—चाचाजी ने भेजा है जानकर खुश हो जाएगा।

आशा है तुम सपरिवार प्रसन्न हो। सबको प्यार—शेष मिलने पर—

तुम्हारा
साईंदा

पु० अब के तुम एक महीने कुंभ में गंगातट पर कल्पवास करो तो चेलेचाटों में हम भी शरीक हो जाएँगे—रामायण और गीता का अखंडपाठ होगा—पुण्य का पुण्य और दर्शनार्थियों की भीड़ अलग से ! जो कोई मधुशाला सुनाने को कहे उसे जनगीता की एक चौपाई सुना देना ! जनगीता का भी विज्ञापन हो जाएगा—शुभमस्तु—

साईंद

१५२

इलाहाबाद
१७-१२-६५

प्रिय बच्चन,

मैं ठीक से पहुँच गया। तुम्हारे कमरे में मैं पी०सी० जोशी के दो-तीन पत्र भूल आया हूँ—एक मिस्टर आर०के० नेहरू के नाम, दूसरा जसटिस धवन के नाम और तीसरा अपने नाम का। योगेश की रचनाओं का जो हरा फाइल है उसी के

कवर में मैंने रस्सी के अन्दर खोंस दिए थे। तुम उन पत्रों को खोजकर मेरे पास तुरन्त भेज देना, नही तो पूरन बुरा मानेगा।

यहाँ आने पर मालूम हुआ कि श्री ए०बी० पुराणी जी (पांडीचेरी) हृद्गति रुक जाने से चल बसे है। ११ ता० को सबेरे ५॥ बजे के करीब। उसी रोज मैं दिल्ली को यहाँ से रवाना हुआ था। एक ऐसे स्नेही आत्मा के खो जाने का दुःख हुआ। वैसे वे दो-एक वर्ष पहले हृद्रोग से ग्रस्त हुए थे।

मेरी थकान अभी पूरी तरह से मिटी नहीं। आज यहाँ दीक्षांत समारोह के सिलसिले में डेलीगेटों का शो ८ बजे रात को है। कल कनवोकेशन मे ३ बजे श्री शास्त्रीजी भाषण देंगे—उसके बाद ७-८ बजे रात तक चायपान तथा लड़कियों के होस्टल का शो है।

सर्दी यहाँ भी है। काफ़ी। मेरा बिल्लू सर्दी के मारे सबेरे भी रजाई के अन्दर सो रहता है—रात को फिर वन-भ्रमण के लिए निकल जाता है—पूरा फ्रेंचमैन है—नाइट लाइफ का प्रेमी।

आशा है तुम अब अच्छे हो, तेजी जी भी स्वस्थ हो गई होंगी।

बटी को बहुत प्यार कर देना, बिचारे ने सर्दी में मुझे ड्राइव करके स्टेशन पहुँचाया।

वहाँ के नवीन समाचार लिखना। शाता ने तुम्हारा उपन्यास पूरा कर लिया—कल-परसों तक छपने भेज देगी।

शेष तुम्हारा पत्र आने पर—पी०सी०जे० के पत्र खोजकर अवश्य जल्दी ही भेज देना।

सबको बहुत प्यार—

माईदा

१५३

इलाहाबाद
२५-१२-६१

प्रिय बच्चन,

तुम्हें नया वर्ष और बड़ा दिन सपरिवार मुबारक हो, खूब फूलो-फलो, मोटे हो, और सबको खुशी करो।

तुमने मेरे पिछले पत्र का उत्तर नहीं दिया—अमित की नव वर्ष की शुभ-कामनाएँ आई थीं—उसका पता खो गया है, भेजना। उसके नाम का कार्ड तुम्हारे पते से भेज रहा हूँ, उसके पास अवश्य रिडाएरेक्ट कर देना—या दूसरे लिफ़ाफ़े में डालकर भेज देना—

आशा है तुम सब लोग प्रसन्न हो—मेरे वनपुत्र के लिए भी नए वर्ष की बधाई भेजना—तुम सबको प्यार—

साईदा

पु—

अमित का पता अवश्य भेजना—

सु०

१५४

१८/७ बी०के०जी० मार्ग,
इलाहाबाद
८-१-६६

प्रिय बच्चन,

तुमने मेरे पिछले पत्र का उत्तर नहीं दिया। आशा है तुमने मेरा न्यू इयर कार्ड 'अमित' के नाम कलकत्ते को रिडाएरेक्ट कर दिया होगा।

तुमने मेरा नाम साईदा क्यों रखा—अब नेपाल के शोध छात्र ने इसका भेद खोला। साईदा का अर्थ नेपाली में चालाक तथा चाइयाँ होता है—तुम्हारा तो दा (बड़ा भाई) होगा वह और क्या हो सकता है, तुमने अपने अनुरूप ही भाई बनाया।

यहाँ सर्दी बहुत है। सम्भवतः २४ ता० तक गणतन्त्र कवि सम्मेलन के अवसर पर दिल्ली आना पड़े—तुम तो तब वहीं होगे। तुम पर इधर दो-तीन लेख साप्ताहिक हिन्दुस्तान तथा आजकल और धर्मयुग में देखे। अच्छे ही हैं। अब तुम्हारी ओर आलोचकों का ध्यान जा रहा है यह अच्छा है।

आजकल क्या कर रहे हो? सोवियतलैंड ने न चित्र भेजे न टी०ए० खैर टी० ए० की तो मुझे परवाह नहीं पर चित्रावली रखना चाहता था। तुम्हीं स्मरण दिला सको तो ठीक हो।

आशा है तेजी जी स्वस्थ हैं। बंटी को पलू हो गया था, यह इंदिराजी द्वारा ज्ञात हुआ था—आशा है अब ठीक है।

मैं इधर कोई काम नहीं कर सका—बाहर के जीवन के तकाज़े ही अधिक रहे—कहीं गोष्ठी—कहीं कुछ। गावों में भी गया था।

सा० अकादमी का अवार्ड अभी सम्भवत. नहीं घोषित किया गया—वहाँ के नवीन समाचार लिखना—यहाँ तो कुंभ की धूम शुरू हो गई।

शेष पत्र आने पर—

बहुत प्यार—

तुम्हारा "साईदा"
नेपाली अर्थ में !
सु०

१५५

इलाहाबाद
१६-१-६६

प्रिय बच्चन,

इस एक सप्ताह में क्या का क्या हो गया। ताशकंद समझौते से जो शांति की भावना पैदा हुई थी शास्त्री जी के बलिदान से वह घोर विषाद में बदल गई! बड़ा ही आकस्मिक सब कुछ हुआ—

इधर अब प्रधान मंत्री के चुनाव का प्रश्न उठ खड़ा हुआ है। मुरारजी का होना तो समस्त देश और विश्व के लिए बड़ा घातक होगा। इंदिरा जी हो जातीं—जिसकी कि बहुत आशा भी बताई जाती है—तो देश निःसन्देह आगे बढ़ सकता—मुरारजी के होने से बड़े सेट बैक की आशंका है। हम लोग तो यही प्रार्थना कर रहे हैं कि इंदिरा जी प्र०मं० हो जाएँ। ताशकंद समझौते को इम्पलीमेंट ठीक से करना बड़ा आवश्यक है। और भी बहुत से संकट देश के ऊपर हैं—बी०बी०सी० जिस प्रकार मुरारजी के पक्ष में प्रोपेगंडा कर रहा है उससे उनकी नीति स्पष्ट हो जाती है। यू०के० से तो अब कोई आंतरिक सद्भावना हमारे देश के लिए सम्भव नहीं।

दिल्ली में आजकल बहुत सरगर्मी हो रही होगी—हम लोग भी उत्सुक प्रतीक्षा से आगे के डिवेलेप्मेंट देख रहे हैं। एस्ट्रोलोजिकल मेगज़ीन में मोरारजी का भविष्य बहुत निराशाजनक बतलाया है। जैसा ऐटीच्यूड वे दिखा रहे हैं उससे यही जान पड़ता है। ए०आई०आर० का पोएटिक सिमपोज़ियम शास्त्री जी के न रहने के कारण स्थगित कर दिया गया है, अब गणतन्त्र दिवस को मैं शायद ही वहाँ आ सकूँ—यद्यपि इंदिरा जी को अभिनंदित करने का अवसर मिल जाता—तुम लोग मेरी ओर से भी अभिवादन कर देना।

वनपुत्र बिल्कुल अपने चाचा के दिखाए रास्ते पर चल रहा है दिन-भर वन की अप्सरियों की संगत में रहता है, सवेरे-शाम खाने भर को घर आता है। आजकल

सर्दी मे उसे छत से उतारना पड़ता है—क्या बताया जाय कपूत निकल गया—पर पालन तो करना ही हुआ।

तेजी जी प्रसन्न होंगी—बटी जी का फ्लू भी अब ठीक होगा। तेजी जी को भी मेरी ओर से बधाई देना। अमित को मैने दूसरा कार्ड भेज दिया है—उसमे लिख दिया है—नये वर्ष का लो प्रसाद,

अमित स्नेह आशीर्वाद!

आशा है तुम प्रसन्न हो। मैं ठीक ही चल रहा हूँ। शेष तुम्हारा पत्र आने पर—सम्भवत: इस पत्र के मिलने से पहले ही इंदिराजी प्रधान मंत्री चुनी जा चुकेंगी—मुझे इसका परम संतोष तथा हर्ष होगा कि देश मुरार जी की प्रतिक्रियावादी नीति के चंगुल मे नहीं फँसने पाएगा—

बहुत प्यार—
साईदा
(नेपाली अर्थ मे नही !)

१५६

१८/७ बी०के०जी० मार्ग,
इलाहाबाद
२१-२-६६

प्रिय बच्चन,

इधर मैं बहुत बीमार रहा—शाता भी—फ्लू तो हुआ ही मम्पस भी हुए—१०४—६° तक बुखार गया, खाने, निगलने मे बड़ा ही कष्ट रहा—उसके बाद अभी तक पूरी तरह स्वस्थ नही अनुभव करता। तुम्हारा पिछला पत्र कोई नही आया—३ ता० जनवरी के बाद तुम्हारा कोई पत्र नही मिला—मैंने ही २ पत्र तुम्हें एक १२ ता० को शास्त्री जी की मृत्यु पर, दूसरा १९-२० को इंदिरा जी के प्रधानमंत्री बनने पर लिखे।

१५८

इलाहाबाद
३१-३-६६

प्रिय बच्चन,

कभी से तुम्हारा पत्र नहीं मिला—प्रतीक्षा है। क्या बाबाजी ने कोई नया काम सौंप दिया ? पिछले गूढ़ कार्य का भेद कब तक खुलने वाला है ? तुम रहस्यवादी न सही, कम रहस्यमय नही हो ?

ग्राजकल मैं ग्रकेला हूँ ! शांता दिल्ली में है—तुम्हें इला के यहाँ से फ़ोन किया होगा। यहाँ केवल मैं हूँ ग्रौर है मेरा वनपुत्र ! वनपुत्र रात भर गायब रहते है जैसा तुम जानते हो—ग्रकेले पड़ा-पड़ा मैं तुम्हें कोसता रहता हूँ कि पत्र नही भेजते हो। दिल्ली के क्या नवीन समाचार है ? यहाँ गर्मी का प्रथम चरण है। यद्यपि रात को बाहर सोने से मुझे भीषण जुकाम हो गया है। विधाता को मेरी नाक की लाज रखना मंजूर नहीं—हर दूसरे पाख जुकाम होता ग्रौर नाक बहती रहती है।

तुमने ग्रपनी नवीन प्रकाशित पुस्तकें ग्रभी तक नहीं भेजीं। नरेन्द्र तुम्हारी यीटस पर थीसिस की प्रशंसा कर रहा था। पता नहीं ग्रभी दिल्ली ही है या बम्बई चला गया है। तेजी जी के क्या हाल हैं ? ग्राशा है स्वस्थ है—बंटी जी के शायद इम्तहान हो रहे होंगे या निकट भविष्य में होंगे।

मेरा पिछला पत्र मिला होगा जिसमें ८ जून को रूस जाने की बात लिखी थी। तुम्हारा स्वास्थ्य कैसा है—ग्रात्मकथा कितनी ग्रागे बढ़ सकी है ? ग्रौर दिमाग में क्या उधेड़बुन चल रही है ? कोई नई कृति ? तुम्हारी ग्रभी बचपन की मन ही मन कुढ़ने की ग्रादत गई नहीं—उसे छोड़ दो ग्रौर तुरन्त पत्र लिखो। इधर तुम पर बहुत ग्रच्छे लेख पत्रों मे निकल रहे हैं। लोगों का ग्रौर ग्रौरतों का (कुमारियों ग्रौर नवोढ़ाग्रों दोनों का) दिल तो पहले चुराये बैठे थे—ग्रब विद्वानों का निर्मम हृदय भी द्रवीभूत होकर तुम्हें अपने भाव पद्मासन पर बिठाने है—चलो, तुम्हारे पी०एच० के नाते हमें भी गौरव मिला।

तुलसी बाबा तथा गीता का पाठ चलता होगा—हम तो तुलसी से भी अधिक तुम्हारे बचनों के कायल हैं—'इसीलिए खड़ा रहा कि तुम मुझे पुकार लो !' अब तो तुम्हारी साधना सफल हुई। तुम्हें खड़े रहने की जरूरत नहीं। बुढ़ापा 'मवन समीर भाए मित कैसा' लेकर आ रहा है। अब बैठने और लेटकर आराम करने के दिन हैं।

और क्या लिखूं ? समय काटे नहीं कटता—पत्र शीघ्र दो—

तुम्हें और तेजी जी और बटी को बहुत-बहुत प्यार—

तुम्हारा ही
साईंदा

१५९

प्रयाग
१३-४-६६

प्रिय बच्चन,

बहुत दिनों बाद तुम्हारा पत्र पाकर प्रसन्नता हुई। तुम राज्यसभा के सदस्य चुने गये इसकी प्रसन्नता सब को है—यहाँ का लेखकवर्ग भी अपनी सहमति प्रकट करता है। नरेन्द्र से (ने) २४ ता० बृहस्पति के स्थानांतरण के कारण यह तुम्हारी उन्नति की बात कही होगी—अब अगस्त से वह उच्चका हो जाएगा और तुम्हारी और भी पदोन्नति होगी—आर्थिक सफलता के साथ। विदेश भी जा सकते हो। अगस्त '६६ से '७२ तक तुम्हारा पीक पीरियड अभ्युदय का है—मेरी बहुत-बहुत शुभकामनायें, प्यार और खुशामद लो। खुशामद नये पद की। जब तुम्हें लिखने-पढ़ने के लिए भी अधिक समय मिल सकेगा—सभी दृष्टि से तुम्हारी पदोन्नति की दिशा मुझे ठीक ही लग रही है। क्या तुम इसी मकान में रहोगे ? अगर बदलना पड़े तो पता लिखना—नया फ़ोन नम्बर भी सूचित करना। कभी ट्रंक-कॉल करना पड़े तो।

मैं इधर काफी अस्वस्थ रहा—अब शांता अस्वस्थ है दिल्ली से लौटने के बाद। उसका उपन्यास 'मेरा मन वनवास दिया सा' अगले मास छप जायेगा। तब तुम्हें भेजेगी।

तेजी जी को भी मेरी ओर से बहुत-बहुत बधाई देना—प्यार भी। एक और पत्र मैंने तुम्हें बीच में भेजा था जिसका जिक्र तुमने नहीं किया है। क्या नहीं मिला? बटीजी परीक्षा की तैयारी कर रहे होंगे—यहाँ भी आजकल इम्तहान हो रहे हैं—कल डॉक्टर रामकुमार की विदाई का आयोजन था। वे अब १५ मई को विश्राम ग्रहण कर रहे हैं। आशा है तुम प्रसन्न और स्वस्थ हो। खूब खाओ, सोओ और मोटे बनो। तभी देश का काम कर सकोगे।

नरेन्द्र का पत्र बम्बई से आया था वहाँ बहुत खुश है—बीबी बच्चों के साथ।

नवीन समाचार लिखना। अब तो तुम राज्यसभा में हो। समाचारों की कमी नहीं रहेगी। वहाँ खूब विचार-विमर्श में भाग लेना जिससे हिन्दी साहित्यकारों का मस्तक ऊँचा हो।

मैं ठीक ही हूँ—गर्मी यहाँ पड़ने लगी है। कोई नई बात होगी तो लिखूँगा।

बहुत-बहुत प्यार—

साईंदा

पु० बाबा जी के गोपन कार्य के संबंध में तुमने नहीं लिखा—क्या अभी गोपन ही रखना है? गोपन रह न सकेगी पर यह धर्म कथा—

सु०

१६०

१८/७ बी०के०जी० मार्ग,
इलाहाबाद
१४-४-६६

प्रिय बच्चन,

तुम्हे एक पत्र कल भेज चुका हूँ। आज सवेरे दिल्ली ए०आई०आर० से फोन आया कि मुझे २४-२५ ता० को दिल्ली में संस्कृत कार्यक्रमों की बैठक में

उपस्थित रहना है। सो मैं या २३ की शाम को या २४ को सवेरे वहाँ पहुँचूगा। २४ की रात को लौटूगा। अच्छा हुआ, तुम से भेंट हो जायेगी। एम० पी० होने की दावत खाऊँगा। तुम ग्राफिस की गाड़ी स्टेशन भिजवा देना। चाहे ग्राफिस से ही किसी आदमी को मुझे लेने भेजवा देना। ठीक तिथि तार द्वारा सूचित करूँगा।

प्यार
साईंदा

१६१

१८/७ बी०के०जी० मार्ग,
इलाहाबाद।
२०-४-६६

ा बच्चन,

कल तुम्हारा पत्र मिला उससे पहले बाँकेबिहारी जी का तार सवेरे ही मिल ा था—२१ को वहाँ आना तो दो कारणों से सम्भव नहीं—एक तो आलरेडी ा का दिल्ली एक्सप्रेस (४ पी.एम.) से रिज़रवेशन हो गया है—दूसरा एक न में २० का रिज़रवेशन मिल नहीं सकता—प्रयाग की सीमाएँ जानते हो इन्टरमीडियरी स्टेशन है। कलकत्ते से रिज़रवेशन कराना होता है जिसका मय नहीं—दूसरा यह है कि यहाँ आजकल इन्टरव्यू चल रही हैं और मैं भी मेटी में हूँ इसलिये हार्दिक इच्छा तुम्हारे अभिनंदन करने की होने पर भी देह वहाँ उपस्थित नहीं रह सकूगा। हाँ, ये लोग २४ ता० को फंक्शन करते तो भी रह सकता—यह इन लोगों की गलती है। अब मैं २४ ता० को ६ बजे वेरे पहुँच रहा हूँ। २६ की रात को वहाँ से चलूगा। तुम २६ ता० की रात ो मेरे लिए रिज़रवेशन करवा देना जिससे २७ को सवेरे की गाड़ी से इलाहाबाद हुँच सकू—२७ को यहाँ काम है।

आशा है सपरिवार प्रसन्न हो। मेरा बहुत-बहुत हार्दिक अभिनंदन और प्यार लो—तेजी जी बंटी जी को भी प्यार दो—और मित्रों को भी।

शेष मिलने पर—

तुम्हारा,
साईंदा

१६२

इलाहाबाद
२८-४-६६

प्रिय बच्चन,

मैं कल सवेरे यहाँ सकुशल पहुँच गया। तुम्हारी बड़ी खराब आदत है, मेरे जाते वक्त न जाने कहाँ गायब हो गये, गुड बाई भी नहीं हो सकी। तुमने रेगुलर पत्र-व्यवहार का वादा किया है। अगर तुम किसी कारण से मई के अं तक कश्मीर न गये तो तुम से फिर से मुलाकात हो सकेगी। तेजी और बंटी बहुत-बहुत धन्यवाद और प्यार दे देना। तुमने तो मेरा कोई काम किया न तुम धन्यवाद के अधिकारी नहीं हो। हाँ, रिजर्वेशन करवाने में मदद की—इसलिए तुम्हें भी बहुत धन्यवाद और प्यार। 'नागर गीता' छपने पर शी भेजना।

यहाँ गर्मी काफ़ी है। न हो तुम भी आकर दो एक दिन इसका स्वेदसिक्त सुख ले लो।

शेष पत्र आने पर। बहुत प्यार—

साईंद

१६३

१८/७ बी०के०जी० मार्ग
इलाहाबाद
१६-५-६६

(१)

[illegible]य बौटनिक—गुरु,
[illegible]ते कवि।
[illegible]चिवे सवार,
[illegible]चन,
नमस्कार !
[illegible]म्हारा ३० अप्रैल का पत्र
[illegible]ानी के धब्बो से भरा
[illegible]ाल स्याही मे लिखा
[illegible]१३ मई को मिला !
[illegible]म्हारे राज्य सभा मे आने से
[illegible]ाक विभाग
[illegible]ौर चुस्त दुरुस्त हो गया !
हे सरकार,
बाथरूम ही है आपका
सुवासित दरबार !
जहाँ आप हर समय
विराजमान रहते है
कमोड के सिंहासन पर
मैं खटखटा कर क्या करता ?

दूर से आपके सिंहासन को
प्रणाम कर
गाड़ी छूट जाने की डर से
चला आया।
धन्य हैं आप !
समय-असमय का
ख्याल न कर
चट बैठ जाते हैं
कमोड पर !!

(२)

मैंने ठंडी गाडी मे
कालका मेल से
६ जून का
रिजर्वेशन करा लिया !
६ की शाम
दिल्ली पहुँचूँगा।
आप तब क्या
दिल्ली होंगे ?
८ को मुझे
सफाई करना है

गले !
प्राण नहीं न रहें
तो शीघ्र सूचित करें
कहीं अन्यत्र प्रबन्ध करें—
समय कम है
मोटी डाक से
सूचना दें !

(३)

मुक्त छन्द में
पहली बार
लिख रहा हूँ—
त्रुटियाँ क्षमा करें—
आप ठहरे सिद्धहस्त
हम ठहरे अलमस्त !
धीरे-धीरे अभ्यास से
मर्म को सब सध जाएगी—
रसरी आवत जात ते
सिल पर परत निसान।
सो हे सुजान,
दिल क्या सिल से भी
गया बीता
निर्मम है ?
तुम्हारा दिल तो
मोम का रहा
स्त्रियों के बारे में
देखते ही पिघल जाता—
तुम्हें खड़ा देख
उन्होंने पुकारा
दुलारा भी—
पर हमारा दिल
तुम्हारी विदाई से
पानी हो गया-
देखने में पत्थर का टुकड़ा
मालूम देता
जगह-जगह छिदा हुआ !
सूना पंख का टुकड़ा !!

(४)

इसे तुम गैर कविता कहो,
और कविता या कहो कविता,
पर बात सच है !
तुमने 'बजनिया' लिखकर
हम पर व्यंग्य किया।
क्योंकि हम
सबकी शादियों में शरीक होते रहे—
तुम्हारी में नहीं आ सके !
गर्मी यहाँ बेहद है,
पत्रोत्तर शीघ्र देना—
अपने समाचार भी—
'नागर गीता' की प्रतीक्षा है
जो बाबाजी की दीक्षा है।
रेखांकित पंक्ति का
ख्याल रखना—

(५)

यहाँ विश्वविद्यालय का
कार्यशिविर
समाप्त हुआ

भाषा विषयक विवेचन
पर्याप्त हुआ।
मुक्त छंद का रहस्य
धीरे-धीरे खुल रहा—
तुक मिलाने में
गद्य भी पद्य बन जाता है !
तुक से ही कवि का नाता है !
अच्छा, नाउ आई क्लोज़।
तेजी जी को प्यार
बेटों को प्यार
मिस्ती जी को प्यार-दुलार
तुम्हें फर्न्ने कवि,
(देख जिसकी छवि
फीका पड़ जाता रवि !
अर्थात् रवीन्द्रनाथ
झुकाता माथ !)
बहुत प्यार—बहुत प्यार
बहुत प्यार !
यह असार संसार
प्यार ही इसका सार !
उत्तर की प्रतीक्षा है !
कविता बनी समीक्षा है !
भाव नहीं तुक है
बोध न सही बुक है !

अच्छा प्यार—
माईंदा

१६४

इलाहाबाद
२५-५-६६

प्रिय बच्चन,

तुम्हारे और तेजी जी के बधाई के तार के लिए आभार धन्यवाद। तुमने मेरे मुक्त छंद में लिखे पत्र का उत्तर नहीं दिया—अकविता ही में दे दो। जानना चाहता हूँ कि तुम ६ जून को यहाँ होगे या कुल्लू-काश्मीर। मैंने ६ ता० को वहाँ पहुँचने का प्रोग्राम बनाया है। गर्मी बहुत है इलाहाबाद में ११७ तक तो पारा ११८ हो। तुम तो राम का नाम लेकर गर्मी-जाड़ा सह लेते हो यहाँ अर्धमूर्छितावस्था है।

कृपया पत्र शीघ्र दो। बनपुन कहता है चाचाजी एम०पी० हो गए अब मुझे कोई सरकारी पद या पुरस्कार अवश्य दिलायेंगे। कहता है वे तो मुझे स्वयं देख गये हैं मैं भारत रत्नों में हूँ। सो तुम जानो।

सबको बहुत प्यार—

साईंदा

१६५

इलाहाबाद
२६-६-६६

प्रिय बच्चन,

मैं यहाँ सकुशल पहुँच गया। अमृत का लड़का मितुन २१ ता० को सबको छोड़कर चला गया है—आज वे लोग आने वाले हैं—उनकी अक्षय क्षति मात्र संवेदना तथा सहवेदना से क्या पूरी की जा सकती है!!

तेजी जी आ गई होंगी—मुझे ईर्ष्या हो रही है कि अब तुम्हें ज़रूरत से ज्यादा आराम मिल रहा होगा। तुम्हारी रही सही आदतें भी जल्दी ही खराब हो जाने वाली हैं। तेजी जी और बच्चों को मेरा प्यार देना। उनके दिल्ली न रहने से सबके सीट रिजरवेशन कराने के लिए तुम्हारा एहसान लेना पड़ा इस का मन में दु.ख तो है—पर तुम्हें हार्दिक धन्यवाद भी देता हूँ। आशा है प्रसन्न हो। पत्र देने का वादा किया था—'प्राण जाहि पर वचन न जाहि' के अनुसार आशा है अवश्य पूरा करोगे—तुम्हारे लिए 'उदास पन्ने' भिजवा रहा हूँ—कल लोकभारती वाले भेजेंगे। बहुत प्यार—

साईंदा

१६६

१८/७ बी०के०जी०मार्ग,
इलाहाबाद
१८-८-६६

प्रिय बच्चन,

आशा है तुम वहाँ पहुँच गए हो और स्वस्थ हो। मैं भी धीरे-धीरे ठीक हो रहा हूँ। ४-५ दिन पहले एक माइल्ड एटेक मुझे फिर हुआ था। डा० लोग आराम करने को कहते हैं—वैसे थ्रोम्बोसिस तो नहीं बतलाते ऐंजाइना प्रेक्टोरिस बतलाते हैं। मैं भी सोचता हूँ एंजाइना ही है।

मैंने तुम्हारी पुस्तक 'दो चट्टानें' अकादमी पुरस्कार के लिए रिकमंड की है, यद्यपि मैं उसमें तुम्हारी सभी बातों से सहमत नहीं हूँ—जैसे एक स्थान पर तुम ने लिखा है—जी नहीं, मेरे दिमाग में भूसा नहीं भरा है' पृष्ठ १०२ इसमें मैं सहमत नहीं। भला तुम्हें अपनी सफ़ाई देने की क्या जरूरत थी ? जो है, सो है। पर खैर, सहृदय परीक्षक इस पर ध्यान नहीं देंगे ऐसी आशा है। अब के अकादमी पुरस्कार तुम्हीं को मिलना चाहिए।

मुझे तो अभी २-३ सप्ताह आराम करना है, इसीलिए लम्बा पत्र नहीं दे सकता। तुम यहाँ आए बड़ा अच्छा लगा। अपना फो पास भेज दो तो मैं भी अच्छा होने पर दिल्ली चला आऊँ।

आशा है तेजी जी और बंटी जी स्वस्थ और प्रसन्न हैं। तुम्हें और उन दोनों को बहुत प्यार।

तुम्हारा ही,
साईंदा

कृपया पत्र शीघ्र दो। मनपुत्र कहता है चाचाजी एम०पी० हो गए अब मुझे कोई सरकारी पद या पुरस्कार अवश्य दिलायेंगे। कहता है वे तो मुझे स्वयं देख गये हैं मैं भारत रत्नों में हूँ। सो तुम जानो।

सबको बहुत प्यार—

साईंदा

१६५

इलाहाबाद
२६-६-६६

प्रिय बच्चन,

मैं यहाँ सकुशल पहुँच गया। अमृत का लड़का मिहुन २१ ता० को सबको छोड़कर चला गया है—आज वे लोग आने वाले हैं—उनकी अक्षय क्षति मात्र संवेदना तथा सहवेदना से क्या पूरी की जा सकती है!!

तेजी जी आ गई होंगी—मुझे ईर्ष्या हो रही है कि अब तुम्हें जरूरत से ज्यादा आराम मिल रहा होगा। तुम्हारी रही सही आदतें भी जल्दी ही खराब हो जाने वाली हैं। तेजी जी और बच्चों को मेरा प्यार देना। उनके दिल्ली न रहने से अबके सीट रिजरवेशन कराने के लिए तुम्हारा एहसान लेना पड़ा इस का मन में दुःख तो है—पर तुम्हें हार्दिक धन्यवाद भी देता हूँ। आशा है प्रसन्न हो। पत्र देने का वादा किया था—'प्राण जाहि पर वचन न जाहि' के अनुसार आशा है अवश्य पूरा करोगे—तुम्हारे लिए 'उदास पन्ने' भिजवा रहा हूँ—कल लोकभारती वाले भेजेंगे। बहुत प्यार—

साईंदा

१६६

१८/७ बी०के०जी०मार्ग,
इलाहाबाद
१८-८-६६

प्रिय बच्चन,

आशा है तुम वहाँ पहुँच गए हो और स्वस्थ हो। मैं भी धीरे-धीरे ठीक हो रहा हूँ। ४-५ दिन पहले एक माइल्ड एटैक मुझे फिर हुआ था। डा० लोग आराम करने को कहते हैं—वैसे थ्रोम्बोसिस तो नहीं बतलाते ऐंजाइना प्रेक्टोरिस बतलाते हैं। मैं भी सोचता हूँ एंजाइना ही है।

मैंने तुम्हारी पुस्तक 'दो चट्टानें' अकादमी पुरस्कार के लिए रिकमंड की है, यद्यपि मैं उसमें तुम्हारी सभी बातों से सहमत नहीं हूँ—जैसे एक स्थान पर तुम ने लिखा है—जी नहीं, मेरे दिमाग में भूसा नहीं भरा है' पृष्ठ १०२ इसमें मैं सहमत नहीं। भला तुम्हें अपनी सफ़ाई देने की क्या जरूरत थी ? जो है, सो है। पर खैर, सहृदय परीक्षक इस पर ध्यान नहीं देंगे ऐसी आशा है। अब के अकादमी पुरस्कार तुम्ही को मिलना चाहिए।

मुझे तो अभी २-३ सप्ताह आराम करना है, इसीलिए लम्बा पत्र नहीं दे सकता। तुम यहाँ आए बड़ा अच्छा लगा। अपना फ़ो पास भेज दो तो मैं भी अच्छा होने पर दिल्ली चला आऊँ।

आशा है तेजी जी और बटी जी स्वस्थ और प्रसन्न हैं। तुम्हें और उन दोनों को बहुत प्यार।

तुम्हारा ही,
शांईदा

१६७

इलाहाबाद
३-६-६६

प्रिय बच्चन,

मेरा पिछला पत्र मिला होगा। गोरखपुर से लौटने के बाद तुम्हारे समाचार नहीं मिले। शीघ्र पत्र दो। और मेरी "नागर गीता" भी तुरन्त भिजवा दो। मैं अब काफ़ी ठीक हूँ। डाक्टर अभी २-३ सप्ताह और आराम करने को कहते हैं। आशा है तेजी जी बंटी और कलकत्ते में अमित भी प्रसन्न है। कृपया पत्र शीघ्र दो। सबको बहुत प्यार।

तुम्हारा
साईंदा

१६८

१८/७ बी०के०जी० मार्ग,
इलाहाबाद।
१०-६-६६

प्रिय बच्चन,

तुम्हारा पत्र और "नागर गीता" मिली। बहुत धन्यवाद। "नागर गीता" अपने ही में एक उपलब्धि है—वह अनुवाद सी नहीं लगती—मौलिक रचना का सा आनन्द आता है। तुम्हारा यह कार्य निःसंदेह अत्यंत उच्च कोटि का, उपयोगी तथा प्रेरणाप्रद सिद्ध होगा। बाबा की महत् कृपा समझो।

मैं अब पहले से काफी ठीक हूँ। अभी बाहर जाने की और काम करने की आज्ञा डॉक्टर ने नहीं दी है। मैं तो अपने दिल को मगे किदत समझता था पर

वह दिल ही निकला। तुम जब आना चाहो तुम्हारे लिए मेरे घर आंगन, हृदय मन के द्वार सदैव खुले हैं*—अपनी सुविधा देख लो—आने से एक दो दिन पहिले सूचना दे दो कि यथोचित आतिथ्य की यथाशक्ति तैयारी की जा सके।

इधर अमृतलाल नागर का 'अमृत और विष" पढ़ डाला—श्रेष्ठ कोटि का उपन्यास है—कला शिल्प की दृष्टि से भी नूतन और भाषा के तो नागरजी मालिक हैं। हिन्दी में ऐसी कृति उपन्यास साहित्य में दूसरी नहीं। तुम्हें समय मिले तो अवश्य पढ़ना। पद्य कोश की जैसी मास्टरी तुम्हारी है गद्य कोश की नागर जी की।

ओमप्रकाश जी ने लिखा है कि तुम्हें शाता का उपन्यास "मेरा मन वनवास दिया सा" उन्होंने भेज दिया है। आप ही उसके नायक हैं—अपनी प्रतिक्रिया उसके बारे में लिखना। नागर गीता लिखकर तुम्हें नवयुग व्यास की उपाधि सहज ही मिल जाती है।

एक काम भी तुम्हें सौंपता हूँ। यहाँ प्रयाग विश्वविद्यालय में हिन्दी विभाग के अध्यक्ष की सेलेक्शन कमेटी १७ तारीख को बैठ रही है। डा० नगेन्द्र भी एक एक्सपर्टस में से हैं—दूसरे हैं विश्वनाथ प्रसाद (दिल्ली)। तुम नगेन्द्र से मेरी ओर से अवश्य कह देना चाहे यह पत्र दिखला देना कि डा० वार्ष्णेय का पक्ष लें—जो सर्वाधिक क्वालिफ़ाइड व्यक्ति हैं। सीनियारेटी के मामले में तो शुक्ला जी जीत गये है—पर विश्वविद्यालय के स्तर पर मेरिट को स्थान न दिया जाए तो यह अन्याय है। शुक्लाजी के दल वालो ने बड़ा भारी प्रोपेगन्डा उनके फ़ेवर में कर रखा है। डा० नगेन्द्र आदि सभी एक्सपर्टस को उन्होंने डा० वार्ष्णेय के विरुद्ध झूठी बातों का प्रचार कर बहका रखा है। मैं चाहता हूं उनके लिए न्याय हो और वि०विद्यालय में एक सदस्य मर्यादा "मेरिट" के बारे में काम करे। आशा है गीता के अनुसार हमें न्याय की विजय के लिए यथाशक्ति युद्ध करना चाहिए—इसी से प्रेरित होकर तुम्हें लिख रहा हूं। डा० नगेन्द्र का इन्टरेस्टेड्ली लिखने में कहीं पत्र इधर-उधर हो जाने की आशंका है। तुम अवश्य इतना कर देना—मेरी ओर से।

*मेरे के द्वार भी खुले होते अगर तुम एक मोटरकार का [illegible] मेरा के प्रजेंट कर दो तो।

तेजी जी बीमार हैं जानकर चिंता हुई। ठंड खा गई होंगी। यहाँ भी मौसम आजकल गड़बड़ चल रहा है। कभी बहुत गर्म कभी ठंडा।

तुम स्वस्थ होगे। तुम्हें, तेजी जी और बंटी को बहुत प्यार—

मैं धीरे-धीरे ठीक हो रहा हूँ—तुम्हारी गीता का दुग्धामृत पान कर पूर्ण स्वस्थ हो जाऊँगा—जय हो व्यास महाराज की—पाय लागन।

साईंदा

१६९

इलाहाबाद
१७-६-६६

प्रिय बच्चन,

मेरा पिछला पत्र मिला होगा। और तुम स्वस्थ होगे। 'नागर गीता' २-३ बार पढ़ चुका हूँ, अध्यात्म रस मिला। अब तुम भागवत से कोई कथा चुनकर उस पर महाकाव्य या प्रबन्ध काव्य भी लिख डालो। तब आप व्यास पीठ के अधिकारी हो जाएँगे।

मैं पहले से अच्छा हूँ। ५ मिनट के लिए इंदिराजी से भी मिल आया—आशा है तेजी जी अब पहिले से स्वस्थ हैं और तुम्हारा गठिया भी। यहाँ अभी काफ़ी गर्मी है। पत्र देना—तुमसे पत्र में कुछ छेड़खानी करने को जी कर रहा है पर माली डाक में पत्र छोड़ने को रुका हुआ है, उसका समय हो गया और जल्दी में कुछ सूझ नहीं रहा है। शांता के उपन्यास पर अपनी सम्मति भेजना।

तुम सबको बहुत प्यार—

साईंदा

१७०

१८/७ बी०के०जी० मार्ग,
इलाहाबाद
२७-९-६६

प्रिय बच्चन,

तुम्हें एक पत्र शांता के साथ भेज चुका हूं। मिला होगा। तुम बड़े शक्की (संशयात्मक) बुद्धि के हो—गीता ने संशयात्मा के लिए जो कहा है तुम जानते हो। मैंने तो निश्छल हृदय से नागर गीता की प्रशंसा की। तुम्हें उसमें व्यंग्य की गंध मिली। तुम्हारे सामने तो कभी भगवान भी आयें (जैसाकि कभी-कभी मैं आ जाता हूं) तो तुम उनपर भी संदेह करने लगो कि यह कोई हैलूसिनेशन तो नहीं है। 'नागर गीता' का मैं जब तब पाठ कर लेता हूं—उसमें संस्कृत की बोझिल धार्मिकता के स्थान पर हलका फुलका मौलिक काव्य रस मिलता है—हिन्दी का तथा हिन्दी पाठकों का तुमने निःसंदेह बड़ा उपकार किया है। कहीं-कहीं लय की दृष्टि से रिवाइज करने की अवश्य आवश्यकता है। बाबाजी से पूछकर अगले संस्करण में कर सकते हो।

क्या शांता का उपन्यास अब भी नहीं मिला? शांता ने ओमप्रकाशजी को तुरत पत्र भेज दिया था कि तुम्हारे पास शीघ्र पहुंचा दें अगर नहीं भेजा हो तो मैं यहां से भेजूंगा—लिखना।

तुम्हारे गठिया की व्यथा कैसी है। दिल से अब तुम्हारी व्यथा गांठों में उतर आई है। क्या तुम क्रेली क्रूशेन साल्ट लेते हो? उससे तुम्हें १५ दिन के उपयोग के बाद अवश्य लाभ होगा। उसे बुढ़ापे में नित्य अब खाया करो—फर्स्ट थिंग इन द मॉर्निंग। तुम्हें हमेशा ठीक रखेगा।

तेजी जी के क्या हाल है? बंटी जी के भी। आशा है सब चंगे हैं—अब मौसम ठीक होने पर मैं भी दिल्ली आना चाहता हूं—तुम्हारी क्या राय है हरिवंशराय जी? मैं पहले से अच्छा हूं। मेरे दोनों पत्रों का उत्तर दो। अकादमी

ने "पार्थिव का सपना" उपन्यास भेजा था—बड़ा ही मजेदार उपन्यास है। तुम भी अवश्य पढ़ना—बड़ा मसाला है उसमें। पत्र जरा जल्दी-जल्दी दिया करो—अब तो समय की कमी नहीं है तुम्हें।

धर्मयुग और हि० साप्ताहिक में तुम्हारी रचनाएँ देखने को नहीं मिलीं। पता नहीं किस अंक में है।

आशा है अमित प्रसन्न है। उसकी शादी का कहीं प्रबन्ध हो रहा है? यहाँ मुल्ला साहेब की कन्या नीलिमा मुल्ला इतनी सुन्दर है तुम देखते रह जाओ। कोई बहुत सुन्दर लड़की खोजो। सुन्दरता का अपना विशेष महत्त्व होता है—वह सबसे वरेण्य है।

तुम तो बुद्धू ही रह गये।

अच्छा बहुत प्यार।

साईदा

१७१

१८/७, बी०के०जी० मार्ग,
इलाहाबाद
८-१०-६६

प्रिय बच्चन,

तुम १० तक चंडीगढ़ से लौटोगे इसलिए उत्तर देर से दे रहा हूँ। तुम्हारे पत्र में सबसे अच्छी बात यह है कि तुम मुझे देखने आओगे। १५ ता० के बाद शांता की छुट्टी है २७ तक। १५/१६ के करीब आ सको तो बड़ा मजा रहेगा। शांता तुम्हारी देखभाल भी कर सकेगी फिर वि० विद्यालय के खुलने पर वह बात नहीं हो सकती। ठहरना हमारे ही पास। भले ही उसमें कष्ट हो। तुम्हारी मेरी कुश्ती भी दशहरे में एल्फ्रेड पार्क में हो जाएगी। ५)-५) रु का टिकट रहेगा। एक बार लड़ने का स्वाँग कर तुम गिर पड़ना, एक बार मैं। रुपये आधे-आधे बाँट लेंगे। अगर तुम इस बीच आ सको तो ४ डिब्बे थ्रेपटिन ग्रेनल्स के साहब-

ाग अवश्य उस ग्रंथ के लिए सहयोग के रूप में भेज दो। इसेलिये लोगों
नुरोध किया जा रहा है, आशा है तुम स्वीकार करोगे।
र अब जल्दी आओ—मौसम भी ठीक हो गया है। बड़ा आश्चर्य तुम्हारे
कारण है—पत्र नहीं मिला तो भी तुमने आने को स्वयं लिखा था।
है यह पत्र अवश्य तुम्हें मिलेगा। और तेजीजी और बंटीजी स्वस्थ तथा
होंगे —उन्हें मेरा प्यार देना। उनके हनुमानजी की याद आ गई, वे बड़े
हैं। शांता इधर चित्रकूट गई थी, उसे लौटे हुए ३-४ दिन हो गए। महादेवी
ण ग्रंथ की योजना उसी की है— वह भी एक सम्पादकों में है।
तुम्हारे समाचार पाने को जी बड़ा उत्सुक है। शीघ्र पत्र दो—

बहुत प्यार—
सांईदा

२७३

१८/७ बी०के०जी० मार्ग
इलाहाबाद
१-११-६६

य बच्चन,

तुम्हारा पत्र मिल गया। तुम्हारे मौन का कारण भी समझ में आया। अब
र कब तक आ सकोगे, लिखना। महादेवीजी के संस्मरण ग्रंथ में तुम्हारी कोई
ज न रहना बड़ा अशोभन होगा। कुछ उनके व्यक्तित्व के संबंध में संस्मरण
रूप में ३-४ पृष्ठ का लेख अवश्य १०-१५ नवम्बर तक भेज दो। उनके
तित्व का मूल्यांकन करने की कोई आवश्यकता नहीं। उनके भाषणों, चित्र-
त्ला धुमते गद्य तथा वेदनागूढ़ गीतों को सामने रख कुछ अवश्य ही भेज दो।
तो व्यक्ति गीता और शेक्सपीयर का अनुवाद कर सकता है—वह तो पत्र लिखने
के समान ही ऐसे संस्मरण भी लिख सकता है। मेरा संस्मरण लिखकर तुमने
मुझे अमर कर दिया है। प्लीज बच्चन।

पी० एस०—कल पाण्डेयजी ने बातों ही बातों में कहा कि बच्चनजी ने कुछ इ
तरह की बात लिखी है—सात मन पढ़ने में—सागर के बी
प्यासा'। सो सागर के बीच प्यासा रहना तो स्वाभाविक है—
खारे पानी के कारण। कोलरिज का 'द वाटर हियर···द वाट
देयर, बट नॉट ए ड्रॉप टू ड्रिंक—एन्शन्ट मैरिनर में चोट कर रहे
थे। दिस इज बाइ द वे—

सानंद

१७२

१८/७, बी०के०जी० मार्ग
इलाहाबाद
२०-१०-६६

प्रिय बच्चन,

क्या तुम्हें मेरा ६ ता० का पत्र नहीं मिला ? या तुम चंडीगढ़ से लौटने के बाद बीमार पड़ गये हो ? मैंने लिखा था २७ ता० तक शांता की छुट्टियाँ हैं इस बीच आओ तो तुम्हें अधिक सुविधा रहेगी। दूसरा लिखा था दो डिब्बे ब्रिटेन ग्रेनूल्स के सर्गहिव सिंह एंड संस से भेजवा दो और दो डिब्बे तुम स्वयं अपने साथ लाना। या जल्दी आ रहे हो तो चारों डिब्बे अपने ही साथ लाना। तीसरा लिखा था धनपुत्र चाचाजी आयेंगे जानकर बड़ा प्रसन्न है कि मछली के काँप न सही मिल्क मेक तो भतीजे के लिए लायेंगे ही।

चौथी बात अब लिख रहा हूँ कि महादेवी जी सन् १९६७ की होलियों में ६१वें वर्ष में प्रवेश करेंगी। उस अवसर पर उन्हें पारिवारिक संस्मरण ग्रंथ भेंट करने का विचार यहाँ है। तुमसे भी अनुरोध है कि मासांत तक या नवम्बर १० ता० तक (लेटेस्ट) अपना संस्मरण संबंधी या श्रद्धांजलि संबंधी या साहित्य

४००० मो मैं लेकर छोड़ूँगा—तुम दुबारा इन्तिमाम नहीं करोगे—ऐसी समिति की आशा है—

और इलाज, मेरी पल्स अभी बहुत स्थिर है—१४०। सो यह डाक्टर लोग ठीक नहीं बतलाते—तुम विदेश न गए तो यहाँ १-२ दिन को कम से कम क्यों नहीं आते ? प्रेम वार्तालाप होगा।

आशा है तेजी जी स्वस्थ और प्रसन्न हैं उन्हें जितना तुम उन्हें प्यार करते हो उससे अधिक मेरी ओर से प्यार देना—बंटी को भी—आशा है उसकी आँख अब ठीक है। पिस्सी को तुम मेज पर सिखाते हो या नहीं ? मेरी तो उससे इतनी ही दोस्ती है—

वहाँ की हलचल ने बड़ा कष्ट मन को हुआ—इन साधुओं की जरा दाढ़ी काटकर इनसे सड़क पिटवानी चाहिए—वैराग्य के उद्धत लोग हैं—रिएक्शनरी तुम्हारी क्या राय है ?

यहाँ दो-तीन दिन खूब पानी बरसा—धरती अब तृप्त है—पर सुना अब बोने को बीज नहीं है। कुछ तो लोग निराशा में खा गए हैं—कुछ सरकारी अफ़सरों के पेट में गए !!!

साईंदा

१७५

सुमित्रानन्दन पंत

१८/७ बी०के०जी० मार्ग
इलाहाबाद
१४-१२-६६

श्री पूज्य चाचाजी,

सादर चरण स्पर्श।

जान पड़ता है आपने मुझे बिलकुल ही भुला दिया है। अब मैं सयाना हो गया हूँ और मोटा भी। आप शायद एकदम पहचान भी न पाएँ। मैं एक ही

टूटेगी वह प्रगति नहीं कर पायेगा—यह सब चुनाव का नाटक है—ये मध्ययुगों के पथराए प्रतीक साधु लोग कभी देश के काम नहीं आए आज विरोधी दलों के हाथ के खिलौने बने हैं।

और क्या लिखूं ? तुम्हें भगवान सन्मति दे, तुम अपने पुरस्कार में ४००० मुझे भेज सको—तुम्हें ऐसी प्रेरणा दें—काष्ठ मौनी बाबा से मेरा प्रणाम कहना भूल गए होगे। मैं पहिले से अच्छा हूँ—तुम्हारे आने की प्रतीक्षा है। राजू तुम्हें बड़ा याद करता है—सपरिवार सानंद होगे। बंटी को प्यार देना—

तुम्हारा ही

साईंदा

पु०

भाई महादेवीजी पर अवश्य कुछ लिख भेजो अत्यंत आवश्यक है—मेरे कहने पर ही सही—इसके बदले बहुत प्यार लो—

साईंदा

मेरे चश्मे की कमानी टूट गई है—इसलिए अभी सिविल लाइन्स जाना है—शेष फिर लिखूंगा।

तुम्हें बहुत प्यार—

साईंदा

पत्र और लेख कृपया तुरन्त भेजना।

सु०

२७६

इलाहाबाद

१६-१२-६६

प्रिय बच्चन,

१८ दिसम्बर के साप्ताहिक हिन्दुस्तान में 'धार्मिक निश्चिन्तता और कलाकार' संबंधी अपने वक्तव्य में तुमने अकारण ही मुझ पर आक्षेप किया है। ऐसी

फर्लांग में अब सहन की दीवार पार कर लेता हूँ और उड़ती चिड़िया पकड़ने में तो आपसे भी उस्ताद हो गया हूँ।

जब मैं खुश होता हूँ तो अपनी पूँछ नचाने लगता हूँ। ताऊजी मेरी पूँछ पर लट्टू हैं। जब वे मुझे छेड़ते हैं तो मैं गुर्राने लगता हूँ और मेरी पीठ और मूँछ के रोएँ खड़े हो जाते हैं। ताऊजी फ़ौरन मुझे छोड़ देते हैं।

चाचाजी, आप मुझ से मिलने अवश्य आइए। मेरे लिए मिल्क मैच, कबाब आदि भी लाइए। आपका मुझे बड़ा फ़ख्र है। क्योंकि आपकी भी लोगों में बड़ी पूँछ है। इस दृष्टि से पूँछ के कारण हममें समानता भी है।

मेरा भी अन्तर्राष्ट्रीय व्यक्तित्व है क्योंकि फ्रांस के लोगों की तरह मैं भी नाइट लाइफ लीड करता हूँ। यहाँ तो बहुत सी युवतियाँ मेरी आँखों से अपनी आँखें बदलने को तैयार हैं, क्योंकि मैं रात को भी अँधेरे में देख सकता हूँ—वे मेरी आँखें उधार लेकर निशाभिसार करने की सुविधा चाहती हैं। 'या निशा सर्व भूतानां' या तो ऋषि के लिए या फिर मेरे ही लिए लागू होता है। वैसे, चाचाजी, आप भी निशा-पक्षी ही हैं, क्योंकि रात-रात भर जागकर अध्ययन तथा सृजन करते हैं।

आशा है इन सब समानताओं के कारण आप मुझे नहीं भूलेंगे। चाचाजी को मेरेप्यार दीजिएगा। आपके कंज-चरणों पर मेरे कंज पंजों का गहरा प्रणाम अंकित हो।

आपका वनपुत्र,
"राजू"

प्रिय बच्चन,

राजू के पत्र के साथ मैं भी तुम्हारे पत्र का उत्तर भेज रहा हूँ। तुम गोरख पुर से लौट आए होगे। तुम्हें जन्मदिवस की बधाई का तार भेजना भूल गया, क्षमा करना—मेरी अनन्त शुभकामनाएँ और प्यार लो। १२५ वर्ष की उम्र हो। यहाँ कब आ रहे हो? मैंने साधुओं पर एक तीखी कविता लिखी है—लम्बी ५० पृष्ठ की। तुम आते तो सुनाता। तेजी जी को प्यार देना और कहना कि इन्दिराजी से कहें कि इन साधुओं और शंकराचार्यों की धमकी से न डरें—उन्हें अनशन कर मरने दें—हिन्दुस्तान की मध्ययुगीन रीढ़ जब तक नहीं

१७८

सुमित्रानन्दन पंत

१८/७, बी०के०जी० मार्ग
इलाहाबाद-२
३०-१२-६६

प्रिय बच्चन,

तुम्हारा पत्र मिला, धन्यवाद।

हो सकता है डा० दि० ने तुम्हारे शब्दों को बदल दिया हो, पर कवियों के सौम्य संत में भी तुमने बिलकुल यही बात लिखी है—मैंने आज तक 'कवियों—संत' नहीं पढ़ा, कुछ पंक्तियाँ शान्ता ने रेखांकित कर दिखाई थीं, बस वहीं पढ़ी हैं—अपने बारे में किसी अच्छी-बुरी कोई भी पुस्तक मैं नहीं पढ़ता—शान्ता ने मेरी जीवनी लिखने के संबंध में अनेक पुस्तकें मेरे बारे में पढ़ीं—

पर तुम मेरे वास्तविक निवास के बारे में कुछ भी नहीं जानते हो तुम्हें ऐसे अनुत्तरदायित्वपूर्ण ढंग से उसके संबंध में वक्तव्य नहीं देना चाहिए। यहीं उतर कर मैं पहिली बार यथार्थ के संपर्क में आया जिसका प्रभाव मेरे लोकायतन तक है। यहाँ मैं तुम्हारी तरह राजसी ठाठ से दिल्ली दरबार के विलिंगडन क्रिसेंट में नहीं रहा—जंगल में एक कमरे की काटेज या कुटी में रहा—जो भी वहाँ आया, यह बात जानता है—फिर मैं राजा का मेहमान भी नहीं रहा।

खैर, यह जो भी हो—तुम मेरे उस संघर्ष के बारे में कुछ भी नहीं जानते लेकिन अपने जीवन संघर्ष को महत्त्व देने के लिए—जो तुम्हारी आदत है—दूसरे को गिराना आवश्यक समझते हो। तुम्हें स्वयं इस बात पर सोचना चाहिए।

मैंने तो इतने तीखे शब्दों में तुम्हारा प्रतिवाद किया था कि अब मैं उसे नहीं छपा रहा हूँ—क्योंकि शान्ता मना करती है। यद्यपि उसमें भी कुछ सच लिखा है—पता नहीं अब निबन्ध संग्रह में भी वह लेख जाएगा कि नहीं। खैर,

ही भ्रामक बातें 'कवियों में सौम्य संत' में भी तुम लिख चुके हो। मैंने भी उसी निर्ममता के साथ उसका उत्तर लिखा है, अभी यह नही तय किया कि उसे छपाने भेजूं या नहीं। शांता मना करती है, बहरहाल वह उत्तर मेरे पास लिखा रखा है। यदि मैंने छपाने नही भिजवाया तो अपने अगले निबन्ध संग्रह में उसे स्थान दूंगा और संभव है तुम्हें भी सुनाऊँगा।

और समाचार सामान्य है।

सुमित्रानन्दन पंत

१७७

इलाहाबाद
२२-१२-६६

प्रिय बच्चन,

तुम्हारा पत्र मिला। सेठ जी का भी मिल गया था। अभी मेरी नाड़ी की गति तेज है इसलिए डा० मुझे लम्बी यात्रा करने की आज्ञा नही देते। अतः सेठ जी से मेरी ओर से बहुत-बहुत क्षमा प्रार्थना कर देना—हो सके यह पत्र भी सुना देना। मैं उन्हें डा० से पूछकर लिखने ही वाला था कि तुम्हारा पत्र मिल गया।

वैसे मुझे बड़ी प्रसन्नता है कि श्री बाँके बिहारी भटनागरजी का अभिनंदन होने जा रहा है। इस अवसर के लिए मेरी अनेक हार्दिक शुभकामनाएँ हैं। राजू कहता है कि चाचाजी ने मेरे पत्र का उत्तर नही दिया। अब मैं उन्हें कभी नहीं लिखूँगा। यहाँ आयेंगे तो मेरे हिस्से की मलाई भी खा जायेंगे। सो उसका संदेश पहुँचा दिया है। आशा है सपरिवार प्रसन्न हो। सबको प्यार।

गाईंदा

खैर, हो गया गठबंधन जब
भेद भूल सब
प्यार करो छक,
प्यार करो छक
प्रेम करो छक।
भले बुढ़ापा आया तन में
मन की तरुणाई से देखो
एक दूसरे का मुख अपलक,
एक दूसरे का मुख अपलक
एक दूसरे का मुख अपलक।

सुमित्रानन्दन पंत

१८०

सुमित्रानन्दन पंत

१८/७ बी० के०जी० मार्ग
इलाहाबाद-२
४-२-६७

प्रिय बच्चन,

तुम्हारा पत्र मिला। सबंध टूटने का सवाल नहीं उठता। मुझ पर तो बीसियों ने अनर्गल बातें लिखी हैं। पर तुम मेरे अपने हो इससे मुझे वह अखरा, खैर, अब वह परिच्छेद समाप्त।

तुम्हारी शादी की रजत जयंती की याद मुझे तेजीजी के कारण अपने आप आ गई। जिसमें तुम्हें विस्मय नहीं होना चाहिए। उनके लिए मेरा प्रारम्भ से ही पक्षपात रहा है, भले तुम्हें उसके कारण कई रात नींद नहीं आई हो—बात यह है तुम मेरे आर्य स्वभाव से परिचित नहीं रहे—जिन सपनेहु निज नारि न हेरी—वाले आर्य—स्वभाव की उदात्तता के लिए तुम क्या कह सकते हो।

मैं वह सब भूल गया हूँ। पर तुम्हारे जैसे मित्र व्यक्ति को इस प्रकार की भ्रांत बातों को प्रचार में लाना शोभाजनक नहीं लगता। इसमें बुरा मनाने की कोई बात नहीं।

आशा है तुम सपरिवार प्रसन्न हो—भटनागर जी का अभिनन्दन ठाठ से होगा, लगता है। तुम्हें, तेजी, अमित और बंटी को मेरे नए साल की बहुत-बहुत बधाई और प्यार—शांता भी तुम्हें बहुत बधाइयाँ और शुभकामनाएँ भेजती है—सर्दी यहाँ बहुत है—मेरा स्वास्थ्य सामान्य ही है—

शेष फिर—बहुत प्यार

साईंदा

१७९

सुमित्रानन्दन पंत

१८/७ बी०के०जी० मार्ग
इलाहाबाद-२
२५-१-६७

तेजी और बच्चन के प्रति—

याद आ गई मुझे अचानक
रजत जयंती शुभ विवाह की—
तुम्हें मुबारक,
तुम्हें मुबारक,
बहुत मुबारक।
खूब मिली दोनों की जोड़ी
राज हंसिनी एक-दूसरा
चिर प्रसिद्ध बक,
चिर प्रसिद्ध बक,
हाँ प्रसिद्ध बक।

[illegible]
नेह भरा मन
स्नेह करो हम,
प्यार करो हम
प्रेम करो हम।
भले तुम्हारा प्राण तन में
मन की गहराई में देखो
एक दूसरे का मुख अपलक
एक दूसरे का मुख अपलक
एक दूसरे का मुख अपलक।

सुमित्रानन्दन पंत

१८०

सुमित्रानन्दन पंत

१८/७ बी० के० जी० मार्ग
इलाहाबाद-२
४-२-६७

प्रिय बच्चन,

तुम्हारा पत्र मिला। सबंध टूटने का सवाल नहीं उठता। मुझ पर तो बीसियों ने अनर्गल बातें लिखी हैं। पर तुम मेरे अपने हो इससे मुझे वह अखरा, खैर, अब यह परिच्छेद समाप्त।

तुम्हारी शादी की रजत जयन्ती की याद मुझे तेजीजी के कारण अपने आप आ गई। जिससे तुम्हें विस्मय नहीं होना चाहिए। उनके लिए मेरा प्रारम्भ से ही पक्षपात रहा है, भले तुम्हें उसके कारण कई रात नींद नहीं आई हो—बात यह है तुम मेरे आर्य स्वभाव से परिचित नहीं रहे—जिन सपनेहु निज नारि न हेरी—वाले आर्य—स्वभाव की उदासता के लिए तुम क्या कह सकते हो।

बहरहाल, अब शंकराचार्य पुरी और संत प्रभुदत्त ब्रह्मचारी ने भी अपनी छोड़ दी है, तुम्हें भी छोड़ देनी चाहिए। मैंने एक तीव्र कविता गोहत्या प्रति वालों पर 'राम' शीर्षक से 'किरण वीणा' में लिखी है—४५-५० पृष्ठ की। लोग उसे पढ़कर मुझ से रुष्ट होंगे, पर तब मैं अपने मन का उबाल नहीं रो सका। फरवरी अन्त तक 'किरण वीणा' प्रकाशित हो जाएगी, आजकल प्रेस है—तुम पढ़कर अपनी राय देना—हरिवंशरायजी की राय—जिसमें बच्चों की राय भी शामिल रहे।

मार्च में २-३ सप्ताह तक संभवतः मैं दिल्ली आऊँ। तब सबसे भेंट सकेगी। इधर चुनाव का ज्वर—हड़कम्प ज्वर—शहर भर में फैला है—म शालीनता लोग भूल गए हैं। बहुत क्रोध आता है।

अभी ३-४ दिन पहिले श्रीमान वाजपेयी जी के तार से ज्ञात हुआ कि उज्जै विक्रम विश्वविद्यालय मुझे आज ४ फरवरी को ऑनरिस कौज़ा डि-लिट् सम्मानित करने जा रहा है। चलो, हम तो मुफ्त का माल उड़ाने वालों में है तुम्हारी तरह सात समुदर पार जाने का जौहर दिखाना सभव नहीं।

स्वास्थ्य अभी सामान्य ही रहता है पर वैसा बुरा भी नहीं। तुम्हारी आत्म कथा—जिसका अंतिम अध्याय मुझे और तेजी जी को लिखना पड़ेगा इस व निकल जाएगी, यह शुभ सूचना है। काव्य सग्रह का नाम बिना कविताएँ पढ़े सुझाना कठिन है—दो चट्टानों के बाद 'नदी और सागर सगम' ठीक रहेगा। वैसे तुम स्वयं नदी भी हो, सागर भी, सगम भी। हम तो प्रयाग निवासी सगम ही तक पहुँच रखते हैं। रज्जन की बीबी इन्दिरा मुझे बड़ी अच्छी लड़की लगती है।—कभी-२ यहाँ भी आ जाती है—उसके पिता आजकल यहीं है।

आशा है बंटी इम्तहान की तैयारी कर रहा है—मैंने तो जब से इस क वाक्य पढ़ा—हे ईश्वर, मुझे परीक्षा में मत डाल—तबसे कालेज ही छोड़ दिया। निष्ठा इसे कहते हैं और क्या लिखूँ।

तुम्हें और तेजी जी और बंटी को बहुत प्यार—

सादैव

पु—वनपुत्र राजू तुम से बहुत नाराज है। तुमने न उसके पत्र का उत्तर दिया न उसके लिए रजत जयंती केक ही भेजी।

सु०

१८१

प्रयाग
६-२-६७

प्रिय बच्चन,

अपने नये कविता संग्रह की भूमिका में यह लिखना न भूलना कि अपने साठवें वर्ष के इस काव्य संग्रह का नाम मैं सठियाए सरगम रखना चाहता था पर मित्रों की राय से उसे मरिना और संगम कर देना पड़ा, इसका पाठकों पर अच्छा प्रभाव पड़ेगा कि बच्चन जी कितने सच्चे अर्थों मे यथार्थवादी हैं। वैसे तुम भी यही सोच रहे होगे, मुझे संदेह नहीं। और बात के पत्र मे लिख चुका हूं।

बहुत प्यार,

शाईदा

१८२

२८, वैस्ट व्यू होटल,
रानीखेत,
१६-६-६७

प्रिय बच्चन,

तुम्हारा १३ ता० का पत्र कल शाम को मिला—विदेश से तुम्हारा कोई पत्र मुझे अभी तक नहीं मिला—मैं २७ मई तक इलाहाबाद ही था, यहां २८ को पहुंचा—शांता सीधा अल्मोड़ा चली गई थी। यहीं हूं।

नरेन्द्र का पत्र इधर आया था, मैंने उससे तुम्हारे बारे में पूछा था। तुमने अपने किसी पत्र में, विदेश जाने से पहिले, दिल्ली से लिखा था कि तुम १० जून को विदेश से लौटोगे। पर तुम जल्दी चले आए। आशा है वहाँ की यात्रा खूब अच्छी रही।

कोई स्मरणीय बात हो तो अवश्य लिखना। किसी ने यह भी बताया था कि तेजी जी काश्मीर गई हुई हैं—पता नहीं कहाँ तक ठीक था वैसे वह रानी के साथ इलाहाबाद गई में जाने वाली थी—श्रीमती धावन ने बतलाया था, पर फिर शायद नही गई। जाती तो मुझ से या तो मिलतीं या फ़ोन से अपने पहुँचने की सूचना देतीं। मैं उस बीच धवन साहब के यहाँ I.C.S.U.S. की बैठक में अमृत के साथ गया था। उसके दूसरे तीसरे रोज तेजी जी प्रयाग पहुँचने वाली थीं।

'किरण वीणा' तुम्हें मिल गई, ठीक हुआ। बहुत अशुद्ध छापी है—कई ग़लत जगहों पर कामा (,) ठूँस दिए हैं—शुद्धिपत्र के अतिरिक्त और भी अनेक छोटी-मोटी त्रुटियाँ रह गई हैं—बड़ा दुःख हुआ। कविताओं पर अपने मन की प्रतिक्रिया लिखना।

मैं यहाँ से ४ ता० जुलाई को इलाहाबाद को चलूँगा, ५ को दोपहर में वहाँ पहुँचूँगा। यहाँ पानी खूब बरस रहा है—ठंडा है। तुम्हें छुट्टी हो तो ८-१० रोज को आ सकते हो, मेरे साथ ठहर सकते हो।

बंटी द्वितीय श्रेणी में बी०ए० आनर्स पास कर चुका, बड़ा अच्छा हुआ। आगे पढ़ेगा या कोई काम करेगा। अभी बच्चा ही है विचारा।

तेजीजी को याद कर देना—प्रसन्न होंगी। तुमने उनके समाचार ही नही लिखे।

स्वास्थ्य मेरा भी सामान्य ही रहता है—यात्राएँ बड़ी कष्टकर प्रतीत होती हैं आशा है तुम प्रसन्न हो। शेष फिर, तुम्हें तेजी जी को बहुत प्यार—

साईंदा

पु—बहुत दिनों बाद तुम्हारा पत्र मिलने से अच्छा लगा। नरेन्द्र अपना काव्य संग्रह 'बहुत रात गए' तुम्हारी ६०वीं वर्षगाँठ पर तुम्हें ही समर्पित कर रहा है। मैं कुछ लिख सका तो तब तक मैं भी तुम्हें कोई संग्रह भेंट करूँगा। वैसे ॥ निमंत्रण के कवि को—'बहुत रात गए' भेंट करना स्वाभाविक ही है। मैं

'पौ फटने से पहिले' तुम्हारे लिए लिखूँगा। यहाँ तो कोई काम होता नहीं। पेट भी ठीक नहीं रहता—बड़ा हार्ड वाटर—माईका मिला—है। खाना भी बहुत कम खाता हूँ—

सु०

१८३

रानीखेत
१७-६-६७

प्रिय बच्चन,

मेरा पिछला पत्र मिला होगा। अब मैं २५ जून को ही यहाँ से इलाहाबाद चला जा रहा हूँ। वहाँ माली वगैराह ठीक से काम नहीं कर रहे हैं—और यहाँ भी पानी की इतनी कमी है कि हाथ-मुँह धोने को भी घंटों इन्तजार करना पड़ता है।

तुम इसी हिसाब से पत्र देना। २६ ता० को मैं इलाहाबाद पहुँच जाऊँगा।

आशा है सपरिवार प्रसन्न हो।

तुम्हें, तेजीजी को बहुत प्यार—

माईदा

१८४

१८/७, बी०के०जी० मार
इलाहाबाद
२८-६-६७

प्रिय बच्चन,

तुम्हारा कार्ड रानीखेत में २४ ता० को मिला, धन्यवाद। मैं २५ को चलकर २६ जून को यहाँ १ बजे दिन को पहुँचा—एक मालगाड़ी भर के बादल भी ले आया था। यहाँ पहुँचते ही खूब पानी बरसा। ठंडक भी हो गई है।

असल में मैं ५ जुलाई को आने वाला था पर यहाँ से पड़ोसियों का पत्र आया कि मेरे वनपुत्र की ठीक देखरेख नहीं हो रही है—अतः मैं जल्दी चला आया, बिचारा बड़ा अकेला पड़ गया—ठीक समय पर उसे खाना नहीं मिलता था—अब खुश है—चाचा जी को भी याद करता है।

तुम्हारी पृष्ठपूर्ति पर मैं भी कुछ कविताएँ लिखकर तुम्हें भेंट करना चाहता हूँ। नाम तो मैंने चुन लिया है 'पौ फटने से पहले' पर रचनाएँ भी मौसम ठीक रहा तो लिख लूँगा—तुम्हें 'पौ फटने से पहले' अच्छा लगता है या 'पौ फटने के पहले'—मुझे तो 'से' अच्छा लगता है—तुम भी अपना मत बतलाना—तदनुसार ही नाम रखूँगा।

तुम 'किरणवीणा' की रचनाओं के बारे में पूछना चाहते हो—खुशी से पूछो—मुझे अपनी त्रुटियाँ भी मालूम हो जाएँगी।

आशा है सपरिवार प्रसन्न हो—तुम्हें और तेजी जी को बहुत प्यार—

साईंदा

१८५

इलाहाबाद
५-३-६७

प्रिय बच्चन,

चलो, ६०वाँ वर्ष पूरा होने पर तुम्हें नरेन्द्र और मैं दोनों ही अपनी पुस्तकें—जिन में काल साम्य भी है—भेंट कर रहे हैं—यह अच्छा ही हुआ—अर्थात् तुम्हारी पत्नी और तिन्नी पीढ़ी दोनों ही तुम्हारी अभ्यर्थना करेंगी। 'बहुत दिन बीते'—'बहुत रात गए' और 'पौ फटने से पहले' समय के तीन सोपान से प्रतीत होते हैं—पर कविता तुम्हें धनपुत्र राजू भी अपनी ओर से भेंट करेगा। नरेन्द्र को मैंने भी नहीं बताया है कि मैं तुम्हें 'पौ फटने से पहले' भेंट कर रहा हूँ। जैसा तुम लिखते हो यह हमारे मानसिक भावों का साम्य ही है जिसने हमें अपने संग्रहों के इस प्रकार के नाम रखने की प्रेरणा दी।

ख़ैर, तुम तो जीवन में बहुत कुछ कर चुके हो और आगे भी करोगे—पर असन्तोष रहना अच्छा है।

बंटी, अमित को पत्र लिखो तो मेरा भी स्नेह स्मरण करा देना। अब वहाँ तुम, तेजी जी और तिन्नी रह गए। तिन्नी मनोरंजन के लिए पर्याप्त है। मेरा राजू भी मुझे काफी व्यस्त रखता है। तुम पर उसने बड़ी अच्छी कविता लिखी है। सौम्य विशेषण से यदि मनों के दोष मिट जाते हैं तो तुम्हारा कहना स्वीकार है—पर संत तो बाहर से सदैव ही सौम्य रहे। ख़ैर—तुमने अपने मन की प्रतिक्रिया किरणवीणा के बारे में नहीं लिखी—नं० १/२/३ कैसी तुम्हें लगी—और पुरुषोत्तम राम—कैसा लगा। यहाँ तो लोग रुष्ट हैं जो मैंने साहित्य क्षेत्र के प्रति अपनी प्रतिक्रिया लिखी है उससे। 'किरणवीणा' इस समय मेरे पास नहीं है—फिर भी स्मेरमुखी तो स्तुतियों में आता है, सलज्ज स्मित मुखवाली। चेतस् का माणिक जल भी प्रसिद्ध ही है—गहरा रक्तवर्ण भागवत ऐश्वर्य का होता है—लक्ष्मी जी का वर्ण। कवि का चेतस् भगवत् शोभागरिमा के ऐश्वर्य से पूर्ण

तो होना ही चाहिए। पंक्ति इस समय स्मरण नहीं आ रही है। श्वेत-पीत सात्विक कुछ चेतना के प्रतीक हैं। चन्द्र चेतना—भी उच्च मनश्चेतना है—चन्द्रमा मन सो जाता—कहा है। मन के स्तर पर ही उच्च चेतना को उतारने का ध्येय होना चाहिए। देवलोक भी अधिमन का ही लोक है। स्वर्ण किरण या स्वर्ण धूलि में आया है।

मेरा स्वास्थ्य ठीक ही चल रहा है। जरा मौसम और ठीक हो तो एक बार दिल्ली आना चाहता हूँ। शांता भी मेरे ही साथ आ गई थी। तुम्हें सविनय नमस्ते भेजती है।

आशा है तुम और तेजी जी सानंद हो—दोनों को मेरा और राजू का बहुत प्यार—

शेष फिर—

साईंदा

पु—अपने जनरल रिऐक्शन 'किरणवीणा' के बारे में अवश्य लिखना—

सु०

१८६

१८/७ बी०के०जी० मार्ग,
इलाहाबाद
२०-७-६७

प्रिय बच्चन,

१६ अगस्त का दिल्ली आकाशवाणी का कवि गोष्ठी का निमंत्रण आया है—क्या तुम्हारे यहाँ ठहर सकता हूँ। ३-४ दिन रहूँगा। तुम्हारे कमरे में तो नहीं रहूँगा। तुम्हें डिस्टर्ब करना नहीं चाहता। बरामदे या ड्राइंगरूम में सोऊँगा। बंटी का बाथरूम इस्तेमाल करूँगा। उसी के कमरे में मेडिटेशन आदि भी करूँगा। क्या ऐसा संभव है ? बंटी तो कलकत्ता में है। दिन भर तो मैं बाहर ही प्रायः

रहूँगा। तुम्हें और तेजी जी को असुविधाजनक न हो तो लिखना—वैसे मिसेज मधू का भी निमंत्रण आया है। वहाँ भी ठहर सकता हूँ—मुझे उनके यहाँ भी कष्ट नहीं होगा—सम्भवतः नरेन्द्र भी तुम्हारे ही पास रुके सो अपनी सुविधा-असुविधा तुरन्त लिखना—जिससे मैं मिसेज मधू को भी लिख सकूँ।

मेरा पिछला पत्र मिला होगा। अपने संग्रह की प्रेस कापी बना रहा हूँ—तुम्हारी दो रचनाएँ इधर धर्मयुग तथा सा०हि० में देखने को मिलीं—खूब अच्छी लगीं। नरेन्द्र की भी इधर कुछ रचनाएँ छपी हैं। वे भी अपने ढंग की खूब अच्छी हैं।

आशा है समय निकाल कर मेरे इस पत्र का उत्तर शीघ्र दोगे। तुम्हें, तेजी जी को बहुत प्यार—

साईंदा

१८७

१८/७ बी०के०जी० मार्ग
इलाहाबाद
३१-७-६७

प्रिय बच्चन,

तुम्हारा पत्र मिला, प्रसन्नता हुई। मुझे सबसे पहले बटी को नौकरी मिलने के शुभ अवसर पर तुम्हें और तेजी जी को हार्दिक बधाई देना चाहिए। अब तुम दोनों नवयुवक दम्पति बच्चों की चिन्ता से मुक्त हो गए, इससे सुखद अनुभव और क्या हो सकता है। दूसरा मुझे साथ ही एक बढ़िया दावत खाने की बात भी अभी से तुम से तय कर लेनी चाहिए। जिसमें मुर्ग, मछली सब कुछ हो—वह बाहर लिगुना आदि में भी हो सकती है, घर पर भी—सो पक्की रही।

मैं १८ ता० की शाम को वहाँ कालका मेल से पहुँचूँगा तुम आफिस की गाड़ी मोहनसिंह सेठरजी को या ट्रांसपोर्ट सैक्शन को फोन करके अपने यहाँ मँगवा लेना। उसी से मुझे लेने भी आ जाना।

तो होना ही चाहिए। पंक्ति इस समय स्मरण सात्विक कुछ चेतना के प्रतीक हैं। चन्द्र चेतन चन्द्रमा मन सो जाता—रहा है। मन के स्तर का ध्येय होना चाहिए। देवलोक भी अधिमन स्वर्ण धूलि में आया है।

मेरा स्वास्थ्य ठीक ही चल रहा है। जरा दिल्ली आना चाहता हूँ। शांता भी मेरे ही नमस्ते भेजती है।

आशा है तुम और तेजी जी सानंद हो—

प्यार—

पु—अपने जनरल रिऐक्शन 'किरणवीण

प्रिय बच्चन,

१६ अगस्त का दिल्ली आकाशवा है—क्या तुम्हारे यहाँ ठहर सकता हूँ। नहीं रहूँगा। तुम्हें डिस्टर्ब करना नहीं च बंटी का बाथरूम इस्तेमाल करूँगा। उ क्या ऐसा संभव है? बंटी तो कलक

हाँ, एक आवश्यक बात यह है कि २१ ता० की रात को अपर इण्डिया से दो फर्स्ट क्लास की लोअर बर्थस रिजर्व करवा देना। शांता को २२ को यूनिवर्सिटी अवश्य अटैन्ड करनी है।

शेष ठीक

बहुत प्यार—

साईंदा

१८९

१८/७ बी०के०जी० मार्ग,
इलाहाबाद
२६-८-६७

प्रिय बच्चन,

मैं यहाँ २२ ता० को सवेरे शांता के साथ पहुँच गया था। यहाँ सबसे [illegible] पानी बरसने में है—जल प्रलय मालूम पड़ता है। वहाँ के क्या हाल हैं? आशा है, २१ ता० दावत तेजी जी की अच्छी रही होगी और तुम और [illegible] जी भी सकुशल होंगे। उन्हें मैत्राबिन ५०० के १० इन्जेक्शन्स अवश्य [illegible] देने चाहिएँ। १० दिन अक्तूबर में फिर से। कभी-कभी अपने स्केप्टीसिज़्म को [illegible] समय पर पत्र दे दिया करो। मेरी न छोड़ न आता—फिर भी तुम्हारी [illegible] नहीं रहता। बस हि किताब के प्रूफ देखने हैं।

[illegible] तेजी जी [illegible]

-तेजी जी को मैं यहाँ आकर बड़ा कष्ट

साईंदा

इलाहाबाद
१६-६-६७

प्रिय बच्चन,

इधर मुझे फ्लू हो गया है—बाढ़ के कारण यहाँ फ्लू की भी बाढ़ आ गई है। तुम्हारा पिछला पत्र भी मिल गया था—उत्तर ठीक होने पर दूँगा। पर आवश्यक मानकर संक्षेप में उत्तर दे रहा हूँ—

रूसी में मेरे दो संग्रह छपे हैं—एक प्रगतिशील रचनाओं का—दूसरा प्रकृति तथा चिन्तन प्रधान कविताओं का—रूसी नाम ज्ञात नहीं। चोलिशेव ने डी०लिट० भी मेरे ही काव्य पर ली है—रूस में वही एक डी०लिट० हैं। पूर्वी जर्मनी में भी एक ग्रादरीन नामक लड़की ने मुझ पर डी०लिट० ली है—मि० रूबेन्स के निर्देशन में। उसी ने मेरी अनुमति लेकर मेरी रचनाओं का जर्मनी में अनूदित संग्रह भी छपवाया है। जापानी में स्वर्ण किरण अनूदित हुई है—जापानी नाम ज्ञात नहीं। अंग्रेजी में अमेरिका से कपूर साहब एक संग्रह मेरा निकलवा रहे हैं—उसकी प्रगति कहाँ तक हुई, उन्हीं से जान सकते हो।

और मैं कमजोर होने के कारण समाप्त करता हूँ—

बहुत प्यार—

साईंदा

१९२

१८/७ बी०के०जी० मार्ग,
इलाहाबाद
२३-१०-६७

प्रिय बच्चन,

तुम्हारा कार्ड मिला, तुम उस बात का ख्याल रखोगे जानकर बड़ी प्रसन्नता हुई। और भी लोगों से, हो सके तो, मेरी ओर से कह देना।

'पौ फटने से पहले' मिली होगी—तुम्हीं को भेंट है। उसके प्रति संक्षेप में अपनी प्रतिक्रिया लिख सको तो प्रसन्नता होगी। चौथे पृष्ठ पर दूसरी पंक्ति मे 'फहराता रुपहली वायुओं में' होना चाहिए, 'में' छूट गया है, ठीक कर लेना।

मैं भी 'वेदांती' होने जा रहा हूँ—दांत निकलवा रहा हूँ—फिर नवम्बर में तुम्हारी षष्टिपूर्ति को आ सका तो वहाँ नए दांत लगवा लूँगा—वहाँ अच्छे बनते हैं सुना।

इधर बहुत अस्वस्थ रहा—अब कुछ ठीक हूँ। यहाँ बड़े जोर का फ्लू संक्रामक रूप में आया है—बड़ी कठिनाई से जा रहा है। शांता भी तुम्हें दीपावली की बधाई भेज रही है। तेजी जी स्वस्थ और प्रसन्न होंगी। शेष फिर—प्यार—

सुमित्रानंदन?

पु—आशा है तुम्हें यहाँ मलिक्क से दांत निकलवाने की बात याद होगी—
सु०

१९३

इलाहाबाद
२१-११-६७

प्रिय बच्चन,

इधर मेरा स्वास्थ्य बहुत सामान्य ही रहा—तापमान भी रक्तचाप भी—पूर्ण विश्राम ले रहा हूँ। यद्यपि पहले से लाभ है पर ऐसी स्थिति स्वास्थ्य की शायद ही तुम्हारी षष्टिपूर्ति तक—२७ नवम्बर—तक हो सके कि दिल्ली आ सकूं। यद्यपि मेरा बहुत जी करता है—कुछ और भी काम अपने प्रकाशक से है—पर न डाक्टरों की राय है—न मेरे भतीजे की। श्री विश्वनाथ जी का पत्र आया था कि वे तुम्हारे षष्टिपूर्ति के अवसर पर वहाँ समारोह कर रहे हैं, मुझसे अध्यक्षता करने को लिखा था, उन्हें भी मैंने यही लिख दिया। १ प्रतिशत आशा है कि शायद आ सकू—पर वैसे संभावना बहुत कम है। इस विवशता के लिए तुम अवश्य क्षमा करना। वैसे मई तक मुझे खराब ही दशा बतलाते हैं।

तुम्हारी षष्टिपूर्ति की बधाई तार से दूगा। आशा है श्री तेजी जी और बच्चे सब सानंद होंगे। अबके नेहरू पुरस्कार हिन्दी को न जाने क्यों नहीं मिला। तुम्हारे भी कभी से समाचार नहीं मिले हैं। आशा है तुम्हें 'पौ फटने से पहले' मिल गई है। तुमने अपनी प्रतिक्रिया नहीं लिखी—न 'किरणवीणा' के बारे में लिखी। संभवतः व्यस्त हो। कब तक तुम्हारा 'बहुत दिन बीते' संग्रह निकलने जा रहा है? एक प्रति मुझे भी भिजवाना। शान्ता तुम्हें बहुत याद करती है और बधाई भेजती है। तुम भी अब 'साठा पाठा' हो गए—मैं तो सठिया गया हूँ—बीमार ही रहता हूँ। वहाँ के विस्तृत समाचार, समय निकाल कर लिखना। पता नहीं नरेन्द्र का संग्रह अभी निकला कि नहीं—२७ नव. तो अवश्य ही निकल जाना चाहिए—

शेष पत्र मिलने पर—

बहुत प्यार—

[illegible]

पुनश्च—समारोह की अध्यक्षता 'दिनकर' जी को करनी चाहिए—

सु०

१९४

१८/७ बी०के०जी० मार्ग,
इलाहाबाद
३-१२-६७

प्रिय बच्चन,

तुम्हारी षष्टिपूर्ति का समारोह अत्यत सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ होगा और तुम्हें उस अवसर पर कोई विशेष उपलब्धि हुई होगी, ऐसा मेरा ख्याल है। विशेष रूप से कौन लोग आए, कौन-कौन बोले ? कृपया संक्षेप में अवश्य लिखना निःसंकोच। यहाँ दिल्ली के दो पत्र टाईम्स और स्टेट्समैन में देखे किसी में हवाला नहीं मिला—इसलिए जानने को उत्सुक हूँ। क्या नरेन्द्र और भगवती बाबू भी आए थे ? और कोई विशेष फीचर उस सम्बन्ध में हो तो वह भी लिखना।

भाषा विधेयक के कारण दो रोज से यहाँ काफ़ी कुहराम मचा है। छात्रों में विशेषतः। किन्तु संगठित रूप से कुछ भी नहीं है। राजगोपालाचार्य के शब्दों में 'विधेयक हिन्दी अहिन्दी भाषियों के बीच मर्दव के लिए दीवार खड़ी कर देगा', इसमें संदेह नहीं। पर हिन्दुस्तान को तो अभी और बहुत विघटित होना है। इस दृष्टि से इस प्रकार के विधेयकों का आना स्वाभाविक है।

यहाँ कल से खूब पानी बरस रहा है—फसल के लिए तो अच्छा बताते हैं, पर वैसे काफ़ी ठंडा हो गया है। मेरा स्वास्थ्य अभी वैसा ही है। यहाँ के श्री बेनी माधो वैद्यजी का इलाज करा रहा हूँ—उससे किंचित लाभ है।

मैंने २७ को बधाई का तार भेजा था—मिला होगा। २६ की रात को ही भेज दिया था कि २७ की प्रातः मिल जाए।

/

१९६

१८/७ बी०के०जी० मार्ग,
इलाहाबाद
६-१२-६७

प्रिय बच्चन,

कल शाम तुम्हारा पत्र मिला। मेरा पिछला पत्र मिला होगा। तुम १५ ता० की शाम को लखनऊ जाग्रोगे, तो मैं १५ ता० को, यदि तेजीजी को असुविधा हुई, तो श्रीमती सप्रू के यहाँ चला जाऊँगा। १६ की शाम को मेरा रिजरवेशन (लोअर बर्थ) करवा देना।

"बहुत रात गए" कैसी लगी? मुझे अभी न तुम्हारी पुस्तक मिली, न नरेन्द्र की। तुम्हारी षष्टिपूर्ति का समारोह अच्छी तरह सम्पन्न हो गया, बड़ी प्रसन्नता हुई। नरेन्द्र शायद नहीं आ सका, तुमने उसके आने के बारे में कुछ नहीं लिखा है।

अमित अजित अच्छी तरह है जानकर प्रसन्नता हुई। यहाँ २/३ दिन से काफी सर्दी है। वहाँ भी बहुत होगी।

तुम अपनी सुविधा-असुविधा के बारे में लौटती डाक से उत्तर दो तो मैं शुरू से ही मिसेज सप्रू के यहाँ रुकने के लिए उन्हें तार दे सकता हूँ। वैसे मैंने सभी अपने भांजे भतीजे को १५/१६ को तुम्हारे यहाँ आने को लिख दिया है। ओंकार-अजित से भी कह देना कि मुझे मिलें।

शेष मिलने पर—तुम दोनों को बहुत प्यार—

सुमित्रानंदन पंत

१९७

इलाहाबाद
११-१२-६७

प्रिय बच्चन,

'बहुत दिन बीते' मिल गया—बड़े प्रखर व्यंग्य इसमें हैं। मुझे भी लपेटा है। अपने स्वप्नों के समर्थन और तुम्हारे सत्य के विरोध में (स्वप्न द्रष्टा· सत्य भोक्ता) मेरा उत्तर पाने के लिए तैयार रहना।

मैं १४ को मेल से आ रहा हूँ। यहां तो छात्रों ने बड़ा विकट आंदोलन मचाया है—पत्रों में तो अधिक आता नहीं। मेरे घर को भी ७०० के करीब छात्रों ने घेरा—७ ता० को दो बजे। लाउड स्पीकर लाए थे उनके भाषण सुने, उत्तर दिया, पद्मभूषण की उपाधि छोड़ी—और किसी के यहाँ नहीं गए। वास्तव में सी० वी० राव, रामस्वरूप चतुर्वेदी, लक्ष्मीकांत वर्मा, जगदीश गुप्त, रघुवंश आदि ने सत्यनारायण कुटी में एक बैठक में यह माँग पेश करके छात्रों को भड़काया और मेरे यहाँ भेजा—श्री मुरली मनोहर जोशीजी भी उस बैठक में थे, उन्होंने दूसरे दिन मुझे बताया। खैर, मुझ से विद्वेष रखने वाले तो सभी परिमल के सदस्य हैं—और उपाधि से मुझे क्या मोह हो सकता है ?

यह ठीक है कि भाषा विधेयक में १/२ क्लाज घातक हैं—उनका संशोधन होना चाहिए। नहीं तो ९९ प्रतिशत लोग गूंगे ही रहेंगे और अंग्रेजी सदैव के लिए भारत को विभक्त कर देगी। आज की नेशनल यूनिटी के लिए ऐसा खोखला समझौता दक्षिण उत्तर में सरकार को नहीं करना चाहिए जिससे देश और राष्ट्र कल सदा के लिए खंडित हो जाए। फिर फंडामेन्टल से समझौता करना सदैव घातक होता है। हिन्दी राज्य अंग्रेजी अनुवाद भेजें यह केवल धोखा है। फिर हिन्दी में कौन पढ़ेगा। नौकरशाही को कौन नहीं जानता ? ऐसी कुछ बातें बिल में राष्ट्रघातक हैं। इससे हिन्दी ही नहीं भारतीय भाषाओं को विकास के लिए कभी उचित क्षेत्र नहीं मिल सकेगा। और अंग्रेजी विषैली भाप की

तरह देश के मन पर छाई रहेगी। आश्चर्य है कि दिनकर ने इस बारे में मौन रहना चाहा। उनसे यह आशा नहीं थी।

शेष मिलने पर। १६ ता० की रात की रिजरवेशन इलाहाबाद के लिए करवा देना। धन्यवाद।

तुम दोनों का बहुत प्यार—

सांईदा

१९८

इलाहाबाद
२५-१२-६७

प्रिय बच्चन,

बड़े दिन की और नए वर्ष की हार्दिक बधाई तथा शुभकामनाएँ लो। तुम रतलाम से लौट आये होगे। मैं यहाँ पहुँचने पर दिल्ली के प्रसाद स्वरूप ठंड लग जाने से थोड़ा अस्वस्थ हो गया था—अब ठीक हूँ। वातावरण यहाँ का अभी अशांत ही है—पता नहीं ३ ता० को भी यूनिवर्सिटी खुल सकेगी कि नहीं। दक्षिण और उत्तर तो अशांत हैं ही कलकत्ता भी सत्रस्त है।

वहाँ के नवीन समाचार देना। तेजीजी को मेरे कोट की याद दिला देना। सुना है तुम रेलवे के कवि सम्मेलन में २६ जनवरी को आ रहे हो। कहीं ऐसा न हो मुझे दिल्ली जाना पड़े, तुम्हें यहाँ। वैसे तुम्हें भी २५ को आकाशवाणी कवि सम्मेलन में अपनी कविता पढ़नी है। उसके बाद शायद ही तुम २६ ता० को यहाँ पहुँच सको जब तक कि हम लोग २६ को मेल से प्रातः चलकर शाम को यहाँ न पहुँचें।

चि० अमित अजित प्रसन्न होंगे और उनके समाचार मिलते रहते होंगे। शेष पत्र आने पर—

तुम्हें, तेजीजी को बहुत प्यार—शान्ता भी उन्हें नव वर्ष तथा एक्समस की बधाई भेजती है।

साईदा

१९९

इलाहाबाद
१५-१-६८

प्रिय बच्चन,

आज मकर संक्रांति का नहान है—बड़ी ठंडक है। पता नहीं तेजीजी मेरा कोट कब तक भेजेंगी? अबके २५ ता० को दिल्ली में आकाशवाणी प्रोग्राम कवि सम्मेलन का हो रहा कि नहीं यह भी नहीं ज्ञात है—अभी तक तो कोई निमंत्रण नहीं है।

तुम्हारा रेलवे कवि सम्मेलन में आना क्या ठीक हो गया? अग्रिम एडवांस मिल गया कि नहीं?

हम लोग सब ठीक हैं—पर सर्दी बहुत है—पहाड़ी होने के कारण मुझे अधिक सताती है—नये समाचार कुछ नहीं। देश की दशा अच्छी नहीं है।

शान्ता तुम दोनों को नए वर्ष की बधाई भेजती है और मैं प्यार—

पत्र शीघ्र देना

साईदा

परिशिष्ट-१

वैस्ट व्यू होटेल
रानीखेत (यू० पी० हिल्स)
६-६-६४

प्रिय बेटा श्रमित,

तुम्हारा प्रिय पत्र मुझे इलाहाबाद अपनी सालगिरह के अवसर पर मिल गया था, पर उधर बहुत व्यस्त रहने के कारण तुम्हें उत्तर नहीं दे सका। कब से न जाने तुम्हें पत्र लिखना चाहता था, बच्चन से तुम्हारा पता भी पूछा पर कुछ संयोग ऐसा बैठा कि पत्र लिखना संभव ही नहीं हो सका। वैसे तुम्हारे कुशल समाचार बराबर बच्चन से मालूम होते रहते थे। तुम वहाँ प्रसन्न हो यह जानकर बड़ा संतोष होता है। बच्चन और तेजी जी भी तुम्हें काम मिल जाने से आश्वस्त हैं और तुम जितना अच्छा और उपयोगी जीवन व्यतीत करोगे उतना ही उन्हें संतोष होगा। तुम बड़े सरल साथ ही समझदार हो यह जानकर मुझे भी बड़ी खुशी होती है।

इधर २७ ता० को पंडित नेहरू के निधन के कारण देश में काफ़ी निराशा और विषाद छा गया है। शास्त्री जी के उनके स्थान पर चुने जाने से लोग आश्वस्त तो है पर अब सभी देशवासियों के कंधों पर बहुत बड़ा उत्तरदायित्व आ गया है और युवकों के कंधों पर और भी अधिक। प्रत्येक व्यक्ति के लिए अपने साथ ही देश की भलाई के लिए भी कार्य करना अनिवार्य हो गया है। जो जहाँ जिस स्थिति पर है वहीं से देश के मंगल के लिए अपना अर्घ्य प्रदान कर सकता है।

आशा है तुम नई जगह से अब अभ्यस्त हो गए होगे। जितनी अच्छी बातों और अच्छे प्रभावों को इस उम्र में ग्रहण कर सकोगे पीछे उतने ही सुखी और उपयोगी बन सकोगे। कलकत्ता भी दिल्ली की तरह ही बड़ा नगर है वहाँ एक सांस्कृतिक कलात्मक वातावरण भी मिल सकता है जिसका दिल्ली में

अभाव है। दिल्ली में शान शौकत और राजनीतिक दबाव अधिक मन में रहता है। आशा है तुम यदाकदा समय मिलने पर अपने समाचार देते रहोगे।

मैं २६ ता० तक यहीं हूँ फिर एक सप्ताह के लिए अल्मोड़ा होते हुए ४-५ जुलाई तक इलाहाबाद पहुँचना चाहता हूँ।

तुम्हें जन्म-दिवस की बधाई के लिए बहुत २ शुभाशीर्वाद और प्यार भेजता हूँ। खूब अच्छा स्वस्थ जीवन व्यतीत करो। बुरी या छोटी आदतों से जीवन खराब हो जाता है, आदमी बौना ही रहता है और मन में सदैव असंतोष बना रहता है।

मुझे भी तुमसे बहुत आशा है कि तुम बड़े योग्य लड़के निकलोगे।

सदैव तुम्हारा शुभचिन्तक—
सुमित्रानन्दन पन्त

सुमित्रानंदन पंत

उस वृहत्रयी में—'प्रसाद' और 'निराला' के साथ गिने जाते हैं जिसने शताब्दी के दूसरे दशक में छायावाद की स्थापना की। पंत पिछले ५० वर्षों से, अपनी विशिष्टता बनाए हुए, बराबर लिखते आ रहे हैं। १९६९ में उन्हे 'चिदंबरा' पर 'ज्ञानपीठ पुरस्कार' मिला। पंत का काव्य-फलक बहुत विस्तृत है—प्राकृतिक सौंदर्य से मानव भविष्य तक—उनका आदर्श मानव सामाजिक और ऊर्ध्व विकास में संतुलन स्थापित करता है। गद्य भी उनका विविधतापूर्ण और प्रचुर है। शैली उनकी समय-क्रम में मूर्त से अमूर्त होती सर्वथा संस्कृत-निष्ठ, परिष्कृत और उच्चस्तरीय रही है। सत्तर पार कर चुके हैं। एक अरसे से प्रयाग में रहते हैं।

हरिवंशराय बच्चन

छायावादोत्तर काल मे जो दो कवि सबके ऊपर उभरे वे 'दिनकर' और बच्चन हैं। बच्चन को लोकप्रियता अपनी 'मधुशाला' (१९३५) से मिली, जिसे बनाए हुए है तब से अब तक बराबर लिखते आ रहे हैं। बच्चन हिन्दी लेखक के साथ ही अंग्रेज़ी के प्रोफ़ेसर रहे, केम्ब्रिज से ईट्स पर डाक्टरेट ली, विदेश मंत्रालय मे हिन्दी-विशेषज्ञ रहे, आजकल राज्य सभा के मनोनीत सदस्य हैं। वे मुख्यतः गहन और मार्मिक जीवानुभूतियों के कवि हैं। कहानी, निबंध, आलोचना के रूप मे उन्होंने गद्य भी पर्याप्त लिखा है। आजकल जो श्रेष्ठ गद्य वे अपनी आत्मकथा मे दे रहे हैं वह उनकी कविता के लिए भी एक चुनौती है। तिरसठ के हो चुके है। दिल्ली मे रहते हैं।